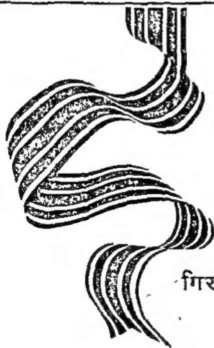


वाणी प्रकाशन
दिल्ली-110007

प्रयोगात्मक हिन्दी

PRACTICAL HINDI



गिरजानन रंगू

वाणी प्रकाशन
61-एफ, कमला नगर, दिल्ली-110007
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण 1981
 मूल्य : 40.00 रुपये

अशोक कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-110032
में मुद्रित

Prayogatmak Hindi
(Practical Hindi)
by Geerjanan Rungoo

दो शब्द

भाषा एक सामाजिक यथार्थ है। भाषा की बुनियाद पर ही ज्ञान की इमारत बनती है। भाषा हमारे भावो और विचारो की वाहिका होती है। यदि यह व्यावहारिक प्रयोगों मे समर्थ नही होती तो ज्ञान की सार्थकता नही रह जाती। अत भाषार्जन के लिए तीन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—व्यावहारिक भाषा, विषयवस्तु और सिद्धान्तबद्धता।

यों तो सभी लोग बिना व्याकरण जाने भी भाषा का प्रयोग कर लेते है, परन्तु सम्बन्धित भाषा के व्याकरण का अध्ययन करने के अनन्तर भाषा को विभिन्न प्रयोजनो एवं सन्दर्भो मे प्रयोग करने की क्षमता की जानकारी मिल जाती है। सच तो यह है कि आज के इस संघर्षमय युग में सफल जीवन के लिए भाषा के शुद्ध व्यवहार की बड़ी आवश्यकता है। गलत एवं कमजोर भाषा सामाजिक जीवन में बढने में बाधा डालती है। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इस तथ्य को दृष्टि मे रखकर यह लघु प्रयास किया गया है।

अन्य भाषा के रूप मे हिन्दी सीखने वालो को ध्वनि, रूप तथा संरचना से सम्बन्धित क्या-क्या कठिनाइयाँ आती है, इसका भली प्रकार अध्ययन करने के अनन्तर, इनका पठन-बिन्दुओं के रूप मे प्रयोग करके, इस पुस्तक की रचना की गई है। इस दृष्टि से यह पुस्तक अहिन्दी-भाषी छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी मुझे आशा है।

इस पुस्तक मे व्याकरण के विविध तत्त्वों को व्यावहारिक तथा सुबोध भाषा में सोदाहरण प्रस्तुत किया गया है, छात्रों से बातें की गई हैं—वे सुनते हैं, बोलते हैं, पढ़ते है, समझते है और उदाहरण का विश्लेषण करके, प्रत्येक तत्त्व के सम्बन्ध मे स्वय सार्थक परिभाषा निकाल सकते है। प्रत्येक पाठ के अन्त मे, 'तुम जान गए',

'याद रखो' आदि अभ्यास दिए गए है ताकि छात्रो के अर्जित ज्ञान का सुदृढीकरण एवं संवर्द्धन भी हो सके।

व्याकरण तत्त्वो के प्रस्तुतीकरण में, 'ज्ञात से अज्ञात' उदाहरण से परिभाषा तथा पूर्ण से अंश की ओर आदि अधिगम सिद्धान्तो को ध्यान में रखा गया है। पुस्तक मे आरम्भ से अन्त तक, प्रत्येक व्याकरण तत्त्व के सम्बन्ध मे यही विधि अपनाई गई है। इससे छात्र स्वयं शिक्षण की ओर प्रवृत्त हो सकेंगे।

यह पुस्तक प्रमुखत. उन लोगो के लिए लिखी गई है जिनकी मातृभाषा हिन्दी नही है तथा यदि है भी तो, वे मातृभाषा के मूल से कट गए है। मेरा सकेत मॉरिशस, सुरीनाम, गयाना, फीजी आदि देशों में बसे भारतीय प्रवासियों की ओर है जो अपने पूर्वजों की भाषा हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर विशाल हिन्दी जगत से जुडे रहना चाहते है। आशा है कि यह सामग्री हिन्दी के ऐसे शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा शिक्षक बन्धुओं को पसन्द आएगी। इसके सम्बन्ध में किसी भी सार्थक विचार तथा सुझाव का हृदय से स्वागत करूँगा।

पुस्तक को अन्तिम रूप देने मे और इसे अधिकाधिक उपयोगी बनाने के प्रयास में मुझे कई वर्ष लग गये। हिन्दी के अनेक विद्वानों, शिक्षाविदों एवं भाषाविदों श्री गंगादत्तशर्मा (एन०सी०ई०आर०टी०) एवं डा० कृष्णकुमार गोस्वामी (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली) और मॉरिशस के विद्वान श्री एस० चिन्तामणि तथा वहाँ के हिन्दी विद्यार्थियों ने इस पुस्तक के प्रणयन मे जो योगदान दिया है, इसके लिए मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरे भारत प्रवास मे इसके सुन्दर प्रकाशन के लिए मैं वाणी प्रकाशन का विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ।

—गिरजानन्द रंगू
मॉरिशस

अनुक्रम

खंड 1

वर्ण-विचार

पढ़ो—

1. मै समोसा खाता है ।
2. नानी का गाय सफेद है ।
3. मुझसे पानी दो ।

इन वाक्यों को फिर से पढो, मालूम करो इनमें क्या गलती है ।

1. पहले वाक्य में—'मैं' के साथ 'है' का प्रयोग गलत है ।
2. दूसरे वाक्य में—'गाय' के साथ 'का' गलत प्रयोग है ।
3. तीसरे वाक्य में—'मुझसे' के स्थान मे 'मुझको' होना चाहिए ।

1. भाषा और व्याकरण

वैसे तो तुम अपने गुरुओं और बडो को सुनकर, रेडियो, टेलिविजन और सिनेमा देख-सुनकर, शुद्ध भाषा (हिन्दी) स्वयं बोल लेते हो, पर यह नही जानते हो कि वे ऐसे क्यो बोलते है ।

—तो व्याकरण वह विद्या है जिससे हम शुद्ध भाषा बोलना, तथा पढ़ना-लिखना सीख सकते हैं ।

2. भाषा

अब सोचो भाषा क्या है ? जब तुमको भूख लगती है, तुमको प्यास लगती है, तुमको कही दर्द होता है, और जब तुमको किसी चीज की जरूरत पड़ती है, तो तुम दूसरो से कहते हो, तब सुनने वाले तुम्हारी बात समझ लेते है । इसी तरह जब दूसरों को किसी चीज की जरूरत पड़ती है तो वे अपनी बात कहते हैं और तुम उनकी बात समझ जाते हो ।

—तो भाषा वह साधन है जिससे हम अपनी बात बोलकर या लिखकर दूसरों तक पहुँचा सकते हैं और दूसरो की बात सुनकर या पढ़कर समझ सकते हैं ।

3. वाक्य

अच्छा, एक बात सुनो—'अच्छा बालक सच बोलता है ।' मैंने क्या बात कही तुम समझ गए न ? क्या यह बात पूरी है ? हां, बात पूरी है ।

अगर कहा होता—'अच्छा बालक सच' तो यह बात अधूरी होती। तो एक *वाक्य में एक पूरी बात होती है।*

अच्छा, अब बताओ—'अच्छा बालक सच बोलता है,' इस वाक्य में कितने शब्द हैं ? पाँच है न ?

—तो जिस शब्द-समूह से पूरी बात समझ मे आ जाए उसे वाक्य कहते है।

अभ्यास

ये वाक्य है। गिनकर बताओ प्रत्येक में कितने शब्द है।

1. हम हिन्दी सीखते है।
2. अध्यापक बहुत मेहनत करते है।
3. काला बकरा घास चरता है।

4. शब्द

क्या तुम बता सकते हो शब्द किसे कहते है ? एक शब्द लिखो — 'बालक'। क्या लिखा ? 'बालक'। इसका क्या अर्थ है ?·· 'बच्चा'। *'बालक' में क्या-क्या है ? देखो, इसमे ब आ ल और क वर्ण* शामिल है और इसका अर्थ है 'बच्चा'।

—तो शब्द उस वर्ण-समूह का नाम है जिसका कोई अर्थ हो।

अभ्यास

ये शब्द है। गिनकर बताओ प्रत्येक में कितने वर्ण है और प्रत्येक का क्या अर्थ है ?

गायक, सेविका, शिक्षक, शिशु, औरत।

5. वर्ण

यह तुम जान गए हो कि वाक्य क्या होता है, और शब्द क्या होता है ?

अब सोचो वर्ण क्या होता है। 'बालक' मे क्या-क्या है ? बा, ल और क, ठीक। अब बोलो ब आ (ा) यह 'ब' की आवाज कहाँ से निकली ? मुँह मे से न ?

—तो वर्ण उस ध्वनि को कहते है जो हमारे मुह से निकलती है।

वर्ण दो प्रकार के होते है :

1. स्वर
2. व्यंजन

आओ स्वर के बारे मे विचार करें।

1. स्वर

अच्छा, तुम एक काम करो। तुम साँस लो। तुम किससे साँस लेते हो? नासिका से न? अन्दर क्या जाता है, हवा जाती है न ? हाँ, हवा अन्दर फेफड़ो

में जाती है फिर वाहर निकलती है। हवा किससे बाहर निकलती है ? नासिका से भी और मुंह से भी। अच्छा, तुम नासिका से साँस लो और मुंह से वाहर निकालो। कोई ध्वनि मुंह से निकली ? नहीं निकली न ? ठीक, तुम फिर से साँस लो और हवा को इस तरह मुंह से निकालो—अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ, अं, ठीक।

इस वार क्या हुआ, हवा ध्वनि बनकर मुंह से निकली न ? कौन-सी ध्वनि निकली ? अ आ आदि वर्णों की। इन वर्णो को बोलते समय हवा मुख के भीतर किसी अग (कंठ, तालु, दांत, होठ) को छुए विना वाहर निकलती है।

—तो जो वर्ण विना किसी सहायता से बोले जाते है 'स्वर' कहलाते है। इनको बोलते समय हवा मुख के स्थानों से नही टकराती है।

स्वरों के दो रूप

स्वरों के दो रूप होते है।

1. अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं

ये अकेले बोले और लिखे जाते है। जैसे :

अनार, आम, इमली, ईसाई, उमा, ऊन, ऋषि, एडी, ऐनक, ओखली, औरत, अगूर।

2. ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं, ये अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं की मात्राएँ है। 'अ' की मात्रा नही होती है, इसकी आवाज व्यजनों मे छिपी रहती है। 'र' के साथ 'उ' 'ऊ' की मात्रा दाहिनी ओर लगती है। मात्रा स्वर का एक दूसरा रूप है। मात्राएँ व्यजनों को बोलने में सहायता करती हैं।

स्वरों के भेद

अच्छा, तुम इस स्वर को बोलो—'अ'

अब इस स्वर को वोलो—'आ'

दोनों को बोलने मे क्या अन्तर है ? 'अ' को वोलने मे थोड़ा समय लगता है और 'आ' को बोलने में अधिक समय लगता है। इस तरह 'इ-ई' और 'उ-ऊ' को बोलने मे अन्तर है।

(छोटे) ह्रस्व स्वर

अ इ उ ऋ को बोलने मे थोड़ा समय लगता है अतः ये ह्रस्व स्वर हैं।

(बड़े) दीर्घ स्वर

आ ई ऊ ए ऐ ओ औ को बोलने में अधिक समय लगता है अतः ये दीर्घ स्वर है।

अं	—	अनुस्वार है
अँ	—	चन्द्रबिन्दु या अनुनासिक है
अः	—	विसर्ग है।

2. व्यंजन

अच्छा, तुम फिर से साँस लो। मुँह से इस तरह की ध्वनियाँ निकालो—

क च ट त प य श—ये ध्वनियाँ मुँह से कैसे निकलती है? मुख के स्थानों से (कंठ, तालु, मूर्द्धा, दाँत, होठ से) टकराकर निकलती है न?

तो व्यंजन वे वर्ण है जिनको बोलने मे हवा मुख के स्थानों से टकराकर निकलती है।

ये व्यंजन वर्ण है।

क	ख	ग	घ	ङ	—	कवर्ग
च	छ	ज	झ	ञ	—	चवर्ग
ट	ठ	ड	ढ	ण	—	टवर्ग
त	थ	द	ध	न	—	तवर्ग
प	फ	ब	भ	म	—	पवर्ग
य	र	ल	व		—	अन्तस्थ
श	ष	स	ह		—	ऊष्म

टवर्ग में दो और ध्वनियाँ ड़ और ढ़ आई है। इसके अतिरिक्त अरबी-फ़ारसी भाषा से क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ ध्वनियाँ हिन्दी में आई हैं। ज़ और फ़ ध्वनियों का उच्चारण तो काफी मिलता है किन्तु क़, ख़, ग़ ध्वनियों का उच्चारण कम मिलता है। इन क़, ख़, ग़ ध्वनियों का उच्चारण प्रायः क, ख, ग की तरह होता है।

आओ उच्चारण की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन वर्णों का अभ्यास करें।

(1) अच्छा अब कवर्ग के वर्णों को बोलकर देखो कि हवा मुख के किस स्थान से टकराकर निकलती है? 'कंठ' से न? और जीभ का पिछला भाग उनको बोलने में सहायता करता है।

—तो कवर्ग के सारे वर्ण कंठ और जीभ के पिछले भाग से बोले जाते है। अ आ अः और [illegible] को भी इसी स्थान से बोलते है।

(2) चवर्ग के सारे वर्णों को बोलो। हवा मुख के किस स्थान से टकरा कर निकलती है, तालु से न? और जीभ के बीचवाला भाग उनको बोलने में सहायता करता है। — तो चवर्ग के सारे वर्ण तालु और जीभ के बीच के भाग से बोले जाते है।

इ, ई, य और श को भी यही से बोलते है।

(3) टवर्ग के वर्णों को बोलो। हवा मुख के किस स्थान से टकराकर निकलती है? मूर्द्धा से न? और जीभ के आगे का भाग इनको बोलने मे सहायता करता है—तो टवर्ग के सारे वर्ण मूर्द्धा और जीभ के आगे के भाग से बोले जाते हैं।

ऋ, ष और र को भी इसी स्थान से बोलते हैं।

(4) तवर्ग के वर्णों को बोलकर देखो, हवा मुख के किस स्थान से टकराकर निकलती है? दाँतों से न? और जीभ के आगे का भाग इनको बोलने में सहायता करता है।—तो, तवर्ग के सारे वर्ण दाँत और जीभ के आगे के भाग से बोले जाते हैं।

ल और स को भी इसी स्थान से बोलते हैं।

(5) अब पवर्ग के वर्णों को बोलो। हवा मुख के किस स्थान से टकराकर निकलती है? होठों से न?

—तो पवर्ग के सारे वर्ण केवल होठों से बोले जाते हैं।

उ, ऊ भी इसी स्थान से बोले जाते हैं।

कुछ वर्ण ध्वनियाँ दो स्थानों से निकलती हैं जैसे :

'ए-ऐ' कण्ठ और तालु से तथा 'ओ-औ' दन्त और ओष्ठ से।

बारहखड़ी

अब तुम पहला व्यंजन बोलो—'क', अन्त में किसकी ध्वनि [illegible] 'अ' की। इस तरह अन्य व्यंजनों को बोलकर देखो, इनमें 'अ' की ध्वनि [illegible] है।—तो व्यंजन स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं और [illegible] प्रत्येक स्वर की मात्रा जोड़कर उसकी ध्वनि प्राप्त कर सकते हैं। [illegible]—

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं।

इनको फिर से पढ़कर देखो, प्रत्येक स्वर की ध्वनि [illegible] और स्वरों की सहायता से कितनी ध्वनियाँ मिलती हैं [illegible] हैं।

—तो व्यंजनों को स्वरों की सहायता से [illegible] हैं।

संयुक्त [illegible]

कभी-कभी दो व्यंजन आपस में [illegible] करते हैं, जैसे—

पत्र, पक्ष, आज्ञा, कुत्ता। [illegible] देखें कौन-कौन-से व्यंजन मिलकर [illegible] :

पत्र — [illegible]

पक्ष — [illegible]

आज्ञा — [illegible]

कुत्ता — [illegible]

1. हिन्दी में [illegible] की [illegible]

तुम बता सकते हो 'क्ष' में कौन-कौन-से व्यंजन मिले है ? 'क' और 'ष'। 'क' के नीचे क्या है ? 'क' के नीचे (्) हलन्त चिह्न है। हलन्त अक्षर से 'अ' की ध्वनि उड़ जाती है और उस अक्षर का मूल्य आधा अक्षर होता है। 'त्र' में कौन-सा अक्षर आधा है और कौन-सा पूरा ? 'त' आधा है और 'र' पूरा है न ?

—तो संयुक्त व्यंजनों में एक व्यंजन आधा रहता है और एक व्यंजन पूरा। संयुक्त व्यजनों को संयुक्ताक्षर भी कहते है।

तुम बता सकते हो 'पत्ता' 'आज्ञा' मे कौन-कौन-से संयुक्त व्यंजन है ?

अब आओ देखें, इन शब्दों को कैसे बोला जाता है। पक्का, कुत्ता, बच्चा, अच्छा, नन्हा। 'पक्का' शब्द बोलते समय किस वर्ण पर अधिक बल पड़ता है ? 'प' पर न ?

—तो संयुक्त व्यंजन वाले शब्दों को बोलने मे पूर्व के वर्णों पर अधिक बल पड़ता है, क्योंकि आधे वर्ण उन्हींके साथ बोले जाते हैं। जैसे—

पक/का, कुत/ता, बच/चा, अच/छा, नन/हा।

अभ्यास

1. ऐसे दो-चार शब्द बताओ जिनमे संयुक्त व्यजन हों।
2. बताओ उनमें कौन-कौन-से व्यजन मिले है।

अब आओ कुछ संयुक्त व्यंजनो का अभ्यास करें।

सिक्का	—	क्क	=	क्	+	क
मुख्य	—	ख्य	=	ख्	+	य
मुग्ध	—	ग्ध	=	ग्	+	ध
विघ्न	—	घ्न	=	घ्	+	न
बच्चा	—	च्च	=	च्	+	च
अच्छा	—	च्छ	=	च्	+	छ
सज्जन	—	ज्ज	=	ज्	+	ज
झञ्झा	—	ञ्झ	=	ञ्	+	झ
मिट्टी	—	ट्ट	=	ट्	+	ट
चिट्ठी	—	ट्ठ	=	ट्	+	ठ
अड्डा	—	ड्ड	=	ड्	+	ड
बुड्ढा	—	ड्ढ	=	ड्	+	ढ
पत्ता	—	त्त	=	त्	+	त
पृथ्वी	—	थ्व	=	थ्	+	व
उद्देश्य	—	द्द	=	द्	+	द

बुद्धि	—	द्ध	=	द्	+	ध
गन्ना	—	न्न	=	न्	+	न
प्यार	—	प्य	=	प्	+	य
मुफ्त	—	फ्त	=	फ्	+	त
गुब्बारा	—	ब्ब	=	ब्	+	ब
अभ्यास	—	भ्य	=	भ्	+	य
अम्मा	—	म्मा	=	म्	+	म
शय्या	—	य्य	=	य्	+	य
प्रकाश	—	प्र	=	प्	+	र
कर्म	—	र्म	=	र्	+	म
उल्लू	—	ल्ल	=	ल्	+	ल
श्याम	—	श्य	=	श्	+	य
कष्ट	—	ष्ट	=	ष्	+	ट
पृष्ठ	—	ष्ठ	=	ष्	+	ठ
उपस्थित	—	स्थ	=	स्	+	थ
ब्रह्म	—	ह्म	=	ह्	+	म
विद्या	—	द्य	=	द्	+	य
सप्ताह	—	प्त	=	प्	+	त

वर्णों को लिखने का क्रम

अब आओ वर्णों को लिखने का क्रम तथा विधि सीखें।
हिन्दी में वर्णों को लिखने की विधि ऊपर से नीचे तथा बाएँ से दाएँ है।

देखो		बनाओ						
अ	—	)	उ	उ	अ	अ		
आ	—	)	उ	उ	अ।	आ		
इ	—	-	ट	ड	इ	इ		
ई	—	-	ट	ड	ई	ई		
उ	—	)	उ	उ				
ऊ	—	)	उ	ऊ	ऊ			
ऋ	—	\	>	न	त्र	त्र-।	ऋ	ऋ
ए	—	)	र	ए	ए			
ऐ	—	)	र	ऐ	ऐ			
ओ	—	)	उ	उ	अ	ओ	ओ	
औ	—	)	उ	उ	अ	औ	औ	

अं	—	ɔ	उ	ऊ	अ	अं	अं
क	—	०	व	क	क		
ख	—	ɔ	र	रव	ख		
ग	—	र	ग	ग			
घ	—	c	६	ध	घ		
च	—	-	च	च	च		
छ	—	८	६	छ	छ		
ज	—	ᴗ	ज	ज	ज		
झ	—	।	८	ड	इ	ह	झ
ट	—	।	८	ट			
ठ	—	।	८	ठ	ठ		
ड	—	।	८	ड	ड		
ढ	—	।	८	ढ	ढ		
ण	—	ए	ए।	ण			
त	—	र	त	त			
थ	—	र	र	थ	थ		
द	—	।	८	द	द		
ध	—	८	ध	ध।	ध		
न	—	-	न	न			
प	—	।	ए	प	प		
फ	—	।	८	प	फ	फ	
ब	—	०	०	व	ब		
भ	—	९	९	भ	भ		
म	—	।	५	म	म		
य	—	ऽ	ऽ	य	य		
र	—	ɔ	र	र			
ल	—	९	ए	ल	ल		
व	—	०	व	व			
श	—	[illegible]	श	श।	श		
ष	—	८	प	ष	ष		
स	—	ɔ	र	स	स	स	
ह	—	।	८	ड	ह	ह	
क्ष	—	ɔ	क्ष	[illegible]	क्ष		
त्र	—	⟍	>	त्र	त्र		
ज्ञ	—	ɔ	र	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ	

(राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्रवेशिका पर आधृत)।

अब तुम जान गए

1. व्याकरण क्या है और उसको पढ़ने से क्या लाभ है।
2. वाक्य किसे कहते हैं और उसका क्या लाभ है।
3. शब्द किसे कहते हैं और वह कैसे बनता है।
4. वाक्य किसे कहते हैं और वह किससे बनता है।
5. शब्दों को मिलाकर क्या बनाते है।
6. वर्ण कितनी तरह के होते हैं।
7. वर्ण किसे कहते है और कई वर्णों को मिलाकर क्या बनाते है।
8. स्वर किसे कहते हैं। स्वरों के कितने रूप है।
9. व्यंजन किसे कहते हैं तथा कौन-कौन-से हैं।
10. संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं तथा कैसे बनते हैं।
11. हिन्दी वर्णों को लिखने की विधि क्या है और उनको लिखने का क्या क्रम है।

अभ्यास

पढ़ो—

1. मोहन कल मन्दिर जाएगा।
   यह क्या है ? कैसे ?
2. रतन कलम लाता है। इसमें 'रतन', 'कलम' और 'लाता' है क्या हैं ? कैसे ?
3. कई शब्द मिलकर क्या बनता है, उदाहरण दो।
4. सभी स्वर वर्णों को लिखकर बताओ।
5. सभी व्यजन वर्णों को लिखकर बताओ।
6. इनमें स्वर और व्यंजन छाँटो—
   क, ई, उ, ए, ड, य, र, ओ, इ, न, ल
7. मकल, हमल, मरग, यचा, दनम, लवाक
   ये वर्ण-समूह है, पर शब्द नहीं। क्यों ?
   इनमें आए हुए वर्णों का क्रम बदलकर इनसे शब्द बनाओ।
8. व्याकरण क्यों पढ़ना चाहिए ?
9. अगर भाषा नही होती तो क्या होता, सोचो और बताओ।
10. क्ष, छ, ड़, ज्ञ इनके लिखने का क्रम बताओ।

याद रखो—

1. भाषा की पहली सार्थक इकाई वाक्य है।
2. वाक्य सार्थक शब्दों से बनता है, उससे एक बात पूरी होती है।
3. शब्द वर्णों के मेल से बनता है तथा वाक्य के प्रसंग में उसका एक निश्चित अर्थ होता है।

खंड 2

शब्द-विचार

शब्दों के भेद

1. शब्दों की उत्पत्ति

भिन्न-भिन्न देशों मे भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती है, परन्तु हमारे देश मे भिन्न-भिन्न लोग या एक ही तरह के लोग भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते है। जिनके पूर्वज चीन से आये वे चीनी भाषा बोलते है। जिनके पूर्वज फ्रांस से आए वे फ्रेंच बोलते हैं। हमारे दादे-परदादे भारत से आये और हम भोजपुरी तथा हिन्दी बोलते है।

ऐसे तो तुम प्रतिदिन अपनी बात बोलने के लिए कितने ही हिन्दी शब्द प्रयोग करते हो। क्या तुमने कभी यह सोचा है कि हिन्दी मे शब्द कहाँ से आए ? अच्छा, इस वाक्य को पढ़ो—

तुम्हारा लेख ठीक है उसमे एक भी बात गलत नही।

1. क्या तुम बता सकते हो 'लेख' शब्द किस भाषा से आया है ? यह संस्कृत भाषा से आया है। तो, हिन्दी मे संस्कृत के शब्द प्रयोग होते है।

2. 'बात' शब्द किस भाषा से आया है ? 'बात' संस्कृत के 'वार्ता' शब्द से उत्पन्न हुआ है। 'वार्ता' संस्कृत मूल शब्द है और बात उसका बिगड़ा हुआ रूप है।

3. 'गलत' शब्द किस भाषा से आया है ? 'गलत' शब्द अरबी भाषा से आया है। तो, हिन्दी मे अरबी शब्द भी आए है।

अब इस वाक्य को पढो—

बुतिक में हँसुआ बिकता है।

4. बुतिक शब्द कहाँ से आया है ? ऐसे तो यह फ्रेंच शब्द है, परन्तु इस का प्रयोग हम रात-दिन करते आये हैं। इसी तरह 'हँसुआ' शब्द का भी प्रयोग करते हैं। 'बुतिक' और 'हँसुआ' का संस्कृत शब्द से कोई सम्बन्ध नही, इनका सम्बन्ध हमारे देश से है, हमारे देश की बोली से है। तो, ऐसे शब्द को देशी शब्द कहते है। फिर इस वाक्य को पढ़ो—

मास्टर की मोटर गाराज मे है।

अच्छा, 'मास्टर' शब्द किस भाषा का शब्द है?

यह अंग्रेजी भाषा का शब्द है न? इसी तरह 'मोटर' शब्द भी अंग्रेजी शब्द है।

—तो हिन्दी मे अंग्रेजी शब्द भी प्रयोग करते है। इसी तरह 'गाराज' फ्रेंच शब्द है। तो फ्रेंच शब्द भी हिन्दी में प्रयोग करते हैं।

तत्सम शब्द

1. अब इन शब्दो को देखो—

लेख, माला, श्वेत, पुष्प—ये संस्कृत के मूल शब्द हैं।

ये शब्द हिन्दी में ज्यों का त्यों प्रयोग होते है। इन शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। तत्सम का अर्थ है उसके समान यानी संस्कृत के बराबर। ये एक तरह के शब्द है।

तद्भव शब्द

2. बात, रात, दाँत, खेत, हाथ—ये शब्द भी संस्कृत के हैं, पर ये संस्कृत के 'वार्ता, रात्रि, दन्त, क्षेत्र, हस्त', शब्दों के बिगड़े हुए रूप हैं। इन्हें तद्भव शब्द कहते है। तद्भव का अर्थ है—उससे उत्पन्न हुआ। ये दूसरी तरह के शब्द हैं।

देशी शब्द

हँसुआ, गोणी, लोगान, बँगाली, पिंगो, बिरनी, इन शब्दों का संस्कृत से कोई सम्बन्ध नही। ये मोरिशस की बोली से हिन्दी मे प्रयोग होते हैं। ऐसे शब्दों को हम देशी शब्द कह सकते है। ये तीसरी तरह के शब्द हैं।

विदेशी शब्द

(क) गलत, मुहब्बत, नफरत, शरारत—ये अरबी शब्द है।

(ख) कपास, होश, होशियार, सैर, सैलाव—ये फारसी शब्द हैं। ये शब्द उर्दू मे भी प्रयोग होते हैं।

(ग) मास्टर, मोटर, क्लब, स्कूल, कालेज—ये अंग्रेजी शब्द है।

(घ) गाराज, राँदे-वू, शाँदे-मार्स, होटल—ये फ्रेंच शब्द हैं।

अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि हमारे लिए विदेशी भाषा हैं। इसलिए इन शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं।

—तो उत्पत्ति की दृष्टि से हिन्दी भाषा मे चार तरह के शब्द हैं—तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी।

शब्दों की व्युत्पत्ति

अब इन शब्दो को देखो—

घर, गायघर, गिरिधारी

रूढ़ शब्द

पहला शब्द—घर

इस शब्द के खंड—घ+र करके देखो, तो खंड 'घ' का कोई अर्थ नही होगा और खंड 'र' का भी कोई अर्थ नही होगा। ये निरर्थक होंगे। अर्थात् 'घर' ऐसा शब्द है जिसके सार्थक खण्ड नही हो सकते और परम्परा से किसी वस्तु-विशेष के रूप में उसका अर्थ चला आ रहा है। ऐसे शब्द रूढ़ शब्द कहलाते हैं।

—तुम इस तरह के रूढ़ शब्द बता सकते हो?

यौगिक शब्द

अब 'गायघर' शब्द के खण्ड करके बताओ। 'गाय' 'घर' हुआ न? 'गाय' शब्द का कोई अर्थ है न? हाँ, गाय एक पशु है। इस तरह 'घर' शब्द का भी एक अर्थ है। और 'गायघर' का अर्थ इन खण्डों के अनुसार है न? अतः इसका अर्थ हुआ—'गाय का घर'।

—तो जिस शब्द के खण्ड करने पर उन खण्डों के कोई अर्थ हों और उस शब्द का अर्थ उन खण्डों के अनुसार हो, उस शब्द को यौगिक शब्द कहते है।

यौगिक का अर्थ है—योग (जोड़) से बना।

योग-रूढ़ि शब्द

अब 'गिरिधारी' के खण्ड करके देखो गिरि+धारी हुआ न? ऐसे तो गिरिधारी अवश्य यौगिक शब्द है—पर इसका अर्थ इन खण्डों के अनुसार नही इनसे भिन्न है। जानते हो गिरिधारी किसे कहते है? श्रीकृष्णजी को।

—तो जो शब्द भले ही यौगिक हों, पर वे एक विशेष अर्थ देते हों, वे योग-रूढि कहलाते हैं। ऐसे शब्द यौगिक भी हैं और रूढ़ भी है।

इस प्रकार बनावट की दृष्टि से यानी व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द तीन प्रकार के होते है—रूढ़ (घर), यौगिक (गायघर), योग-रूढ़ि (गिरिधारी)। अपनी पाठ्य-पुस्तकों में से ऐसे शब्द छाँटो। तुम्हे उनमें अधिक रूढ और यौगिक शब्द मिलेंगे, योग रूढ़ि कम मिलेंगे।

अब तुम जान गए

1. हिन्दी में शब्द कहाँ से आये, उत्पन्न हुए।
2. तत्सम शब्द कैसे शब्दों को कहते है। तद्भव शब्द कैसे शब्दो को कहते है। विदेशी शब्द कैसे शब्दों को कहते हैं। यह है उत्पत्ति की दृष्टि से।
3. बनावट यानी व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्द कैसे बनते है—
   (क) रूढ़ शब्द, जिनके खंडों के सार्थक अर्थ नही है।
   (ख) यौगिक शब्द, जिनके खंडों के सार्थक अर्थ है। और पूरे शब्दों के अर्थ खंडों के अनुसार हैं।

(ग) योग-रूढ़ि जिनके अर्थ उनके खंडों के अर्थ से भिन्न हैं।

अभ्यास

पढ़ो—

1 अपनी पाठ्य-पुस्तक से तत्सम और तद्‌भव शब्दों की सूची बनाओ।

2. रूढ़, यौगिक और योग-रूढ़ि शब्द छाँटो : हाथी, घुड़सवार, कलम, विद्यार्थी, शिवमदिर, दशानन, राम, महादेव। तीर, तट, गणपति, स्नानघर, पंकज, टीन, राजा।

3. रूढ़ और यौगिक शब्दो में क्या अन्तर है, उदाहरण दो।

4. पाँच देशी शब्द लिखो।

5. अंग्रेजी से आए पाँच शब्द लिखो जिनका तुम नित्य प्रयोग करते हो।

6. अरबी से आए पाँच शब्द बताओ।

7. तुम्हारे घर मे जो वस्तुएँ हैं, उनके नामों की सूची बनाकर प्रत्येक के आगे लिखो कि वह तत्सम या तद्‌भव है, देशी या विदेशी है।

शब्दों का प्रयोग

तुम अपनी बात दूसरों से कहते हो और दूसरों की बात सुनते हो। मान लो, तुम अपने मित्र रमेश से कलम और कागज माँग रहे हो। तुम कहोगे—

'रमेश, मुझे कलम और कागज ला दो।'

इस वाक्य मे—

1. रमेश एक व्यक्ति का नाम है।
2. 'मुझे' शब्द किसी व्यक्ति (तुम्हारे) के लिए आया है।
3. 'कलम' 'कागज' चीजें है।
4. 'और' शब्द 'कलम'—'कागज' को जोड़ता है।
5. 'ला दो' शब्द ऐसे शब्द हैं जिनसे कुछ करने की प्रार्थना प्रकट होती है।

अब इस वाक्य को देखो—

आहा ! राम का काला घोड़ा तेज दौड़ रहा है।

6. 'आहा' शब्द प्रसन्नता प्रकट करता है।
7. 'का' शब्द राम से घोड़े का सम्बन्ध बताता है।
8. 'काला' शब्द घोड़े की विशेषता (रंग) बताता है।
9. 'तेज' शब्द दौड़ रहा है की विशेषता (गति) बताता है।

—तो तुम जिन शब्दो का नित्य प्रयोग करते हो, उनका अपना-अपना काम है।

याद रखो—

1. कोई शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम है। जैसे— रमेश, कागज, कलम। नाम या संज्ञा।

2. कोई शब्द किसी नाम के स्थान पर प्रयोग हो रहा है। जैसे—
मुझे, तुम्हारे, उसके। सर्वनाम।

3. कोई शब्द किसी नाम, वस्तु या व्यक्ति की विशेषता प्रकट करता है। जैसे—
बड़ा, काला। विशेषण।

4. कोई शब्द किसी काम का करना या होना प्रकट करता है। जैसे—
ला दो, दौड़ रहा है। क्रिया या काम।

5. कोई शब्द काम की विशेषता (गति, चाल) प्रकट करता है। जैसे—
तेज, धीरे-धीरे। क्रिया-विशेषण।

6. कोई शब्द हर्ष या प्रसन्नता प्रकट करता है। जैसे—
आहा! वाह-वाह! विस्मयादि बोधक शब्द।

7. कोई शब्द एक शब्द से दूसरे का सम्बन्ध बताता है। जैसे—
का की के। सम्बन्ध बोधक शब्द।

8. कोई शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है। जैसे—
और, परन्तु। समुच्चय बोधक शब्द या संयोजक।

—तो प्रयोग की दृष्टि से शब्द आठ (8) प्रकार के होते हैं।

नाम (संज्ञा)

अब आओ नाम के बारे में कुछ विशेष बातें करें। इन वाक्यों को पढ़ो—

1. **विमल** का घर बड़ा है।
2. **पोरलुई** में घुड़दौड़ होती है।
3. **गाय** घास खाती है।
4. **मुड़िया पहाड़** मोका पर्वतमाला में है।
5. **ग्रांदरिवियेर** एक लम्बी नदी है।
6. हमारे देश की **सुन्दरता** उसके प्राकृतिक दृश्यों से है।
7. **ईख** के **रस** से **चीनी** बनती है।
8. किसान सबकी **भलाई** करता है।

काले छपे शब्दों पर ध्यान दो।

विमल एक व्यक्ति का नाम है। **पोरलुई** एक शहर का नाम है। **मुड़िया पहाड़** एक पहाड़ का नाम है। **गाय** एक पशु का नाम है। **ग्रांदरिवियेर** एक नदी का नाम है। **ईख** एक पौधे का नाम है। **रस, चीनी** वस्तुओं के नाम हैं। **सुन्दरता** एक गुण का नाम है। **भलाई** एक भाव का नाम है। ये शब्द वस्तु विशेष के नाम हैं। ऐसे शब्दों को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का अर्थ है—नाम।

—तो किसी व्यक्ति, पशु, शहर, नदी, पहाड़, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

याद रखो—

1. नाम (संज्ञा) से व्यक्ति का बोध होता है।
2. नाम (संज्ञा) से वस्तु का बोध होता है।
3. नाम (संज्ञा) से गुण या भाव का बोध होता है।

प्राणीवाचक नाम या संज्ञा

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. खेतिहर का बेटा अध्यापक बन गया।
2. मछुआ मछली मारता है।

पहले वाक्य में—खेतिहर, बेटा और अध्यापक नामों से किसका बोध होता है? आदमी का न?

दूसरे वाक्य में—मछुआ—आदमी है। (प्राणी है)
मछली—जन्तु है। (प्राणी है)

खेतिहर, बेटा, अध्यापक, मछुआ और मछली सभी में प्राण (जान) है, ये प्राणी है।

—तो जिस संज्ञा से (नाम से) प्राणी का बोध होता है, उसको प्राणी वाचक संज्ञा (नाम) कहते है।

अप्राणीवाचक संज्ञा (नाम)

इस वाक्य को पढ़ो—

गाड़ी का पहिया टूटा है।

इस वाक्य में—'गाड़ी' और 'पहिया' शब्दों से किसका बोध होता है? व्यक्ति का या वस्तु का? वस्तु का न? इन वस्तुओं मे प्राण नहीं हैं। ये बेजान हैं।

—तो जिस संज्ञा (नाम से) बेजान वस्तु का बोध होता है, उसको अप्राणी-वाचक संज्ञा (नाम) कहते है।

अभ्यास

1. इन संज्ञाओं मे प्राणीवाचक और अप्राणीवाचक संज्ञाएँ छाँटो—घास, बकरी, नदी, समुद्र, मोहन, बाँसुरी, तीर, राजकुमार, कप्तान, मोटर, लहँगा, बकरा, सेवक, नारंगी, कली, फूल, माली, पौधा, सिपाही, साधु, कीड़ा, साँप।
2. इन नामों मे से व्यक्ति, वस्तु और गुण या भाव का बोध कराने वाले नामों को अलग-अलग लिखो—
   अर्जुन, इन्द्र, इन्द्रधनुष, तालाब, सचाई, सुन्दरता, पोल, सफाई, ईमानदारी, मेहनत, अंकनी, झाडन, श्रीराम, दया, विवशता, बेकारी, कमरा, पवित्रता, मधुरता, लगन, श्रद्धा।

सर्वनाम

इन वाक्यों को पढो—

पिताजी, श्याम और कमला से बातें कर रहे हैं—

पिताजी—श्याम, कल तुम कहाँ गए थे ?

श्याम—पिताजी, मैं स्कूल गया था।

कमला—नही पिताजी, वह नदी में नहाने गया था।

पिताजी—मैं यह तुम्हारे मुंह से नहीं सुनना चाहता। उसी के मुंह से सुनना चाहता हूं।

श्याम—वे मुझे खीच ले गए थे।

पिताजी—वे, कौन ?

श्याम—आपके दोस्त के बेटे।

पिताजी—तुम्हें कितनी बार मना किया है, उनका संग छोड दो, वे तुम से कितने बड़े हैं ?

कमला—पिताजी, आप ही अपने मित्र से कह दें कि उनके बेटे स्कूल नही जाते।

पिताजी—अच्छा, अच्छा। तुम जाकर अपना-अपना काम करो। मैं उनकी भी खबर लूंगा।

अच्छा, तुम बता सकते हो—तुम, मैं, वह, आप, वे, किन-किन नामों की जगह पर आए है ?

पिताजी श्याम से बोलते हैं—'श्याम' के लिए 'तुम' प्रयोग करते हैं। श्याम बोलता है—खुद के लिए 'मैं' का प्रयोग करता है। कमला श्याम के बारे में बोलती है—श्याम के लिए 'वह' का प्रयोग करती है। इसी तरह ऊपर के काले छपे शब्द किसी न किसी नाम की जगह पर आए हैं, सोचो और बताओ।

—तो जो शब्द किसी नाम की जगह पर प्रयोग होता है उसको सर्वनाम कहते हैं।

ये सर्वनाम हैं—मैं, तू, वह, यह, हम, तुम, वे, आप, ये, मेरा, तेरा, उसका, इसका, हमारा, तुम्हारा, उनका, अपना, इनका मुझे, तुझे, उसे, इसे, हमे, तुम्हें, उन्हें, अपने, इन्हें।

विशेषण

इन वाक्यों को पढ़ो —

1. काला घोड़ा आता है।
2. बाग मे बड़े-बड़े फूल हैं।
3. भरा बोरा भारी है।
4. गहरी नदी तेज नही बहती है।

5. वह उस मजबूत दरवाजे को नहीं तोड़ सका।

6. पहले लड़के को बुलाओ।

सोचो और बताओ, ऊपर के काले छपे शब्द किन-किन अन्य शब्दों के रंग, रूप और गुण (विशेषता) बताते हैं। हां, 'काला' शब्द 'घोड़ा' का रंग बताता है। 'बड़े-बड़े' 'फूल' का रूप बताता है। 'मजबूत' 'दरवाजे' का गुण प्रकट करता है। ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं। ये नाम की विशेषता बताते हैं।

—तो जो शब्द वाक्य में आए किसी नाम (संज्ञा) का रंग, रूप या गुण प्रकट करता है उसको विशेषण कहते हैं।

क्रिया (काम)

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. रमेश पुस्तक पढ़ता है।
2. राम ने पाठ पढ़ लिया।
3. माताजी कपड़ा सीती हैं।
4. दीदी ने दीया जलाया है।
5. विमल पाठशाला जाएगा।
6. महेश ने कहा, "मैं पैसा नहीं दूंगा।"

इन वाक्यों में किन-किन कामों का करना पाया जाता है, प्रत्येक वाक्य के बारे में सोचो और बताओ।

पहले वाक्य में किस काम का करना पाया जाता है? 'पढ़ना' काम का न? दूसरे वाक्य में भी 'पढ़ना' ही काम पाया जाता है। तीसरे वाक्य में किस काम का करना पाया जाता है? 'सीना' काम का न?

चौथे वाक्य में 'जलाया' से 'जलाना' काम का करना मालूम होता है।

पांचवें वाक्य में 'जाएगा' से 'जाना' काम का करना मालूम होता है।

छठे वाक्य में 'ने कहा' से 'कहना' काम करना मालूम होता है और 'दूंगा' से 'देना' काम के बारे में मालूम होता है।

—तो जिन शब्दों से किसी काम का करना पाया जाए, उन्हें क्रिया कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी काम के नाम को क्रिया कहते हैं।

आओ अब संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के बारे में एक मजे की बात देखें।

1. नानी एक गाय पालती हैं। नानी चार गायें पालती हैं।
2. तुम पोरतुई जाते हो। तुमको बस द्वारा जाना पड़ेगा।
3. काला घोड़ा निकल गया। काली घोड़ी निकल गई।
4. राम चला गया। सीता चली गई।
5. काले छपे शब्दों को देखो—

पहले वाक्य में 'गाय' और 'गायें' में क्या अन्तर है? 'गाय' से एक का

बोध होता है और 'गायें' से अनेक का बोध होता है न ?

दूसरे वाक्य में 'तुम' और 'तुमको' में भी कारक के कारण अन्तर है।

तीसरे वाक्य मे 'काला' और 'काली' मे क्यों अन्तर है ?

इसलिए कि 'काला' पुलिंग नाम के साथ आया है और काली स्त्रीलिंग नाम के साथ आया है।

चौथे वाक्य मे 'चला गया' और 'चली गई' मे पुरुष और स्त्री के कारण अन्तर आया है और शुद्ध वाक्य बनाने के लिए इन शब्दो मे परिवर्तन करना ही पड़ता है।

—तो जिन शब्दों मे किन्ही कारणो से परिवर्तन (विकार) आता है उन्हे विकारी शब्द कहते हैं। अतः संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द है।

याद रखो

आठ प्रकार के शब्दों में चार—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं। इनमें किन्ही कारणों से परिवर्तन (विकार) आता है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यो को पढो और इनमे से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दो को छाँटो।

राजू ने एक अद्भुत सपना देखा। रमेश ने पूछा, "तुमने सपने मे क्या देखा ?" उसने कहा, 'मेरे घर मे एक परी आई। वह मुझसे कहने लगी—'चलो मेरे लोक मे।' मैंने पूछा, 'वहाँ क्या है ?' उसने बताया, 'वहाँ स्कूल नहीं है। बहुत बच्चे है। उनके पंख हैं। वे जहाँ चाहते हैं, वहाँ चले जाते हैं। उनको सब तरह के खेल आते है। वे नाचते और गाते भी है।' मेरा भी मन ललचा। मैंने कहा, 'मुझे पर लगा दो, मैं भी चलूँगा।' उसने ऐसा जादू किया। कि मेरे दो मजबूत पख हो गए। मैंने उड़ने की कोशिश की पर उड़ नही सका। मैं गिर पडा। मेरी आँखें खुली तो मैं अपने पलंग के नीचे पड़ा था।"

तुम जान गए

1. संज्ञा किसको कहते है।
2. सर्वनाम किसको कहते हैं।
3. विशेपण किसको कहते हैं।
4. क्रिया किसको कहते हैं।

और इनमे किन्ही कारणों से विकार आता है।

खंड 3

रूपान्तर

संज्ञाओं का रूपान्तर

लिंग

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. विमल परिश्रमी लड़का है।
2. विमला परिश्रमी लड़की है।

वाक्य 1 में 'विमल' और 'लड़का' संज्ञाएँ पुरुष जाति का बोध कराती हैं।

वाक्य 2 में 'विमला' और 'लड़की' संज्ञाएँ स्त्री जाति का बोध कराती है।

इसी तरह—बैल घास चरता है और गाय बैठी है। इस वाक्य में 'बैल' पुरुष जाति का बोध कराता है और गाय 'स्त्री' जाति का।

—तो जिस नाम से पुरुष जाति का बोध होता है वह पुलिंग संज्ञा है और जिस नाम से स्त्री जाति का बोध होता है वह स्त्रीलिंग संज्ञा है।

अभ्यास

नीचे लिखे नामों मे लिंग-भेद से जोड़े-जोड़े शब्द मिलेंगे। तुम उनको अलग-अलग खानों में लिखो—

बाप, दादा, चाचा, मामा, भाई, फूफा, मौसा, राजा, पति, अभिनेता, नर, पुरुष, बेटा, पुत्र, नाई, ब्राह्मण, मालिक, दास, कुत्ता, चूहा, सुनार, मोर, शेर, नौकर, पंडित, मर्द, बकरा, बहनोई, देवर, ननदोई, दादी, माँ, फूफी, चाची, ननद, बहिन, स्त्री, मादा, औरत, चुहिया, कुतिया, मालकिन, बेटी, पण्डिताइन पुत्री, ब्राह्मणी, दासी, देवरानी, मामी, मौसी।

पुलिंग	स्त्रीलिंग
बेटा	बेटी

तुमने ऊपर का काम कर लिया ?

याद रखो

प्राणीवाचक स्त्रीलिंग-पुलिंग संज्ञाओं के रूप में अन्तर है। यह अन्तर हमको उनके पहचानने मे सहायता करता है।

अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग

अप्राणीवाचक (बेजान) संज्ञाओं के लिंग पहचानना कुछ कठिन है। यह प्रयोग और अभ्यास से आता है।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. रमेश का बस्ता नया है।
2. रमेश के पुराने बस्ते में चाभी थी।
3. मैला कपड़ा कोने मे सड़ रहा है।

बताओ, पहले वाक्य में कौन-सा शब्द 'रमेश' और 'बस्ता' का सम्बन्ध बताता है? 'का' शब्द न? तो 'का' एक सम्बन्धबोधक शब्द है, जो पुलिंग संज्ञाओं का बोध कराता है। 'बस्ता' पुलिंग शब्द है।

दूसरे वाक्य मे देखो, कौन-सा शब्द 'रमेश' और 'पुराने बस्ते' का सम्बन्ध बताता है? 'के' शब्द न? 'बस्ता या बस्ते' पुलिंग संज्ञा हैं, इसलिए 'के' का प्रयोग हुआ है। तो 'के' सम्बन्धबोधक शब्द है, और पुलिंग संज्ञाओं का बोध कराता है।

तीसरे वाक्य मे कौन-सा शब्द 'कपड़ा' की विशेषता (दशा) बताता है? 'मैला' शब्द न? तो विशेषण के रूप भी संज्ञाओं के लिंग का बोध कराते हैं। दूसरे वाक्य में देखा, 'पुराने' बस्ते मे 'पुराने' शब्द भी 'बस्ते' की विशेषता बताता है।

तीसरे वाक्य मे ही, कौन-सा शब्द 'कपड़ा' की स्थिति (सड़ना) सूचित करता है? 'सड़ रहा है' न? तो, क्रिया के रूप भी संज्ञाओ के लिंग का बोध कराते हैं।

अब इन वाक्यों को देखो—

1. गोपाल की कक्षा ऊपर है।
2. काली चिडिया सूखी लता पर बैठी है।

पहले वाक्य मे, कौन-सा शब्द 'गोपाल' और 'कक्षा' का सम्बन्ध बताता है? 'की' शब्द न? 'कक्षा' स्त्रीलिंग संज्ञा है। तो 'की' सम्बन्धबोधक शब्द स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बोध कराता है।

दूसरे वाक्य मे कौन-सा शब्द चिड़िया की विशेषता (रंग) बताता है? 'काली' शब्द न? और कौन-सा शब्द 'लता' की स्थिति बताता है? 'सूखी' शब्द न? 'काली', 'सूखी' विशेषण है और इनके रूप स्त्रीलिंग संज्ञाओ का बोध कराते है। इनके पुलिंग रूप 'काला', 'काले', 'सूखा', 'सूखे' है। तो विशेषणों के रूप भी स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बोध कराते है।

दूसरे ही वाक्य मे 'बैठती' क्रिया को देखो, इसका रूप भी स्त्रीलिंग संज्ञा का बोध कराता है।

याद रखो

अप्राणीवाचक संज्ञाओ के लिंग का बोध उनके प्रयोग से होता है—

1. का, के सम्बन्धबोधक शब्द पुलिग संज्ञाओ का बोध कराते है।
2. क्रियाओं और विशेषणो के पुलिग रूप पुलिग संज्ञाओं का बोध कराते है।
3. 'की' सम्बन्धबोधक शब्द स्त्रीलिंग सज्ञाओं का बोध कराता है।
4. क्रियाओं और विशेषणों के स्त्रीलिग रूप स्त्रीलिग संज्ञाओ का बोध कराते है।

अभ्यास

1. इन वाक्यो से अप्राणीवाचक पुलिग-स्त्रीलिग संज्ञाओं की अलग-अलग सूची बनाओ—

1. मोहन के घर का ताला खुला है।
2. उस बड़े टीन की पेंदी सड़ी है।
3. लकड़ी का कोयला महँगा है।
4. आप का पता क्या है ?
5. पंडित जी के माथे पर चन्दन का टीका लगा है।
6. दीदी की गुड़िया की शादी हो गई।
7. नानी की खटिया में मोटे-मोटे खटमल है।
8. हाथ में ईख का रोआँ गड़ा है।
9. किसान के खेत में एक गहरा कुआँ है।
10. नाले के पानी में सड़ा पत्ता है।

2. अपनी पाठ्य पुस्तक से अप्राणीवाचक सज्ञाओं को छाँटो और लिंग के आधार पर उनकी सूचियाँ बनाओ।

तुम जान गए

1. पुलिग संज्ञा किसको कहते है।
2. स्त्रीलिंग संज्ञा किसको कहते हैं।
3. पुलिग संज्ञाओं को कैसे पहचान सकते हैं।
4. स्त्रीलिग सज्ञाओं को कैसे पहचान सकते हैं।

संज्ञाओं के साधारण रूप

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मेरा कलम लम्बा है।

2. लड़का नदी में तैरता है।
3. सभापति बोलने का आदेश देते हैं।
4. लड़की घर का काम-काज करती है।
5. साधु मन्दिर पर ठहरे है।
6. डाकू ने सारे गहने लूट लिए।
7. **चौबे** जी आ गए।
8. माधो, तुम कहाँ छुपे हो ?
9 पौ फूटते ही मजदूर काम पर जाने लगते हैं।

काले छपे शब्दों पर ध्यान दो।

कलम संज्ञा का अन्त किस ध्वनि से होता है ?

'अ' ध्वनि से न ? तो 'कलम' अकारान्त संज्ञा है।

इसी तरह—'लड़का', आकारान्त संज्ञा है।

'सभापति'	इकारान्त संज्ञा है
'लड़की'	ईकारान्त संज्ञा है
'साधु'	उकरान्त संज्ञा है
'डाकू'	ऊकारान्त संज्ञा है
'चौबे'	एकारान्त संज्ञा है
'माधो'	ओकारान्त संज्ञा है।

हम संज्ञाओं को उनकी ध्वनि के आधार पर, आठ वर्गों में रख सकते है और उनके रूपों को साधारण रूप मान सकते हैं।

याद रखो

1. संज्ञाओं को अकारान्त, आकारान्त आदि वर्गों में रखने से यह लाभ है कि उनके रूपान्तरों को अभ्यास करने में सुविधा होती है।

2. हिन्दी में संज्ञाओं के लिंग जानना परमावश्यक है।

अभ्यास

1. अपनी पाठ्य पुस्तक से छाँटी हुई संज्ञाओं की वर्गों में सूची बनाओ।
2. प्रत्येक वर्ग से पुलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं को छांटो, नोट करो।
3. निम्नलिखित वाक्यों से पुलिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं को छाँटो—
   (1) कप्तान के बगीचे में बड़े-बड़े पपीते हैं।
   (2) मेरे कटोरे में ठण्डी चाय है।
   (3) बाबू का बाजा टीन से बना है।
   (4) पेड़ की शाखा सूखी है।
   (5) नानी के घर सत्यनारायण की कथा होगी।

(6) मन्दिर के आँगन मे नन्दीजी की मूर्ति है।
(7) तेरी पुस्तक उस बड़ी मेज पर है।
(8) कसाई ने वकरी को खरीद लिया।
(9) छोटी शीशी में गाय का घी है।
(10) शीला का पति हनुमान का चित्र लाया था।

अब तुम जान गए

1. संज्ञाओं में लिंग-भेद होते है।
2. लिंग-भेद के कारण संज्ञाओं में परिवर्तन होता है।
3. सज्ञाओं के साधारण रूप अकारान्त, आकारान्त आदि है।
4. अकारान्त आकारान्त आदि वर्गों में पुंलिग और स्त्रीलिंग सज्ञाएँ भी है।
5. पुंलिग संज्ञाओं का बोध 'का' 'के' सम्बन्धवोधक शब्दो, विशेपणों और क्रियाओं के पुंलिग रूप से होता है।
6. स्त्रीलिंग सज्ञाओं का बोध 'की' सम्बन्धबोधक शब्द, विशेपणो और क्रियाओं के स्त्रीलिंग रूप से होता है।

आओ, अब सम्बन्धबोधक शब्दों के बारे में अधिक बाते करें।

सम्बन्धबोधक शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो —

1. राम ने मारा।
2. राम ने चूहे को मारा।
3. राम ने चूहे को डडे से मारा।
4. राम ने चूहे को वाहर निकालने के लिए डडे से मारा।
5. राम ने विल से निकले चूहे को वाहर निकालने के लिए डडे से मारा।
6. राम ने बिल से निकले चूहे को वाहर निकालने के लिए आम के डडे से मारा।
7. राम ने विल से निकले चूहे को वाहर निकालने के लिए आम के डडे से सिर पर मारा।

वाक्य (7) को पुन: पढ़ो—

यदि इस वाक्य को इस तरह लिखें—

राम बिल निकले चूहे वाहर निकालने आम डडे सिर मारा। तो क्या, वात स्पष्ट होती ? बात स्पष्ट नही होती न ? तो ने, को, से, के लिए, से, का, की, के, पर, में, ऐसे परसर्ग शब्द है जो वात को स्पष्ट करने मे सहायता करते हैं। ये वाक्य के एक शब्द से दूसरे शब्द का सम्बन्ध स्थापित करते है। ये सम्बन्ध-

बोधक शब्द या कारक कहलाते हैं। ये शब्दों के पीछे लगते है, इसलिए इनको परसर्ग भी कहते हैं।

अभ्यास

1. इन वाक्यों में कारकों को रेखांकित करो—

शिकारी ने देखा कि हरिण की टांग में चोट लगी है और वह झाड़ी मे छिपने का यत्न कर रहा है। उसके मन मे तनिक भी दया नहीं आई और दूसरी गोली से बेचारे पशु को ठण्डा ही कर दिया।

2. नीचे लिखे वाक्यों में कारक भरो—

(1) राम······रावण····· मारा था।
(2) बहेलिये······पक्षी····· गुलेल····· मारा।
(3) फूलदान······फूल डालकर······मेज ······रख दो।
(4) पेड़······पक्का आम गिरा है।
(5) कूड़ा-करकट डालने ·····कोने······कूड़ेदान रखा था।
(6) दीया जलता है, घर ·····भीतर अँधेरा नहीं।
(7) पौधे·· आस-पास घास उग गई है।
(8) बिल्ली ······चूहे····· पकड़ लिया।
(9) मछुआ नदी···· ओर जा रहा है।
(10) दूकान······तरफ मत जाओ।
(11) वर्षा······के बाद इन्द्रधनुष दिखाई देता है।
(12) पेड़······नीचे छाया है।

अब तुम जान गए

1. सम्बन्धबोधक शब्द, परसर्ग या कारक किसको कहते हैं।
2. परसर्ग या कारक-चिह्न बात को स्पष्ट करने मे सहायता करते हैं।
3. परसर्ग या कारक-चिह्न वाक्य के एक शब्द से दूसरे शब्द का सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

आकारान्त पुलिंग संज्ञा और कारक

अब इन वाक्यों को पढ़ो—

1. कछुआ आता है, लड़का डंडा उठाता है।
2. लड़के ने कछुए को डंडे से मारा।

पहले वाक्य मे 'कछुआ' संज्ञा के बाद ... है। 'डंडा' के बाद परसर्ग नहीं आया है और ... त ...पर दूसरे वाक्य मे देखो 'लड़का' के ... हुआ है। 'कछुआ' कछुए को हुआ है। '...

आकारान्त पुलिंग संज्ञाएँ है। सो, अब तुम बताओ आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के बाद, परसर्ग के आने से क्या परिवर्तन होता है। तो, आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से उनके रूपों मे अन्तर होता है, आकारान्त एकारान्त हो जाता है, अर्थात् 'आ' बदलकर 'ए' हो जाता है।

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

1. लड़का ने फल खाया।
2. पिंजड़ा में तोता है।
3. बगीचा के आम झड़ गए।
4. गीली गुब्बारा मे हवा नही भर सकती।
5. मछुआ के झोंपड़ा में आग लग गई।
6. मुर्गा ने कीड़ा को खा लिया।
7. माँ कमरा मे बैठी है।
8. शीला प्याला मे चाय पीती है।
9. दादी अमड़ा का अचार पसन्द करती है।
10. बिचारा केला के छिलका पर फिसल गया।

अब इन वाक्यों को देखो।

1. बिल्ली का बच्चा गरम दूध नही पीता।
2. बिल्ली के बच्चे को गरम दूध मत दो।

पहले वाक्य मे 'बच्चा' शब्द के पहले परसर्ग 'का' आया है, बाद में नही। कोई परिवर्तन नही हुआ है।

दूसरे वाक्य मे 'बच्चा' शब्द के आगे 'के' परसर्ग के आने से 'बच्चा' आकारान्त पुलिंग संज्ञा एकारान्त तो हो गई, साथ-साथ पहले का सम्बन्ध-बोधक शब्द 'का' (पहले वाक्य में देखो) 'के' हो गया।

—तो इस तरह के वाक्य में आकारान्त पुलिंग संज्ञा के बाद परसर्ग के आने से "का' सम्बन्धबोधक शब्द मे भी परिवर्तन आता है, 'के' हो जाता है।

अभ्यास

इन वाक्यो को शुद्ध करके लिखो—

1. कोयल का घोंसला मे अण्डा है।
2. जनक का बस्ता मे कलम है।
3. मिठाई टीन का डिब्बा मे है।
4. पौधा की डाली मे तोता का खोता पर मैना बैठी है।
5. गरीब रोटी का टुकड़ा के लिए तरसता था।

अब इन वाक्यों को देखो :

1. सोने के कटोरे मे दूध भात है।

2. नाना के कमरे मे ताला है।

पहले वाक्य में, 'सोना' पुलिंग संज्ञा के साथ परसर्ग के आने से परिवर्तन हुआ है, सोने के हो गया है।

दूसरे वाक्य मे, 'नाना' पुलिंग संज्ञा के साथ परसर्ग आया है, पर परिवर्तन नही हुआ है ? बता सकते हो, क्यों ?

—तो नाना, पिता, दादा, भैया, महात्मा, मामा, बाबा, राजा, चाचा, दाता, कर्त्ता, विधाता, श्रोता, लाला और रिश्तेदारी के पुलिंग नाम के साथ परसर्ग के आने से परिवर्तन नहीं आता है ।

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

1. लड़का ने राजा के लिए फूल भेजा है।
2. दादा को लोटा मे जल देना।
3. चाचा ने चाची को चमचा में चटनी चटाई।
4. भैया ने पपीता का बीज बोया है।
5. इस नन्हा बच्चा को खाना खिला दो।
6. लडका का चाचा गन्ना का खेत मे काम करता है।
7. तुम्हारा भगिना ने मेरे कुत्ता को मारा।
8. हमने महात्मे का उपदेश सुना।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो—

1. मेरे जूते का फीता टूटा है।
2. मेरे काले जूते का फीता टूटा है।

पहले वाक्य में 'मेरा' शब्द जिससे 'जूते' का सम्बन्ध है, परसर्ग के आने से उसमे परिवर्तन आया है, 'मेरे' हो गया है।

दूसरे वाक्य मे 'काला' शब्द जो जूते की विशेषता (रंग) बताता है, उसमें भी परिवर्तन आया है, 'काले' हो गया है।

—तो, जो आकारान्त शब्द (सर्वनाम या विशेषण) परसर्ग के साथ आए और आकारान्त पुलिंग सज्ञा से सम्बन्ध रखता हो, उसमे भी परिवर्तन आता है—एकारान्त हो जाती है।

अभ्यास

1. मेरा कधा मे दर्द है ?
2. तेरा बटुआ में कितना पैसा है ?

3. तुम्हारा मुर्गा मेरा मुर्गा से नही लड़ सकता ।
4. आपका खबरा कुत्ता ने मेरा दुबला कुत्ता को काटा है ।
5. बछड़ा ने तोता से कहा, "माँ मेरा लिए थोड़ा दूध रखती है, ग्वाला का बेटा को सब दे देती है ।"
6. कछुआ ने मछुआ से कहा, "मैं तुम्हारा दादा का जमाना से इस पोखरा मे रहता हूँ, तू मुझे नही ठगेगा ।"
7. अन्धा ने लंगड़ा को कधा पर उठा लिया ।
8. हमारा चौरंगा पर देश को अभिमान है ।
9. मेरा गहरा नाला में स्नान मत करना ।
10. तुम्हारा मोटा बकरा ने मेरा खेत चर लिया ।

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा कारक के साथ

इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) भक्तगण शिव की प्रतिमा पर जल चढ़ाते है ।
(2) आज हमारी पाठशाला का वार्षिकोत्सव है ।

दोनों वाक्यों मे 'प्रतिमा' और 'पाठशाला' सज्ञाओ के साथ परसर्ग आये है, पर इनमें परिवर्तन नहीं आया है । तुम बता सकते हो, ऐसा क्यों हुआ है ? हाँ, इसलिए कि ये संज्ञाएँ आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाऐं है ।

—तो, आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से उनमे परिवर्तन नही आता ।

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

(1) मेरी आशे पर पानी फेर गया ।
(2) सरकार जनते का ख्याल रखती है ।
(3) उस महिले का बटुआ से कौञ्चोच निकला ।
(4) हमारी कक्षे मे चालीस छात्र है ।
(5) पक्षी पेड़ की शाखे पर बैठा था ।
(6) लीला की गुड़िये का हाथ टूट गया ।
(7) बकरा का गला में गेंदा को माला पहनाई गई ।
(8) बिल्ली ने चुहिये की पूंछ काट डाली ।
(9) नेवला ने चिड़िये का अण्डा खा लिया ।
(10) मुझे तुम्हारी मूर्खता पर तरस आता है ।
(11) अध्यापिके ने उसकी कविते की प्रशंसा की ।
(12) मैंने पत्रिके में आपका नाम देखा था ।

तुम जान गए

1. परसर्ग या कारक के आने से आकारान्त पुंलिग संज्ञाओं में रूपान्तर होता है।
2. संज्ञा के साथ सम्बन्ध रखने वाले सर्वनाम और विशेषण में भी रूपान्तर होता है।
3. राजा, नाना आदि रिश्तेदारों तथा पुरुष के नामों के साथ परसर्ग के आने से उनमें परिवर्तन नही होता है।
4. आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से उनमें परिवर्तन नही होता है।

याद रखो

(1) कुछ संज्ञाओं में लिंग के कारण परिवर्तन होता है।
(2) कुछ संज्ञाओं में परसर्ग के कारण परिवर्तन होता है।

अब आओ देखें, संज्ञाओं में वचन के कारण कैसा परिवर्तन आता है।

वचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) लड़का आ रहा है।
(2) लड़के को पानी दो।
(3) चार लड़के खड़े है।

पहले वाक्य में देखो, 'लड़का' संज्ञा का रूप साधारण है। आकारान्त है।

दूसरे वाक्य में देखो 'लड़का' संज्ञा में रूपान्तर क्यों हुआ है? परसर्ग 'को' के आने से न?

तीसरे वाक्य में देखो 'लड़का' संज्ञा में परिवर्तन क्यों हुआ है? 'चार' (बहुत) के बोध कराने के कारण न?

—तो, जब संज्ञाओं से बहुत (अनेक) का बोध होता है तो उनमें परिवर्तन आता है।

अब इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) एक लड़का खड़ा है।
(2) चार लड़के खड़े है।

पहले वाक्य में 'लड़का' से किस संख्या का बोध होता है? एक का न?

दूसरे वाक्य में 'लड़के' से किस संख्या का बोध होता है? एक से अधिक (अनेक) का बोध होता है न?

—तो, संज्ञा के जिस रूप से एक का बोध होता है, वह संज्ञा **एकवचन** में है। संज्ञा के जिस रूप से अनेक (बहुत) का बोध होता है वह संज्ञा **बहुवचन** में है।

नोट—आकारान्त पुलिंग संज्ञाएँ बहुवचन में एकारान्त हो जाती है।

जैसे—

एकवचन	बहुवचन
एक लड़का	अनेक लड़के
एक कुत्ता	अनेक कुत्ते
प्याला	प्याले

नोट—पापा, नाना, राजा आदि रिश्तेदारों और पुरुष के आकारान्त नाम बहुवचन में एकारान्त नही होते है।

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

1. पक्षी पेड़ पर **घोंसला** बनाते हैं।
2. बुलबुल **कीड़ा** खाती है।
3. नौकरानी **कमरा** साफ करती है।
4. मुर्गी **अण्डा** देती है।
5. गोपाल की माँ **बछड़ा** पालती है।
6. मौसी **बकरा** पालती है।
7. दीदी **दीया** जलाती है।
8. पिताजी **पैसा** गिनते है।
9. माताजी **कपड़ा** धोती है।
10. नाना **किस्सा** सुनाते है।

अब इन वाक्यों को पढ़ो।

1. नानी काला पिल्ला पालती है।
2. नानी काले पिल्ले पालती है।

पहले वाक्य में 'काला पिल्ला' से किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का बोध होता है न ?

दूसरे वाक्य मे 'काले पिल्ले' से बहुवचन का बोध होता है, है न ?

देखो 'पिल्ले' बहुवचन संज्ञा के साथ 'काला' विशेषण के रूप मे परिवर्तन हुआ है, 'काले' हुआ है।

—तो, बहुवचन संज्ञा के साथ आकारान्त विशेषण आने से, उस विशेषण में भी परिवर्तन आता है।

जैसे—

एकवचन	बहुवचन
काला पिल्ला	काले पिल्ले
छोटा पौधा	छोटे पौधे

अभ्यास

काले छापे शब्दों को बहुवचन में लिखो —

(1) दीदी पीला झगला पसन्द करती हैं।

(2) नाना ताजा पक्का पपीता लाये हैं।

(3) मामा हरा तोता खरीदकर लाये हैं।

(4) मामी लम्बा लहँगा पसन्द करती हैं।

(5) लीला चमकीला कपड़ा पहनती है।

अब इन वाक्यों को पढ़ो—

(अ) 1. नानी का काला पिल्ला भोला-भाला है।

2. नानी के काले पिल्ले भोले-भाले हैं।

पहले वाक्य में कौन-सा शब्द 'नानी' और 'काला पिल्ला' का सम्बन्ध बताता है? 'का' शब्द न? और कौन-सा शब्द सम्बन्ध का होना बताता है? 'है' क्रिया न?

दूसरे वाक्य मे देखो 'का' का रूप 'के' हुआ, और 'है' में अनुस्वार जोड़ा गया है। 'हैं' हुआ। यह क्यों हुआ? हाँ, इसलिए कि दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है।

—तो, बहुवचन मे 'का' 'के' हो जाता है और 'है' 'हैं' हो जाता है।

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

1. कप्तान का बगीचा हरा-भरा है।
2. अनार का छिलका कसैला है पर दाना मीठा है।
3. मिट्टी का केंचुआ लम्बा है।
4. रमेश का पैसा खोटा है।
5. शिकारी का कुत्ता दुबला नही है।

(ब) अब इन वाक्यों को देखो—

1. मेरा काला चूजा बैठा है।
2. मेरे काले चूजे बैठे हैं।

पहले वाक्य में 'मेरा' 'काला' 'चूजा' 'बैठा है', शब्दों के भेद बताओ। 'मेरा' सर्वनाम है 'काला' विशेषण है, 'चूजा' संज्ञा है, 'बैठा है', क्रिया है।

दूसरे वाक्य मे इन शब्दो के रूपो में क्या अन्तर हुआ है? क्यों? क्योंकि इस वाक्य से बहुवचन का बोध होता है। है न? और ये शब्द आकारान्त और पुलिंग हैं।

—तो बहुवचन में आकारान्त पुलिंग संज्ञा के साथ सम्बन्ध रखने वाले आकारान्त शब्दों मे भी परिवर्तन होता है।

अभ्यास

1. निम्न वाक्यों को बहुवचन में बदल कर लिखो—
   (1) मेरा नया जूता ढीला है।
   (2) तुम्हारा पुराना जोड़ा मैला है।
   (3) हमारा काला मुर्गा आँगन में बैठा है।
   (4) उनका छोटा बाजा गुम हो गया।
   (5) तेरा कपड़ा मैला हो गया।
   (6) आपका कमरा बड़ा है।
   (7) तेरा बटुआ पुराना है।
   (8) तोते का बच्चा प्यारा है।
   (9) मैना का अण्डा नीला-नीला है।

2. नीचे लिखे अंश को बहुवचन मे लिखो—

एक बजा है। बाजार का चौडा दरवाजा खुला है। बाहर-भीतर मेला लगा है। यहाँ सब्जीवाला है, वहाँ मिठाईवाला है। फलवाला, फूलवाला, दालपूरीवाला और चूड़ीवाला बाहर है, बनिया और शर्बतवाला भीतर है।

अब आओ आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन देखें।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. नानी एक भाषा बोलती है।
2. हम स्कूल मे तीन भाषाएँ सीखते है।

पहले वाक्य मे 'भाषा' सज्ञा किस वचन मे है? एकवचन मे है न? देखो 'भाषा' आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञा है।

दूसरे वाक्य मे बहुवचन में होने के कारण 'भाषा' संज्ञा मे क्या परिवर्तन हुआ है, 'भाषाएँ' हो गई है न? 'एँ' जोड़ा गया है।

—तो आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओं मे 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते है।

जैसे—	एकवचन		बहुवचन
	भाषा	—	भाषाएँ
	माला	—	मालाएँ
	कविता	—	कविताएँ

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

1. मौसा पेड़ की **शाखा** काटता है।
2. कवि जी **कविता** लिख रहे है।
3. गाँव-गाँव मे **पाठशाला** खुल रही है।

4. संज्ञा तीन तरह की होती है।
5. हमारे क्लब में प्रतियोगिता होती है।
6. पुराण में सुन्दर-सुन्दर कथा है।
7. इस कुंज पर रंग-बिरंगी लता फैली है।
8. हमारे समाज की महिला परिश्रमी है।
9. चिता जल जाती है, गाथा रह जाती है।
10. सभी विमाता बुरी नहीं होती है।
11. जलधारा समुद्र की ओर जाती है।
12. मन्दिर में देवी-देवताओं की प्रतिमा है।

याकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को देखो—

1. एक चिडिया बोल रही है।
2. अनेक चिड़ियाँ बोल रही है।

पहले वाक्य में 'चिडिया' संज्ञा से किस वचन का बोध होता है? एकवचन का न?

दूसरे वाक्य में 'चिडियाँ' संज्ञा से बहुवचन का बोध होता है। 'चिड़िया' शब्द में क्या रूपान्तर हुआ है? अन्तिम अक्षर पर चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाया गया है न?

तो 'चिड़िया' का बहुवचन 'चिड़ियाँ' है।

नोट—असल में 'चिड़िया' शब्द आकारान्त है, परन्तु इसको याकारान्त मानते है, और इसमे अन्य तरीके से बहुवचन बनता है।

—तो, याकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में केवल ' ँ ' अनुनासिक लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।

अन्य उदाहरण—

एकवचन	बहुवचन
गुड़िया	गुड़ियाँ
लालमुनिया	लालमुनियाँ

नोट—याकारान्त पुलिंग संज्ञाओं का बहुवचन आकारान्त पुलिंग संज्ञाओं की तरह होता है।

पहिया	पहिये (पहिए)
डाकिया	डाकिये (डाकिए)

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

(1) कमरे में टूटी खटिया पड़ी है।

(2) मोटी चुहिया धीरे-धीरे चलती है

(3) माँ मगातालाब में रुपैया फेंककर लुटिया भरती है।

(4) डिबिया घी से भरी है।

(5) वह कुटिया घास-फूस से बनी है

(6) दूर का पँवरिया द्वार पर खड़ा है।

(7) आज मेरा बनिया दुकान पर नहीं है।

(8) बहेलिया पक्षी को गुलेल से मार रहा है।

(9) मेरा रसोइया चला गया।

(10) डाकिया घर-घर चिठ्ठी देता है।

बहुवचन संज्ञाओं में परसर्ग के आने से और परिवर्तन।

आकारान्त पुलिंग संज्ञाएं

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. सभी बच्चे पास हुए हैं।
2. सभी बच्चों को इनाम मिलेंगे।

पहले वाक्य में किस वचन का बोध होता है? बहुवचन का न? और दूसरे वाक्य में भी बहुवचन का बोध होता है, है न?

सोचो और बताओ दूसरे वाक्य में 'बच्चे' क्यों 'बच्चों' हो गया?...... हाँ 'को' परसर्ग के आने के कारण से परिवर्तन हुआ है।

—तो, बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से और परिवर्तन आता है, 'ए' बदलकर 'ओं' लगाते हैं। जैसे—

एकवचन	बहुवचन
पत्ते	पत्तों पर
जूते	जूतों में
कछुए	कछुओं की

अभ्यास

बाईं ओर बहुवचन संज्ञाएँ हैं, दाईं ओर परसर्ग के साथ आए हैं उनमें उचित परिवर्तन करो—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
दीये,	इन दीयों में तेल नहीं है
घड़े,	मिट्टी के घड़े में पानी भरो।
पहिये,	साइकिल के पहिये के तार टूटे हैं।
कीड़े,	कीड़े के पर निकल आए है।
बटुए,	बटुए का दाम बढ़ गया है।

तकिये,	तुम तकिये पर सो जाओ।
मछुए,	मछुए ने जाल बिछाया
बकरे,	बकरे को घास-पानी दे दो।
झोंपडी,	झोंपड़े मे मैंने जीवन बिताया।
पत्ते,	पत्ते पर पानी की बूंदें है।

सर्वनामों और विशेषणो मे और विकार नहीं आता।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. तुम्हारे दुबले कुत्ते भौंकते नही।

2. तुम्हारे दुबले कुत्तों को खाना नही मिलता है क्या ?

पहले वाक्य में, 'तुम्हारे', 'दुबले' और 'कुत्ते' शब्दो के भेद बताओ 'तुम्हारे' सर्वनाम है, 'दुबले' विशेषण है, और 'कुत्ते' सज्ञा है। तीनो शब्द बहुवचन मे है, है न ? ठीक ! दूसरे वाक्य मे, 'को' परसर्ग के आने से किस शब्द में विकार आया है ? केवल सज्ञा शब्द 'कुत्ते' में न ? 'कुत्तों' हो गया है।

तो बहुवचन मे परिसर्ग के आने से केवल सज्ञा शब्द में परिवर्तन आता है।

अभ्यास

1. इन वाक्यो को बहुवचन में लिखो।

   1. सडा तखता पर बरतन मत रखो।
   2. मैला कपड़ा से सोया न करो।
   3. नाना सूखा पौधा को निकालता है।
   4. मोटा घोंघा ने पत्ता को खा लिया।
   5. पुसारी जलता अंगारा पर चलता है।

बहुवचन आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाएँ परसर्ग के साथ।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. ये लताएँ दूर तक फैली हैं।

2. इन लताओं पर सुन्दर फूल लगते है।

पहले वाक्य मे 'लताएँ' बहुवचन सज्ञा के साथ परसर्ग नही है।

दूसरे वाक्य में परसर्ग 'पर' के आने से 'लताएँ' मे क्या विकार हुआ है ? 'लताएँ', 'लताओं' हो गया है न।

—तो बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग के आने से 'एँ' के बदले 'ओं' लगाते है।

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यो को शुद्ध लिखो—

1. इन अप्सराएँ के पख सुन्दर है।

2. सज्ञाएँ मे लिंग, वचन और परसर्ग के कारण विकार आता है।

3. पक्षी पेड़ की शाखाएँ में घोंसले बनाते है ।

4. मजदूर ने लताएँ को जला दिया ।

5. चूहे गुफाएँ में रहते है ।

6. आपकी कविताएँ में लयात्मकता है ।

बहुवचन याकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ परसर्ग के साथ ।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. चिड़ियाँ खोंते बनाती हैं ।

2. चिड़ियों के खोते में अण्डे है ।

देखो, पहले वाक्य में, 'चिड़ियाँ' बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग नहीं है । दूसरे वाक्य मे 'के' परसर्ग के आने से 'चिड़ियाँ' शब्द 'चिड़ियों' हो गया है ।

—तो याकारान्त संज्ञाएँ बहुवचन में, परसर्ग के आने से (ँ) अनुनासिक के बदले 'ओं' लेती हैं ।

अभ्यास

1. निम्न वाक्यों को शुद्ध लिखो—

   1. मजदूर कुटियाँ में रहते थे ।
   2. सभी खटियाँ में पिसु हो गए है ।
   3. बिल्ली ने चुहियाँ को खा लिया ।
   4. इन डिबियाँ में फलों के रस है ।
   5. आज कमला और विमला की गुड़ियाँ की शादी है ।
   6. कल बुढ़ियाँ को पेन्सन मिलेगी ।

याद रखो

1. वचन दो है—एकवचन और बहुवचन ।

   एक वचन से एक का बोध होता है, बहुवचन से अनेक का ।

2. बहुचन में पुलिंग सर्वनाम, विशेषण और क्रिया मे भी परिवर्तन आता है ।

3. आकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओ में 'एँ' जोड़ कर बहुवचन बनाते हं ।

4. याकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं मे केवल ' ँ ' अनुनासिक लगाकर बहुवचन बनाते हैं ।

5. परसर्ग के आने पर आकारान्त स्त्रीलिंग और पुलिंग सज्ञाएँ दोनो बहुवचन में 'आंकारान्त' हो जाती है ।

तुम जान गए

1. संज्ञाओं मे लिंग के कारण परिवर्तन होता है ।

2. सज्ञाओं मे वचन के कारण परिवर्तन होता है ।

3. संज्ञाओं में परसर्ग के कारण परिवर्तन होता है।
आओ अब अकारान्त संज्ञाओं के बारे में सोचें।

अकारान्त पुलिंग संज्ञा

इन वाक्यों को पढ़ो—
1. वह नाना का नया घर है।
2. नाना के नये घर में दस कमरे हैं।

पहले वाक्य में किस वचन का बोध होता है? एकवचन का न? और दूसरे वाक्य में किस वचन का बोध है? बराबर एकवचन का ही न? ठीक। देखो, दूसरे वाक्य में कौन-सा परसर्ग शब्द आया है? 'में' परसर्ग शब्द न? 'घर' अकारान्त संज्ञा शब्द में क्या विकार आया है? कोई विकार नहीं आया, है न? पर, सम्बन्धबोधक शब्द 'का' और विशेषण शब्द 'नया' में विकार आया है।

तो एकवचन में अकारान्त संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से, उनमें कोई विकार नहीं आता, पर उनसे सम्बन्ध रखने वाले सर्वनाम सम्बन्धबोधक शब्द 'का' और विशेषण शब्दों में अवश्य विकार आता है। जैसे—

नया घर	—	नये घर में
मेरा आंगन	—	मेरे आंगन में
आपका मकान	—	आपके मकान पर

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध लिखो—
1. हमारा देश का मुख्य उद्योग चीनी है।
2. किसान हरा-भरा खेत में काम करते हैं।
3. आल्वेस का सूत से बोरे बनाते हैं।
4. लड़का तम्बाखू का खेत में कीड़े चुनता है।
5. साबुन का उद्योग में, जूतों का बड़ा कारखाना में, लोहा का कारखाना में, कपड़ा का धन्धा में और पशुपालना का क्षेत्र में हजारों को जीविका मिलती है।

अकारांत पुलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—
1. वहाँ एक बड़ा घर बनाया गया है।
2. वहाँ उनके बड़े-बड़े घर बनाए गए हैं।

पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है? एकवचन का न? दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है, है न? ठीक। किन शब्दों से यह बोध

होता है ? 'अनेक', 'वड़े-वड़े' और 'वनाए गए हैं' शब्दों से न ? पर, दूसरे वाक्य मे 'घर' संज्ञा शब्द को देखें, वहुवचन में विकार क्यों नही आया है ? हां इसलिए कि 'घर' संज्ञा शब्द पुलिंग है ।

तो अकारान्त पुलिंग सज्ञाओ में, वहुवचन मे कोई विकार नही आता । उसका वहुवचन उनके प्रयोग से मालूम होता है । अर्थात्, सर्वनाम, विशेपण और क्रिया शब्दो के रूपो से यह मालूम होता है ।

परन्तु

परसर्ग के आने से उनमें अवश्य परिवर्तन आता है ।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. वहाँ अनेक बड़े-वडे घर वनाए गए है ।

2. उन बड़े-बड़े घरों को खूब सजाया गया है ।

पहले वाक्य मे 'घर' संज्ञा शब्द वहुवचन मे है, पर उसके साथ परसर्ग नही है । दूसरे वाक्य मे देखो, 'को' परिसर्ग के आने से 'घरों' हो गया है ।

—तो कारक के आने से अकारान्त पुलिंग सज्ञाओं में अवश्य विकार आता है; उसमें 'ओ' जोड़ते है । जैसे—

वहुवचन	वहुवचन कारक के साथ
वड़े-वड़े घर	वड़े-वडे घरों में
छोटे-छोटे हाथ	छोटे-छोटे हाथो से
मेरे पैर	मेरे पैरों मे
आपका दांत	आपके दांतों से ।

अभ्यास

काले छपे शब्दों को वहुवचन मे लिखो—

1. नगरपालिकाएँ नगर का संचालन करती है ।
2. ग्राम परिषदें ग्राम मे देख-भाल करती है ।
3. विधान सभा में सारे कार्य पर विचार किया जाता है ।
4. लोगतंत्र राज्य मे प्रजा प्रधान होती है ।
5. लोकतंत्र देश में सभी नागरिक का हक वरावर है ।
6. सव कोई अपने-अपने कर्म से ऊँच पद को प्राप्त कर सकते है ।

अकरान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यो को पढो—

1. लीला एक नई पुस्तक लाई है ।

2. लीला की सारी पुस्तकें फट गई है ।

पहले वाक्य से किस वचन का वोध होता है ? एकवचन का वोध होता है

न ? 'पुस्तक' संज्ञा का रूप देखो, उसका लिंग क्या है ? स्त्रीलिंग है न ?

दूसरे वाक्य में देखो, 'पुस्तक' संज्ञा का क्या रूप हुआ है ? 'पुस्तकें' हुआ है न ? क्यों ? इसलिए कि इस वाक्य से बहुवचन का बोध होता है, और 'पुस्तक' का रूप 'पुस्तकें' हुआ है।

तो अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन 'ें' (एँ) जोड़कर बनाते हैं जैसे—

एकवचन		बहुवचन
पुस्तक	—	पुस्तकें
मेज़	—	मेजें
बात	—	बातें

अभ्यास

इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

1. अँधेरी रात कट गई, नई बहार आई है।
2. सूर्य की किरण फैल रही है।
3. बच्चे की आवाज सुनाई देती है।
4. पिल्ले की आँख खुल गई है।
5. आज दूकान बन्द है।
6. मौसी गाँव से खबर लाई हैं।
7. बरगद की जड़ दूर तक फैलती है।
8. हमारे देश में सोने की खान नहीं है।
9. तुम बात बना रहे हो।
10. बच्चा किताब लाया है।

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में, बहुवचन में परसर्ग के आने से और परिवर्तन।

1. लीला की सारी पुस्तकें फट गईं।
2. लीला की पुस्तकों में चित्र थे।

इन वाक्यों से किस वचन का बोध होता है ? बहुवचन का न ? पहले वाक्य में 'पुस्तकें' है, दूसरे वाक्य में इसका क्या रूप हुआ है ? क्यों ? इसलिए कि 'पुस्तकें' संज्ञा के साथ 'में' परसर्ग आया है न—

—तो अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में, बहुवचन में परसर्ग के आने से 'ें' (एँ) के बदले 'ों' (ओं) लगाते हैं। जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
मेजें	मेज़ों पर

रातें	रातों मे
बातें	बातो से

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध लिखो—

(1) आजकल सड़कें पर मोटरें का बहुत भय है।

(2) नाव नदी की धारें में बह गई।

(3) नाविक की उम्मीदें पर पानी फिर गया।

(4) पत्ते को सीचने की बजाय जड़ें को पानी दो।

(5) घोड़े और गधे की चाल मे फरक है।

(6) कछुओं अपनी सुस्त चाल के लिए मशहूर है।

(7) चित्रकार ने सभी कमरे को सजा दिया है।

(8) मेंढक अँधेरी रातें में टर्राते हैं।

(9) मेरी बातें को बुरा मत मानो।

(10) तुम अपना सभी दोस्त को बुला लाओ।

याद रखो

(1) अकारान्त पुलिंग सज्ञाओं का बहुवचन उनके प्रयोग से मालूम होता है, सर्वनामों, विशेषणों और क्रियाओं के रूप उनके वचन पहचानने मे सहायता करते हैं।

(2) अकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओं का बहुवचन 'एँ' जोड़कर बनाया जाता है।

(3) अकारान्त पुलिग-स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बहुवचन में परसर्ग के आने से (एँ) (ओं) ओकारान्त हो जाते है।

अब आओ ईकारान्त संज्ञाओं के बारे में सोचें, ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं

का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) मामी एक नीली साड़ी खरीदेगी।

(2) दूकानों मे तरह-तरह की साड़ियाँ मिलती है।

बताओ, पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का बोध होता है न ? 'साड़ी' सज्ञा शब्द स्त्रीलिंग है, और यह ईकारान्त है, है न ठीक ?

दूसरे वाक्य से किस वचन का बोध होता है ? बहुवचन का बोध होता है न ? 'साड़ी' का बहुवचन मे क्या रूप हुआ है ? 'साड़ियाँ' हुआ है न ? ठीक।

—तो बहुवचन मे ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में 'ई' (ी) बदलकर 'इयाँ'

लगाते है। अर्थात् दीर्घ (ई) (ी) को ह्रस्व 'इ' (ि) में बदल कर 'याँ' जोड़ते है।

एकवचन		बहुवचन
साड़ी	—	साड़ियाँ
लड़की	—	लड़कियाँ
मिठाई	—	मिठाइयाँ
सब्जी	—	सब्जियाँ

नोट—जिस शब्द के अन्त में दीर्घ 'ई' या उसकी मात्रा (ी) आती है, बहुवचन होने पर वह ह्रस्व 'इ' (ि) के रूप में बदल जाती है।

अभ्यास

इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

(1) नदी समुद्र की ओर जाती है।
(2) छोटी पगडंडी पहाड़ पर ले जाती है।
(3) मजदूर क्यारी बना रहा है।
(4) भाभी की चूड़ी लाल है।
(5) बाजार मे भाजी मिलती है।
(6) दीदी चिट्ठी लिख रही है।
(7) स्त्री सभा में नहीं आती है।
(8) लड़के की आँख पर पट्टी लगी है।
(9) माँ मिठाई बनाती है।
(10) गुलाब की पंखुड़ी झड़ती है।

परसर्ग के आने से ईकारान्त बहुवचन संज्ञाओं में और परिवर्तन।

इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) दूकानों में तरह-तरह की साड़ियाँ हैं।
(2) उन साड़ियों का दाम चढ़ गया है।

पहले वाक्य मे किस वचन का बोध होता है? बहुवचन का बोध होता है न? दूसरे वाक्य मे से भी बहुवचन का बोध होता है। है न? फिर 'साड़ियाँ' का रूप 'साड़ियों' क्यों हुआ है? हाँ, इसलिए कि दूसरे वाक्य में 'का' परसर्ग आया है।

तो ईकारान्त स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग के आने से 'इयाँ' बदलकर 'इयों' लगाते है। जैसे—

बहुवचन		बहुवचन परसर्ग के साथ
अनेक लड़कियाँ	—	अनेक लड़कियों ने

हरी चूड़ियाँ — हरी चूड़ियो से
सारी मिठाइयाँ — सारी मिठाइयों पर

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध लिखो—

(1) साड़ियाँ में सुनहरी किनारी लगी है।
(2) उसकी पसलियाँ पर पट्टी लगी है।
(3) दीदी की कलाइयाँ में लाल चूड़ी है।
(4) मामी की चोलियाँ में जड़ी लगी हुई है।
(5) बगुले ने मछलियाँ को ठग लिया था।
(6) बुराइयाँ से बचना चाहिए।
(7) रोगी को हड्डियाँ मे पीड़ा है।
(8) दूर से शहनाइयाँ की धुन आती है।
(9) पिचकारियाँ से रंग झरता है।
(10) राजा ने रानियाँ को बुलाया।

ईकारान्त पुलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

(1) चोंचा एक पीला पक्षी है।
(2) दोदो मोटे-मोटे पक्षी होते थे।

देखो पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है? एकवचन का बोध होता है न? 'पक्षी' संज्ञा शब्द पुलिंग है।

दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है, पर 'पक्षी' संज्ञा मे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। किन शब्दो से पता चलता है कि 'पक्षी' संज्ञा बहुवचन में है? 'मोटे-मोटे' विशेषण और क्रिया शब्द 'होते थे' के रूप से न?

—तो ईकारान्त पुलिंग संज्ञाओं का बहुवचन उनके प्रयोग से मालूम होता है। बहुवचन में उनमें विकार नही आता। जैसे—

एकवचन		बहुवचन
एक पक्षी	—	अनेक पक्षी
एक यात्री	—	अनेक यात्री
एक बढ़ई	—	अनेक बढ़ई

परन्तु ईकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से उनमें अवश्य परिवर्तन होता है।

इन वाक्यो को पढ़ो—

(1) दोदो मोटे-मोटे पक्षी होते थे।
(2) इन लोगों ने उन पक्षियो को मार डाला।

पहले वाक्य में 'पक्षी' बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग नहीं आया है। और उसमे विकार नही आया है। है न ?

दूसरे वाक्य में 'को' परसर्ग के आने से 'पक्षी' बहुवचन संज्ञा मे क्या परिवर्तन हुआ है ? 'पक्षियों' हुआ है न ?

तो ईकारान्त पुलिंग बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से दीर्घ 'ई' बदलकर 'इयों' लगाते हैं। जैसे—

बहुवचन		बहुवचन परसर्ग के साथ
सभी यात्री	—	सभी यात्रियों को
मेरे साथी	—	मेरे साथियों ने
पाँच बढ़ाई	—	पाँच बढ़इयों ने।

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध लिखो—

1. शहर में भिखारी की टोलियाँ घूमती हैं।
2. कुली पर भारी अत्याचार किया गया था।
3. पुलिस ने सभी जुआरी को गिरफ़्तार कर लिया।
4. औरत के गले मे मोती की दो लड़ी है।
5. दो कसाई से बकरों को खरीद लिया।
6. रोगी के लिए मनोरंजन कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है।
7. सभी तीर्थ यात्री को चाय-पानी दिया जाता है।
8. अध्यापक ने सभी विद्यार्थी से कहा, 'समय पर स्कूल आना चाहिए।'
9. उन सिपाही ने उन अधिकारी को सलामी दी।
10. सभी अपराधी को सज्जा मिलेगी।

याद रखो

1. हिन्दी मे अधिकतर ईकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती है।
2. पुरुष जाति का बोध करने वाली संज्ञाएँ पुलिंग होती है।

आओ इकारान्त संज्ञाओ का रूपान्तर देखो।

इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मंदिर में हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति है।
2. मंदिर मे देवी-देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियाँ है।

बताओ, पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का बोध होता है न ? 'मूर्ति' संज्ञा स्त्रीलिंग है।

दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है। है न ? बहुवचन मे 'मूर्ति'

संज्ञा का क्या रूप हुआ है ? 'मूर्तियाँ' हुआ है न ?

—तो बहुवचन में इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं में 'याँ' जोड़ते है, जैसे—

एकवचन		बहुवचन
एक कृति	—	अनेक कृतियाँ
एक जाति	—	अनेक जातियाँ

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो :

1. आजकल विश्व की **जाति** लड़ रही है ।
2. बचपन की **स्मृति** सुखद होती है ।
3. मनुष्य में एक **प्रवृत्ति** है ।
4. एक कलाकार की **कृति** प्रदर्शित है ।
5. गाँव में **समिति** लगाई जाती है ।
6. उस परिवार पर संसार की **विपत्ति** टूट पड़ी है ।
7. सरकार की **नीति** सशक्त है ।
8. संगमरमर की **मूर्ति** सुन्दर है ।

परसर्ग के आने से इकारान्त बहुवचन संज्ञाओं में और विकार ।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मन्दिर में अनेक **मूर्तियाँ** है ।
2. भक्तगण उन **मूर्तियों** पर पुष्प चढ़ाते है ।

पहले वाक्य में देखो 'मूर्तियाँ' बहुवचन संज्ञा में विकार नही आया है । दूसरे वाक्य में 'मूर्तियाँ' संज्ञा में विकार आया है, क्यो ? इसीलिए कि 'पर' परसर्ग आया है, उसका रूप 'मूर्तियों' हुआ है ।

—तो इकारान्त स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से 'याँ' के बदले 'यों' लगाते है । जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
मूर्तियाँ	मूर्तियों पर
त्रुटियाँ	त्रुटियों को

अभ्यास

काले छपे शब्दो को बहुवचन मे लिखो—

(1) मुझे अपनी **त्रुटियाँ** पर दुख है ।
(2) दूसरों की **कृतियाँ** से खुश होना चाहिए ।
(3) यहाँ पूरब और पश्चिम की **संस्कृतियाँ** का मेल है ।
(4) सब समिति अपनी-अपनी **नीतियाँ** पर चलती है ।

(5) दुष्ट बेटे ने पिता की **सम्पतियाँ** को लुटा दिया।
(6) बड़ों की उक्तियाँ पर विश्वास करो।
(7) कभी-कभी प्रभु प्रवृत्ति मनुष्य **प्रवृतियाँ** पर विजय पाती है।
(8) महिला को भी **समितियाँ** में आना-जाना चाहिए।
(9) सभी जातियाँ ने मिलकर नीति बनाई है।
(10) कलाकार **मूर्तियाँ** पर रग चढ़ाता है।

इकरान्त पुलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

(1) उत्सव मे एक प्रतिनिधि आया था।
(2) उत्सव मे अनेक **प्रतिनिधि** आए थे।

पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है? एकवचन का न? देखो प्रतिनिधि पुलिंग संज्ञा है।

दूसरे वाक्य में वहुवचन का बोध होता है। 'प्रतिनिधि' संज्ञा में क्या विकार आया है? कोई विकार नही आया है न?

—तो इकरान्त पुलिग सज्ञाओं में वहुवचन में कोई विकार नही आता है, और उनका बहुवचन उनके प्रयोग से मालूम होता है।

परन्तु, बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से, उनमे अवश्य विकार आता है।

इन वाक्यों को पढो—

1. प्रत्येक जिले के तीन-तीन प्रतिनिधि आए है।
2. हम उन प्रतिनिधियों का हृदय से स्वागत करते है।

पहले वाक्य में 'प्रतिनिधि' सज्ञा, जो वहुवचन मे प्रयोग हुआ है, उसमे परिवर्तन नही हुआ है, है न?

दूसरे वाक्य में 'प्रतिनिधि' संज्ञा में क्या परिवर्तन हुआ है? उसके साथ 'का' परसर्ग आया है, और उसका रूप 'प्रतिनिधियों' हुआ है।

—तो इकरान्त वहुवचन पुलिग सज्ञा के साथ परसर्ग के आने से 'यों' जोडते हैं। जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
तीन प्रतिनिधि	तीन प्रतिनिधियों का
राष्ट्रपति	राष्ट्रपतियों की

नोट—हिन्दी मे इकारान्त पुलिग सज्ञा विरले है।

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन मे लिखो—

(1) देश मे **पूंजीपति** की आवश्यकता है।

(2) स्वतन्त्र देशों के सभापति की बैठक होगी ।

(3) आज गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति का जुटाव है ।

(4) सभी सभा के सभापति को आमन्त्रण दिया गया है ।

(5) करोड़पति के भारी-भारी धन्धे चलते है ।

(6) अयोग्य सभापति से अच्छी देखभाल नही होती ।

(7) राक्षस ऋषि के यज्ञ मे विघ्न डालते थे ।

आओ ऊकारान्त संज्ञाओं का रूपान्तर देखे ।

ऊकारान्त पुलिंग सज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन ने एक लड्डू खाया ।

2. मोहन ने सात लड्डू खाए ।

पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का न ? 'लड्डू' संज्ञा पुलिग है ।

दूसरे वाक्य मे किस वचन का बोध होता है ? बहुवचन का बोध होता है न ?

—तो बहुवचन में अकारान्त पुलिग सज्ञाओं में कोई परिवर्तन नही आता । परन्तु परसर्ग के आने से उनमे अवश्य परिवर्तन आता है ।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन ने सात लड्डू खाये ।

2. मोहन ने बाकी लड्डुओं को फेंक दिया ।

पहले वाक्य मे 'लड्डू' संज्ञा के साथ परसर्ग नही आया है, और उसमे विकार नही आया है ।

दूसरे वाक्य मे विकार आया है । कैसा विकार आया है ? क्यों ? हाँ लड्डू', 'लड्डुओं' हो गया है । दीर्घ 'ऊ' ह्रस्व 'उ' मे बदल गया है और 'ओं' जोड़ा गया है । इसलिए कि 'को' परसर्ग आया है ।

तो ऊकारान्त पुलिग सज्ञाओं के साथ, परसर्ग के आने से दीर्घ 'ऊ' (ू) बदलकर 'उओं' लगाते है । जैसे—

एकवचन	बहुवचन
दो टट्टू	दो टट्टुओं पर
पडितों के जनेऊ	पडितों के जनेउओं को

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

(1) पुलिस ने डाकू को पकड़ लिया ।

(2) धोबी टट्टू पर मोटरी लाद रहा है ।

(3) जुगनू की चमक से क्यारी सुशोभित है ।

(4) हिन्दू को अपनी भाषा सीखनी चाहिए ।

(5) नाविक चप्पू से नाव चलाता है ।

(6) लट्टू खेलने के लिए डोरी और डण्डा चाहिए ।

(7) मेरी हँसी मत देखो, दिल के आँसू को देखो ।

(8) तूफान पीड़ित लोगों को तम्बू में रखा गया ।

(9) घुंघरू का मोल बढ़ गया है ।

(10) माताजी ने भालू का नाच देखा है ।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. भिखारिन के कपड़े पर एक जूं चलती थी ।

2. भिखारिन के बालों में जुएँ थी ।

पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का न ? 'जूं' स्त्रीलिंग संज्ञा है ।

दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है । 'जूं' संज्ञा का क्या रूप हुआ है ? 'जुएँ' हो गया, है न ?

—तो ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन दीर्घ 'ऊ' (ू) बदलकर 'उएँ' (ु एँ) जोड़कर बनता है । अर्थात् दीर्घ 'ऊ' को ह्रस्व 'उ' में बदलकर 'एँ' जोड़ते हैं । जैसे—

एकवचन	बहुवचन
एक जूं	बहुत जुएँ
एक गऊ	अनेक गउएँ

और बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग के आने से उनमें और परिवर्तन आता है ।

इन वाक्यों को पढो—

(1) भिखारिन के बालों में जुएँ थी ।

(2) जुओं को मारने के लिए उसने दवाई लगाई थी ।

पहले वाक्य में 'जुएँ' बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग नहीं आया है, है न ? ठीक ।

दूसरे वाक्य में 'को' परसर्ग के आने से क्या विकार आया है ? 'जुएँ' 'जुओं' हो गया है न । 'एँ' बदलकर 'ओं' लगाया गया है ।

—तो, ऊकारान्त स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञाओं के साथ परसर्ग के आने से 'उएँ'

वदलकर 'उओ' लगाते हैं। अर्थात् 'ऐं' वदलकर 'ओं' लगाते है। जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
जुंएँ	जुंओ को
गउएं	गउओ के लिए

अभ्यास

इन वाक्यों को वहुवचन में लिखो—

(1) श्री कृष्ण जी गऊ चराते थे।
(2) राधा गऊ के दूध से मक्खन निकालती थी।
(3) वच्चे के सिर में जूं भर गया है।
(4) भरत ने राम की खड़ाऊँ ले ली थी।
(5) कसाई ने अपने चाकू को चोखा कर लिया।
(6) नर्तकी ने घुंघरू को खोल दिया।
(7) वहन दाऊ को राखी वांध रही है।
(8) गाँव में टट्टू की गाड़ी है।

आओ अव उकारान्त सज्ञाओं के वारे मे सोचें।

उकारान्त पुलिंग संज्ञाओं का वहुवचन

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. पलंग पर एक नन्हा शिशु सोया है।
2. अस्पताल मे अनेक नन्हे-नन्हे शिशु सोए थे।

पहले वाक्य से किस वचन का वोध होता है? एकवचन का न? 'शिशु' संज्ञा पुलिंग है।

दूसरे वाक्य से वहुवचन का वोध होता है, है न? फिर, वहुवचन मे 'शिशु' संज्ञा में क्या विकार आया है? कोई विकार नही आया है न?

—तो वहुवचन में, उकारान्त पुलिंग सज्ञाओं मे कोई विकार नही आता।

परन्तु परसर्ग के आने से उनमें अवश्य परिवर्तन आता है

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. अस्पताल मे अनेक नन्हे-नन्हे शिशु सोए थे।
2. एक नर्स उन शिशुओं की देखभाल करती है।

देखो, पहले वाक्य मे वहुवचन संज्ञा, 'शिशु' में कोई विकार नहीं आया है, है न?

दूसरे वाक्य में परसर्ग 'की' के आने से विकार आया है 'शिशुओं' हो गया है।

—तो उकारान्त पुलिंग बहुवचन संज्ञा के साथ परसर्ग के आने से 'ओं' जोड़ते है। जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
सभी पशु	सभी पशुओं को
अनेक साधु	अनेक साधुओं ने

अभ्यास

काले छपे शब्दो को बहुवचन मे लिखो—

(1) हमने शत्रु को मार भगाया।
(2) शहर में भिक्षु का ताँता लगा रहता है।
(3) राम और लक्ष्मण ने रिपु को छिन-भिन्न कर दिया।
(4) बिछड़े बन्धु को गले लगा लो।
(5) हिन्दमहासागर मे जलदस्यु का पहरा लगा था।
(6) जलजन्तु के रंग-रूप अनोखे है।
(7) क्या तुम जंगली पशु के नाम बता सकते हो?
(8) तरु की चोटी पर सूर्य की किरण फैल गई थी।
(9) हमारी शिक्षा गुरु पर निर्भर है।
(10) तुम उन साधु और महात्मा का सत्कार करो।

उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन

इन वाक्यों को पढो—

1. ग्रीष्म ऋतु सुहावनी होती है।
2. हमारे देश मे दो ऋतुएँ है।

बताओ, पहले वाक्य से किस वचन का बोध होता है? एकवचन का बोध होता है न? 'ऋतु' स्त्रीलिंग है।

दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है। 'ऋतु' संज्ञा मे क्या विकार आया है? 'ऋतुएँ' हो गई है न?

—तो बहुवचन मे उकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञाओं में 'एँ' जोड़ते है।

और परसर्ग के आने से उनके बहुवचन के रूप मे 'एँ' के बदले 'ओं' जोड़ते हैं, जैसे—

एकवचन	बहुवचन
एक ऋतु	चार ऋतुएँ
एक धातु	अनेक धातुएँ

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
चार ऋतुएँ	ऋतुओं मे

नोट—हिन्दी में बहुत कम उकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाएँ हैं ।

अभ्यास

इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

(1) दोनों ऋतु में, मुझे हेमन्त पसन्द है ।
(2) वर और वधू की आयु में थोड़ा अन्तर चाहिए ।
(3) तुम सभी भिक्षु को दान दे दो ।
(4) भरत राम की खडाऊँ पर फूल चढाते थे ।
(5) यूरोप मे चार ऋतु है और भारत मे छः ।
(6) हमारे देशाधिकारी जलजन्तु की रक्षा करते हैं ।
(7) तुम्हारे अनेक शत्रु हैं, उन शत्रु को कमजोर मत समझो ।
(8) हम गउओं को माता मानते हैं, तुम गऊ की रक्षा करो ।
(9) पिताजी अनेक वस्तु लाए थे ।
(10) धातु के दाम बढ़ गए हैं ।

अब आओ एक साथ एकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त सज्ञाओ के बारे में सोचें ।

हिन्दी में इन वर्गों की संज्ञाएँ विरले है । इनका प्रयोग भी कम होता है ।

1. एकारान्त संज्ञाएँ—चौबे, दुबे ।
   इनका प्रयोग नही के बराबर होता है ।
2. ओकारान्त सज्ञाएँ—ऊधो, माधो, केशो
   इन संज्ञाओं का प्रयोग भी नही दिखाई देता है ।
3. औकारान्त सज्ञाएँ—जौ, पौ, सौ, नौ, रौ, लौ

इन संज्ञाओ का प्रयोग होता है, परन्तु एकवचन मे अधिकतर । और, यदि इनको बहुवचन मे प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ जाय, तो इनके साथ परसर्ग के आने पर ही, इनमें विकार आता है । जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
जौ	जौओं को
सौ	सौओं मे
माधो	माधोओं को
चौबे	चौबों को

नोट—पौ, रौ, लौ, आदि वस्तुओं की गिनती नही हो सकती है; बहुवचन उन्ही वस्तुओ के नामों मे लगता है जिनकी गिनती हो पाती है ।

हम मनुष्यों, पशुओ, पक्षियों और वस्तुओं को गिन सकते है । जैसे—एक लड़का, चार बैल, लालमुनियाँ, दस मेजें आदि आदि, परन्तु, मित्रता, सुन्दरता,

पशुता, ममता आदि भाव, गुण, दोष, प्यार का बोध करने वाली संज्ञाओं में बहुवचन नही लगाते है क्योंकि हम इनकी गिनती नही कर सकते हैं।

याद रखो

1. संज्ञाओं मे लिंग, वचन और परसर्ग के कारण विकार आता है।
2. भिन्न-भिन्न वर्गों (अकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त) की संज्ञाओं में भिन्न-भिन्न रूपों से विकार आता है।

तुम जान गए

1. संज्ञा क्या है।
2. लिंग, वचन क्या है।
3. परसर्ग कैसे शब्दों को कहते हैं।
4. संज्ञाओं में विकार क्यों आता है।
5. सज्ञा विकारी शब्द है।

सर्वनामों का रूपान्तर

तुम जानते हो

जो शब्द संज्ञाओं की जगह पर प्रयोग होते है उनको सर्वनाम कहते हैं। मैं, तू, यह, वह, हम, तुम, ये, वे, आप आदि सर्वनाम हैं। सर्वनाम विकारी शब्द है। उनके रूपों में कई कारणों से विकार आता है।

ध्यान से पढ़ो

1. जो कोई बोलता है, लिखता है वह अपने लिए—मैं मेरा मुझे आदि सर्वनामों का प्रयोग करता है।

2. जो सुनता है या जिसके साथ बोला जाता है उसके लिए तू, तुम, तेरा, तुझे, तुम्हे आदि का प्रयोग करते हैं।

3. हम जिस व्यक्ति, वस्तु या विषय के बारे मे बोलते है, बातें करते है, उसके लिए, यह वह, ये, वे प्रयोग करते हैं।

तो,

1. जो बोलता है वह 'उत्तम पुरुष' है। उत्तम पुरुष को 'प्रथम पुरुष' भी कहते हैं—मै, हम।

2. जिसके साथ बोला जाता है वह 'मध्यम पुरुष' है। मध्यम पुरुष को द्वितीय पुरुष भी कहते हैं—तू, तुम, आप।

3. जिसके बारे में बोला जाता है, वह अन्य पुरुष है। अन्य पुरुष के लिए यह, वह, ये, वे आदि का प्रयोग करते है।

प्रथम पुरुष का रूपान्तर सर्वनामों में वचन और परसर्ग के कारण रूपान्तर

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन कहता है—'मैं पाठशाला जाता हूँ, मुझको मत रोको।
2. मोहन और रमेश कहते है—हम पाठशाला जाते है, हमको मत रोको।

पहले वाक्य में एक व्यक्ति है, मोहन। बोलते हुए वह अपने लिए किस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करता है? 'मैं' और 'मुझको' का प्रयोग करता है न? 'मैं' और 'मुझको से एकवचन का बोध होता है।

दूसरे वाक्य में कितने व्यक्ति बोल रहे है। दो व्यक्ति न? बोलते हुए वे अपने लिए 'हम' और 'हमको' प्रयोग कर रहे है। 'हम' और 'हमको' से किस वचन का बोध होता है? बहुवचन का बोध होता है, है न?

—तो 'मैं' का बहुवचन 'हम' है। परसर्ग के आने से देखो इनमें कैसा विकार आता है।

एकवचन	बहुवचन
मैं, मैंने	हम, हमको
मुझे, मुझको	हमें, हमको
मुझसे	हमसे
मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
मेरे लिए	हमारे लिए
मुझमें	हममें
मुझपर	हमपर

नोट—'मेरा' और 'हमारा' विशेषणों की तरह प्रयोग होते है। इनमें संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन आता है।

अभ्यास

इन वाक्यों को, अन्त में दिए गए सर्वनामों के उचित रूप से पूरा करो।

1. अध्यापक—पढ़ाते है। (हम)
2. माताजी—पैसे देती हैं। (मैं)
3. आप—गउओं को सानी-पानी दे सकते हैं। (हम)
4. —भारी भूल हुई है,—क्षमा कीजिए। (मैं)
5. मोहन और रमेश ने कहा—'—भाई डाक्टर बनेगा।' (हम)
6. दीदी—लिए चाय बनाती है। (हम)
7. अंधे ने कहा—'—पर दया करो,—बेबस हूँ।' (मैं)
8. —देश में शान्ति है। (हम)

मध्यम पुरुष का रूपान्तर

इन वाक्यों को पढ़ो—

बड़े भाई छोटे, भाई मोहन से बतियाते हैं।

बड़े भाई—तू खेल में बहुत समय देता है। इसलिए तू कुछ नही जानता है।

मोहन—तुम भी तो खेलते हो, भैया।

बड़े भाई—मै अभी खेलता हूँ। पहले, जितना समय खेलने मे लगता था, उससे अधिक पढने मे लगाता था। तेरी उम्र तो पढ़ने की है, तू तो खेलना अधिक पसन्द करता है। खेला कर, देखता हूँ तू क्या बनेगा।

मोहन—सॉरी भैया! मैं भी पढूँगा। तुम तो टीचर हो न! देख लेना मैं तुम्हारा हेडमास्टर बनूँगा।

बड़े भाई—एव अस्तु!

मोहन—क्या तुम्हें षाक है?

बड़े भाई—नही! बिलकुल नही।

इस बातचीत मे बड़े भाई ने बोलते समय किन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया है? 'तू' 'तेरी' का प्रयोग किया है, है न? और मोहन ने अपने बड़े भाई के लिए 'तुम' 'तुम्हारा' 'तुम्हे' का प्रयोग किया है, ठीक।

—तो बड़े लोग अपने से छोटे लोगों से बोलते समय 'तू' 'तेरा' 'तुझे' आदि का प्रयोग करते है, और छोटे लोग प्यार से अपने भाई, मित्र आदि को 'तुम' 'तुम्हारा' 'तुम्हे' से सम्बोधित करते है।

नोट—1. अपने साथियों के लिए भी 'तुम' का प्रयोग करते है।

2. प्रार्थना में, भगवान के लिए कभी-कभी 'तू' का प्रयोग करते हैं।

अब इन वाक्यों को पढ़ो—

सभी बच्चे कक्षा मे है। अध्यापक सबसे बात कर रहे हैं।

मास्टरजी—मै पाठ पढ़ाता हूँ। तुम ध्यान से सुनो।

विद्यार्थी—आप किस पृष्ठ पर पढ़ने जा रहे है, मास्टरजी?

मास्टरजी—तुम्हारा मन कहाँ है! पृष्ठ दस पर!

मास्टरजी सभी बच्चों की जगह पर किन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हैं? 'तुम' 'तुम्हारा' का प्रयोग करते हैं न? यहाँ इन सर्वनामों से बहुवचन का बोध होता है।

सभी विद्यार्थी मास्टरजी के स्थान पर किस सर्वनाम शब्द का प्रयोग करते है? 'आप' का प्रयोग करते है न? क्यों? वे 'तू' का प्रयोग भी कर सकते थे। हाँ, इसलिए कि बच्चे अपने अध्यापक का आदर करते हैं।

—तो 'आप' आदरसूचक सर्वनाम है। हम अपने गुरुजनों और बड़ों से बोलते समय, उनको 'आप' से सम्बोधित करते है।

'तू' और 'तुम' का रूपान्तर

एकवचन	बहुवचन
तू, तूने	तुम, तुमने
तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
तुझसे	तुमसे
तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
तेरे लिए	तुम्हारे लिए
तुझ में	तुम में
तुझ पर	तुम पर
आप	आप, आपने, आपको आपका, आपकी, आपके, आपके लिए, आप में, आप पर

नोट—'आप' बहुवचन में प्रयोग होता है।

'तू' का प्रयोग कम होता है, हम अधिकतर, चाहे एकवचन या बहुवचन में 'तुम' ही का प्रयोग करते हैं। 'तेरा' 'तुम्हारा और 'आपका' विशेषणों की तरह प्रयोग होते हैं संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं।

अभ्यास

इन वाक्यों को पूरा करो—

1. मौसी ने पूछा, '—क्या नाम है ?' (तू)
2. रमेश ने अपनी बहन से पूछा, '—क्या लाई हो ?' (तुम)
3. भगवान मैं—से दया की भीख माँगता हूँ—दयालु है। (तू)
4. मुन्नी ने माताजी से पूछा, 'पिताजी ने—क्या दिया ?' (आप)
5. अध्यापक ने बच्चों से कहा, '—ध्यान लगाकर पढना चाहिए।' (तुम)
6. राम ने पिताजी से कहा, 'पिताजी——क्या लाएँगे ?' (आप) (मैं)
7. लीला ने नाना से पूछा, 'नानाजी—मुँह में दाँत क्यो नही है ?' (आप)
8. —कहाँ छिपे हो, बाहर आ जाओ,—मिठाई दूँगा। (तुम)

'वह' अन्य पुरुष का रूपान्तर

इन वाक्यों को पढ़ो—

मोहन और रमेश बातें करते है।

मोहन—मेरे घर मुन्ना आया है।

रमेश—अच्छा, वह कैसा है ?

मोहन—वह मोटा और गठीला है, उसका नाम दारासिंह रखा है।

रमेश—फिर उसको पहलवान बनना पड़ेगा। मेरे घर भी दो छोटी-छोटी बहनें हैं।

मोहन—वे कैसी हैं ?

रमेश—भाई, कुछ मत पूछो, एक पतली-सी है और एक कुछ देहगर। वे आपस में लड़ती ही रहती है। एक बोलती है—'तू मच्छर है !' दूसरी बोलती है—'तू टुनटुन है।'

मोहन—उनको सुनकर बड़ा मजा आता होगा !

रमेश—मजा ! हंगामा मचा रहता है। उन्हें रोकना बहुत कठिन है।

1. ऊपर के वाक्यों में 'मुन्ना' संज्ञा शब्द के स्थान पर किस सर्वनाम शब्द का प्रयोग हुआ है ? वह, उसका और 'उसको' का प्रयोग हुआ है न ? देखो, इन सर्वनाम शब्दों से एकवचन का बोध होता है।

2. अब ढूंढकर बताओ 'बहनें' की जगह पर किन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया गया है। 'वे' 'उनको' 'उन्हें' सर्वनामों का न ? इन सर्वनामों से किस वचन का बोध होता है ? बहुवचन का बोध होता है न ?

—तो 'वह' 'उसको' आदि सर्वनामों से एकवचन का बोध होता है और 'वे' 'उनको' आदि से बहुवचन का बोध होता है।

'यह' और 'ये' का रूपान्तर

इन वाक्यों को पढ़ो—

दो यात्री बस-स्टाप पर बातें कर रहे है।

पहला यात्री—लाल बस कहाँ जाती है और नीली बसें कहाँ जाती हैं ?

दूसरा यात्री—यह रोजहील जाती है और ये वाक्वा जाती है।

दूसरे यात्री ने 'लाल बस' की जगह पर किस सर्वनाम शब्द का प्रयोग किया है ? 'यह' सर्वनाम का न ? 'यह' सर्वनाम से किस का बोध होता है ? एक वचन का बोध होता है न ? फिर 'नीली बसें' की जगह पर किस सर्वनाम का प्रयोग किया है ? 'ये' का न ? 'ये' सर्वनाम शब्द से किस वचन का बोध होता है ? बहुवचन का बोध होता है न ?

—तो 'यह' एकवचन संज्ञा की जगह पर प्रयोग करते है और 'ये' बहुवचन संज्ञा की जगह पर प्रयोग करते है।

नोट—'यह' और 'ये' निकट की वस्तुओं का संकेत करते हैं और 'वह' और 'वे' दूर की वस्तुओं का संकेत करते हैं।

इन्हें समझिए—

एकवचन	वचन
यह, इसने	
इसे, इसको	
इसका, इसकी, इसके	

इसके लिए	इनके लिए
इसमें	इनमें
इस पर	इन पर

नोट—'इसका' और 'इनका' विशेषणों की तरह प्रयोग होते है, इनमें संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है।

अभ्यास

खाली जगहों को सर्वनामो के उचित रूप से पूरा करो—

1. यह सिंह है—पजे मजबूत है। (यह)
2. कौवे काले हैं—रंग मुझे नही भाता। (ये)
3. ये चूजे हैं,—खाने को दे दो। (ये)
4. ये लड़के है,—पर चोरी का इल्जाम लगाया गया है। (ये)
5. ये बच्चे बीमार है,—अस्पताल ले जाओ। (ये)
6. ये आ गए,—ही बाग मे प्रवेश किया था। (ये)
7. बिल्लियाँ—बच्चे भोले-भाले होते हैं। (ये)
8. आपके बच्चे हैं, आप—स्कूल नही भेजते है। (ये)

'वह' और 'वे' का रूपान्तर

एकवचन	बहुवचन
वह, उसने	वे, उन्होने
उसे, उसको	उन्हे, उनको
उसका, उसकी, उसके	उनका, उनकी, उनके
उसके लिए	उनके लिए
उसमे	उनमें
उस पर	उन पर

नोट—'उसका' और 'उनका' विशेषणों की तरह प्रयोग होते हैं और उनमे संज्ञाओं के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है।

अभ्यास

खाली जगहों में सर्वनामों के उचित रूप लिखो—

1. मुन्ना प्यासा है,—दूध पिला दो। (वह)
2. तुम्हारे कुत्ते लड़ते हैं,—अलग-अलग बाँध दो। (वे)
3. नाना खेत गया है,—खाना भेजना है। (वे)
4. डिब्बों मे पैसे हैं,—अलमारी मे रख दो। (वे)
5. नानीजी आई हैं,—फल दिया है। (वे)

6. बच्चे भूखे हैं,—भोजन ला दो। (वे)
7. —बहनों ने पत्र भेजे है,—उत्तर देना है। (तुम) (वे)
8. मेरे मित्र आए हैं,— —बुलाया है। (वे) (मैं)
9. तुम्हारा साथी चला गया——एक पत्र छोड़ा है। (वे) (तुम)
10. डाक्टर ने—दवाई भेजी है। (आप)

'कुछ' और 'कोई' सर्वनाम शब्द

इन वाक्यो को पढो—

1. बाबू मुह चला रहा है, उसके मुंह में कुछ है।
2. कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है, जाकर देख आओ।

पहले वाक्य में 'कुछ' शब्द से किस वस्तु का बोध होता है ? एक वस्तु का बोध होता है, पर वह अनिश्चित है।

दूसरे वाक्य में 'कोई' शब्द से किसी व्यक्ति का बोध होता है। पर क्या यह निश्चित है कि वह व्यक्ति कौन है ? निश्चित नही है न ?

—तो हम 'कुछ' सर्वनाम शब्द, किसी एक अनिश्चित वस्तु की जगह पर प्रयोग करते है और 'कोई' सर्वनाम शब्द, किसी एक अनिश्चित व्यक्ति की जगह पर प्रयोग करते है।

'कोई' सर्वनाम शब्द का रूपान्तर

कोई, किसी ने

किसी का, किसी को, किसी के, किसी के लिए, किसी में, किसी पर।

अभ्यास

खाली जगहों को सर्वनामों के उचित रूप से पूरा करो।

1. हम गरीब हैं पर···धन की इच्छा नही करते। (कोई)
2. मुझे चोट लगी,···पत्थर फेंका था। (कोई)
3. तुम ··फल लाए हो ? (कोई)
4. वहाँ धुआं उठा है···घर जलता होगा। (कोई)
5. बच्चे अभी तक नही आए,···देखने के लिए···भेजो। (वे) (कोई)
6. पुस्तकें फट गईं,·· साट दो। (ये)
7. ···जवानी में खूब काम किया था। (ये)
8. ताला टूटा है,···पता चलता है,···आया था। (यह) (कोई)
9. बैठो,···चाय लाता हूँ। (तुम)
10. आप·· क्यों लाए हैं, ये छोटे हैं। (ये)

'कौन' और 'क्या' सर्वनाम शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. कौन फल लाया था ?

2. भैया ने पत्र में क्या लिखा है ?

पहले वाक्य में देखो, 'कौन' शब्द का प्रयोग किसलिए हुआ है ? प्रश्न करने के लिए और कुछ जानने के लिए। किस के बारे में ? एक व्यक्ति के बारे में जानने के लिए।

दूसरे वाक्य मे 'क्या' शब्द का प्रयोग किसलिए हुआ है ? यहां भी एक प्रश्न करने के लिए और कुछ जानने के लिए। किसके बारे मे ? हां, इस बार किसी वस्तु या विषय के बारे में जानने के लिए।

—तो 'कौन' और 'क्या' ऐसे सर्वनाम शब्द है, जो प्रश्न करने के लिए प्रयोग करते हैं, 'कौन' व्यक्ति के बारे में मालूम कराता है और 'क्या' वस्तु या विषय के बारे में। कभी-कभी कोई वस्तु-विशेष के बारे मे जानने के लिए, कौन-सा, कौन-से, कौन-सी का भी प्रयोग करते है. जैसे—यह कौन-सा फूल है ? कौन-सी बात है ?

नोट—जब प्रश्न करते है तो वाक्य के अन्त मे प्रश्नसूचक चिह्न (?) लगाते है।

'कौन' और 'क्या' का रूपान्तर

एकवचन	बहुवचन
कौन, किसने	कौन, किन्होंने
किसको, किसे	किनको, किन्हें
किसका, किसकी, किसके	किनका, किनकी, किनके
किस के लिए, किस से	किन के लिए, किन से
किस में	किन में
किस पर	किन पर

क्या दोनों वचनों में

क्या
काहे
काहे को

अभ्यास

खाली जगहों को सर्वनामों के उचित रूप से पूरा करो—

1. बाहर देखो…आया है। (कौन)
2. …घण्टी बजाई देख आओ। (कौन)
3. सभी मेरे बच्चे हैं…पास न जाऊं ! (कौन)
4. …ने…लोगों पर पानी फेंका। (कौन) (वे)
5. …बच्चों के साथ गया है ? (कौन)
6. …ने…लड़के को पैसा दिया था। (वह) (कौन)

7. ···लोगों ने ··बच्चों को मारा था। (वे) (कौन)
8. देखो, डाकिया···पूछता है। (क्या)
9. · ने·· इतने पैसे दिए ? (कौन) (तुम)
10. ·· गाडी कीचड मे फँस गई। (कौन)

'जो' सर्वनाम शब्द

इस वाक्य को पढो—

वह लड़का आ गया जो भाग गया था।

इस वाक्य मे—'जो' शब्द किस संज्ञा के स्थान पर प्रयोग हुआ है 'वह लड़का' सज्ञा के स्थान पर प्रयोग हुआ है न ?

—तो 'जो' सर्वनाम शब्द है, यहाँ 'वह लड़का' नाम की जगह पर प्रयोग हुआ है।

अब देखो, इसी वाक्य में दो वाक्य है—

1. वह लड़का आ गया।
2. वह लड़का भाग गया था।

कौन-सा शब्द इन दोनों वाक्यों को जोड़ता है ? 'जो' शब्द न ? बताओ इन को कैसे जोडता है ? 'वह लड़का' शब्द को दो बार न कहलवाकर 'जो' शब्द की सहायता से न ?

—तो 'जो' सर्वनाम शब्द दो काम करता है—

1. सज्ञा की जगह पर प्रयोग होता है।
2. वाक्यों को जोडता है।

'जो' का रूपान्तर

एकवचन	बहुवचन
जो, जिसने	जो, जिन्होंने
जिसको, जिसे	जिनको, जिनसे
जिसका, जिसकी, जिसके	जिनका, जिनकी, जिनके
जिसके लिए, जिस से	जिनके लिए, जिन से
जिसमें, जिस पर	जिन मे, जिन पर

अभ्यास

इन वाक्यों को सर्वनामों के उचित रूप से

1. यह वही लड़का है···ने पानी फेंका था
2. वह आदमी···वहाँ खड़ा है, मेरे चाचा है
3. ···माँ पुआ पकावे···बेटा त
4. ·· फूल लाया था वह नही

5. ···गली मे रहता हूँ···कोई नाम नही है। (जो) (वह)
6. ···कलम लिया है,·· अच्छा नही किया है। (जो) (वह)
7. ···ने फुलवारी लगाई अब···नही है। (जो) (वे)
8. ···लोगो का मालिक राम है···लोगों को क्या डर है। (जो) (वे)
9. ···लोग मेहनत करते है,···सफलता मिलती है। (जो) (वे)
10. हमने···के नाम लिखे है·· वाहर आ जाये। (जो) (वे)

कुछ और शब्द जो प्रश्न करने के लिए प्रयोग करते है

1. आप कब आए ? 'कब' से समय मालूम करते है।
2. वह कहाँ गया है ? 'कहाँ' से स्थान मालूम करते है।
3. आदमी क्यों आया है ? 'क्यों' से कारण मालूम करते है।
4 वह कैसा व्यक्ति है ? 'कैसा' से रंग-रूप या विशेषता मालूम करते है।

अभ्यास

1. इन वाक्यो को पूरा करो—
   1. नाना···आएगा ? (समय)
   2. ···घोड़े पर सवार था ? (व्यक्ति)
   3. बापू ने मुझे···डाँटा ? (कारण)
   4. राजू·· लड़का है ? (विशेपता)
   5. नानी ने उसे·· खिलाया ? (वस्तु)
   6. तुम्हारे अध्यापक ··रहते है ? (स्थान)
   7. ···ने तुझे गणित पढ़ाया ? (व्यक्ति)
   8. वह··· छुपा था ? (स्थान)
2. निम्नलिखित वाक्यो को उचित सर्वनाम से पूरा करो—
   1. एक अपरिचित व्यक्ति आया और पूछा···घर पर है ?
   2. ···रावण को मारा था ?
   3. राम ने रावण को···मारा था।
   4. ···बाहर गया है,···उसको देखा ?
   5. वह लड़का है ··भाई भारत गया है।
   6. वह बात छिपी नही···तुम बताना नही चाहते थे।
   7. ·· ने दूध मे पानी मिलाया था ?
   8. उन भाइयों को धन्यवाद दो···ने तुम्हारी सहायता की थी।
   9. पिताजी शहर से···लाए हैं ?
   10. यह तुम्हारी वस्तु है तुम···चाहे दे दो चाहे रख लो।

अब तुम जान गए

1. सर्वनाम सज्ञाओं (नामों) के स्थान पर प्रयोग होते है।
2. सर्वनामों में वचन और परसर्ग के कारण परिवर्तन आता है।
3. प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष का बोध कराने वाले सर्वनाम कौन-कौन से है।
4. 'कुछ' और 'कोई' सर्वनाम शब्द अनिश्चित वस्तुओं और व्यक्तियों का बोध कराते है।
5. 'कौन' और 'क्या' सर्वनाम शब्द प्रश्न करने के लिए प्रयोग करते हैं।
6. 'जो' सर्वनाम शब्द दो काम करता है। सज्ञा की जगह पर प्रयोग होता है और वाक्यों को जोड़ता है।
7. सर्वनाम विकारी शब्द है।

विशेषणों का रूपान्तर—विशेषण और विशेष्य

इन वाक्यों को पढो—

1. काला कुत्ता द्वार पर बैठा है।
2. वह दुष्ट है, जो दूसरो को दुख देता है।

पहले वाक्य मे कौन-सा शब्द विशेषण है? 'काला' शब्द न? 'काला' विशेषण किस की विशेषता बताता है? 'कुत्ता' की विशेषता बताता है न?

दूसरे वाक्य मे 'दुष्ट' विशेषण किस की विशेषता बताता है? 'वह' सर्वनाम की विशेषता बताता है न?

—तो जो शब्द किसी सज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है वह विशेषण है और वह सज्ञा या सर्वनाम उस विशेषण का विशेष्य है। जैसे—

विशेषण	विशेष्य
काला	कुत्ता
दुष्ट	वह

अभ्यास

विशेषण और विशेष्य को छांटो—

1. मोटा बकरा हरी घास चर रहा है।
2. यह कमजोर है, पर वह मेधावी है।
3. लीला अच्छी लड़की है।
4. दुष्ट नेवले ने छोटे चूहे को खा लिया।
5. उसने भरे टीन मे खाली गिलास डाल दिया।

विशेषणों में लिंग के कारण विकार

इन वाक्यों को पढो—

1. काला कुत्ता द्वार पर बैठा है।
2. काली बिल्ली पलग पर सोई है।

पहले वाक्य में 'काला' विशेषण 'कुत्ता' संज्ञा की विशेषता बताता है। 'कुत्ता' का क्या लिंग है? 'कुत्ता' पुलिंग है न? ठीक।

दूसरे वाक्य में 'बिल्ली' का क्या लिंग है? 'बिल्ली' स्त्रीलिंग है न? स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ 'काला' विशेषण का क्या रूप हुआ है? 'काला' बदल कर 'काली' हो गया न?

—तो आकारान्त विशेषण, स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ ईकारान्त हो जाते है। जैसे--

पुलिंग	स्त्रीलिंग
काला कुत्ता	काली बिल्ली
बड़ा बैल	बड़ी गाय
मेरा पुराना बस्ता	मेरी पुरानी कमीज़

अभ्यास

इन वाक्यों को स्त्रीलिंग में लिखो—

1. मेरा काला बकरा घर में नही है।
2. तेरा मोटा कुत्ता द्वार पर बैठा है।
3. नाना का बड़ा बैल कमजोर हो गया है।
4. वृद्ध हरिण भयभीत है क्योंकि छोटा बन्दर पेड़ पर है।
5. ये मोटे सूअर के चमड़े है।
6. छोटा राजकुमार अच्छा है।
7. राजा का नौकर भला है।
8. पीला चिड़ा डाली पर है।
9. मेढक पानी में मरा पड़ा है।
10. उस वन में एक मोटा नाभ है।

आकारान्त विशेषणों में परसर्ग के कारण विकार

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. काला कुत्ता बँधा है।
2. काले कुत्ते को खाना दो।

पहले वाक्य में देखो, 'काला कुत्ता' मे विकार नही आया है।

दूसरे वाक्य मे 'काले कुत्ते' हो गया है। तुम बता सकते हो, ऐसा क्यो हुआ है? हाँ, इसलिए कि 'को' परसर्ग आया है।

—तो पुलिंग विशेष्य के साथ परसर्ग के आने से आकारान्त विशेषण मे विकार आता है। जैसे—

बिना परसर्ग का प्रयोग	परसर्ग के साथ प्रयोग
काला कुत्ता	काले कुत्ते को
यह मोटा पिल्ला	इस मोटे पिल्ले को
वह गहरा नाला	उस गहरे नाले में
मेरा नया घर	मेरे नये घर में

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध करो—

1. हरा तोता के डैने टूटे है ।
2. तेरा दुबला कुत्ता ने मेरी रोटी खा ली ।
3. गोरा मुखडा पर लाल टीका सुहाता है ।
4. यह चौडा रास्ता पर चार मोटरें जा सकती है ।
5. हमारा चौरंगा झडा पर जाति को अभिमान है ।
6. हरा-भरा बगीचा में तितलियाँ मँडराती है ।
7. लीला अपना रंगीला झगला को सम्भाल कर रखती है ।
8. यात्री सूखा झरा पत्ता पर लेट गया ।
9. मेरा नया घर पर टेलीफोन है ।
10. वह बड़ा बाग मे बहुत फल है ।

विशेषणों में वचन के कारण परिवर्तन

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. यह छोटा कीड़ा पानी मे पलता है ।
2. ये छोटे कीड़े पानी में पलते हैं ।

पहले वाक्य में किस वचन का बोध होता है ? एकवचन का बोध होता है न ? देखो, 'छोटा' विशेषण मे विकार नही आया है । दूसरे वाक्य से बहुवचन का बोध होता है, है न ? ठीक । बहुवचन मे 'छोटा' विशेषण में क्या विकार आया है ? 'छोटा' बदलकर 'छोटे' हुआ है न ?

—तो बहुवचन मे आकारान्त विशेषणों मे परिवर्तन आता है । जैसे—

एकवचन	बहुवचन
मेरा अपना भाई	मेरे अपने भाई
यह चौडा दरवाजा खुला है	ये चौड़े दरवाजे खुले है ।

अभ्यास

इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

1. केंचुआ अंधा कीड़ा है ।
2. बैंगन का पौधा हरा है ।

3. गरीब का पुराना कपड़ा फटा है।
4. मछुआ का झोंपड़ा उजड़ा है।
5. लालमुनिया का छोटा घोंसला गिरा है।
6. यात्री का नया टोकरा भरा है।
7. पूंजीपति का नया धन्धा आरम्भ हुआ है।
8. बाबू का नया खिलौना हल्का है।

अब इन वाक्यों को पढ़ो—

1. ये छोटे कीड़े पानी में पलते है।
2. इन छोटे कीड़ो से पानी दूषित हो जाता है।

पहले वाक्य में 'छोटे कीड़े' के साथ परसर्ग नही आया है, है न ?

दूसरे वाक्य में 'से' परसर्ग के आने से किन शब्दों में विकार आया है ?

'ये' सर्वनाम शब्द और संज्ञा शब्द 'कीड़े' में विकार आया है, पर 'छोटे' विशेषण शब्द में नही आया है। जैसे—'ये' 'इन' और 'कीड़े' 'कीड़ो' हो गए हैं।

—तो बहुवचन में परसर्ग के आने से विशेषण शब्द में विकार नहीं आता है। जैसे—

बहुवचन	बहुवचन परसर्ग के साथ
ये सुन्दर पक्षी है।	इन सुन्दर पक्षियों को पकड़ो।
वे विषैले कीड़े है।	उन विषैले कीडों को मार डालो।

अभ्यास

काले छपे शब्दों को बहुवचन में लिखो—

1. मैंने पुराने कुली की कथा सुनी है।
2. तेरे दुबले बकरे ने मेरी क्यारी को चर लिया।
3. उसने काले सांप को मार डाला।
4. क्या तूने उस पिल्ले को खाना दे दिया ?
5. इस सूखे पौधे को उखाड़ दो।
6. नौकरानी ने मैले कपड़े को धो दिया।
7. चिड़िया ने उस केंचुए को खा लिया।
8. इस बड़े पेड़ पर फल नही लगते है।

याद रखो

1. केवल आकारान्त विशेषणों मे विकार आता है
2. लिंग के कारण विकार आता है।

3. वचन के कारण विकार आता है।
4 परसर्ग के कारण विकार आता है।
5. बहुवचन मे परसर्ग के आने से विशेषणों मे विकार नही आता।

तुम जान गए

1. विशेषण संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है।
2. विशेषण विकारी शब्द है।

आओ विशेषण बनाएँ

इन वाक्यो को पढो—

1. बन्दरगाह मे जापान का जहाज है।
2. बन्दरगाह में जापानी जहाज है।

पहले वाक्य मे 'जापान का' शब्द से मालूम होता है कि जहाज जापान देश का है।

दूसरे वाक्य मे 'जापानी जहाज' कहने से, वह जहाज किस देश का जहाज मालूम होता है ? जापान देश ही का न ?

दोनो वाक्यों में एक ही बात कही गई है, परन्तु भिन्न-भिन्न रूपों से।

1. 'जहाज' का सम्बन्ध जापान देश से बताकर।
2. 'जहाज' की विशेषता बताकर।

अच्छा यह बताओ, कौन-सा शब्द संज्ञा की विशेषता बताता है ? विशेषण शब्द न ? 'जापानी जहाज' में कौन-सा शब्द विशेषण है ? 'जापानी' शब्द विशेषण है न ? 'जापानी' शब्द किस शब्द से बना है ? 'जापान' संज्ञा शब्द से बना है न ? कैसे ? 'ई' (ी) जोड़कर विशेषण शब्द बना है न ?

—तो कुछ संज्ञा-शब्दो में 'ई' जोड़कर विशेषण बनाते हैं। जैसे—

संज्ञा	विशेषण
जापान	जापानी
लोभ	लोभी
हिन्दुस्तान	हिन्दुस्तानी
क्रोध	क्रोधी

2. कुछ संज्ञाओं मे 'इक' जोड़कर विशेषण बनाते है—

समाज	सामाजिक
सप्ताह	साप्ताहिक
वर्ष	वार्षिक
शरीर	शारीरिक
दिन	दैनिक

वेद	वैदिक
बुद्धि	बौद्धिक
भू	भौतिक

नोट : 1. यदि संज्ञाओं का प्रथम वर्ण 'अकार' हो तो 'आकार' बनाकर 'इक' जोड़ते हैं।

2. 'इकार' और 'एकार' हो तो 'ऐकार' करके 'इक' जोड़ते हैं।

3. 'उकार' 'ऊकार' और 'ओकार' हो तो औकार करके 'इक' जोड़ते हैं।

3. कुछ संज्ञाओं में 'इत' जोड़कर विशेषण बनाते हैं—

प्रकाश	प्रकाशित
लज्जा	लज्जित

4. कुछ संज्ञाओं में 'ईला' जोड़ते हैं—

शर्म	शर्मीला
चमक	चमकीला

5. कुछ संज्ञाओं में 'आलु' जोड़ते हैं—

दया	दयालु
झगड़ा	झगड़ालु

6. कुछ संज्ञाओं में 'दार' जोड़ते हैं—

रस	रसदार
झिल्ली	झिल्लीदार

7. कुछ संज्ञाओं के आगे दुर्, निर्, प्र, सु, स, बे बद, ला लगाकर विशेषण बनाते हैं—

गम	(दुर्) दुर्गम
भय	(निर्) निर्भय
बल	(प्र) प्रबल
गम	(सु) सुगम
फल	(स) सफल
वफा	(बे) बेवफा
जवाब	(ला) लाजवाब
किस्मत	(बद) बदकिस्मत

आओ संख्याओं से विशेषण बनायें

संख्या	विशेषण
1. एक	पहला, प्रथम
2. दो	दूसरा, द्वितीय, दुगुना

3. तीन	तीसरा, तृतीय, तिगुना
4. चार	चौथा, चतुर्थ, चौगुना
5. पाँच	पाँचवाँ, पचम
6. छह	छठा, षष्ठम
7. सात	सातवाँ, सप्तम
8. आठ	आठवाँ, अष्टम
9. नौ	नौवाँ, नवम
10. दस	दसवाँ, दशम

नोट—अब आगे की संख्याओ मे 'वाँ' जोडकर विशेपण बनाते हैं। जैसे—

ग्यारह	ग्यारहवाँ
बारह	बारहवाँ आदि आदि

इन विशेपणों मे विशेष्य के लिग और वचन के अनुसार परिवर्तन आता है। जैसे—

यह पहला बालक है।
यह पहली बालिका है।
यह पहला बालक है।
ये पहले बालक है।

अभ्यास

कोष्ठक में दिए शब्दो से विशेपण बनाकर खाली जगहों मे भरो—

1. ···व्यक्ति सब खो बैठा है। (लालच)
2. उसके घर पर'' कथा होती है। (मास)
3. यहाँ···कुलियों पर अन्याय किया गया था। (भारत)
4. लड़का ''कुकुरमुत्ता लाया था। (जहर)
5. धरती धुरी पर घूमती है, यह ' बात है। (कल्पना)
6. (मोरिशस) शामारैल मे'' मिट्टी पाई जाती है। (रग)
7. पड़ोसी का लड़का···है। (झगड़ा)
8. हमारी ''चीजों का दाम बढ़ गया है। (स्वाल)
9. उन ' लीचियों को देखकर मुंह में पानी आ गया। (रस)
10. रमेश अपना ' कार्य करके लाता है। (दिन)
11. नमक के बिना तरकारी ''होती है। (स्वाद)
12. मेरा भैया'' कक्षा मे पढ़ता है। (छह)
13. वे व्यापारी ' हैं। (ईमान)
14. तुम सब कुछ गुम कर देते हो, तुम'''हो। (पर्वाह)
15. मुन्नी ' कक्षा में पढ़ती है। (एक)

तुम जान गए

1. विशेषण शब्द क्या है।
2. संज्ञा शब्द क्या है।
3. संज्ञा शब्दों से कैसे विशेषण बनाते हैं।
4. संख्याओं से कैसे विशेषण बनाते हैं।

जोतना शब्द क्रिया का अर्थ रखते हुए, सज्ञा की तरह प्रयोग हुआ है। इसलिए 'का' परसर्ग के आने से 'जोतना' मे विकार आ गया है—'जोतने का'। इसी तरह दूसरा पुत्र—'डालने के लिए' का प्रयोग किया है। परन्तु कभी-कभी ऐसे प्रयोग में परसर्ग लुप्त रहता है। जैसे—

तीसरा पुत्र— 'बीज बोने—आऊँगा।'

अर्थात्—बीज बोने के लिए आऊँगा। और, यदि परसर्ग की जरूरत नही पड़ती तो उस में विकार नही आता, जैसे—चौथा पुत्र—'सींचना चाहता हूँ।'

अन्य उदाहरण—

मोहन को पाठ पढ़ना है।—मोहन पाठ पढ़ने के लिए बैठा है।

माँ को मदिर जाना है।—माँ मदिर जाने के लिए तैयार है।

—तो, जब क्रिया का साधारण रूप सज्ञा की तरह प्रयोग होता है, उसमे परसर्ग के आने से विकार आता है।

अभ्यास

इन वाक्यों को शुद्ध लिखो—

1. खेतो मे काम करने के लिए भारतीय कुली मंगाये गये थे।
2. उनके रहना के लिए 'ढाका' बनाया गया था।
3. उनके खाना-पीना के लिए बहुत कम दिया जाता था।
4. कही आना-जाना के लिए मालिक मना करते थे।
5. बीमार पड़ना पर दवा-दारू की सुविधा नही थी।
6. भारी मेहनत करना पर भी उन की पूरी मजदूरी नही मिलती थी।
7. दूसरे मालिकों के साथ काम करना को सोचते तो उन की पिटाई होती थी।
8. इस तरह का अन्याय होना पर भी वे कुछ नही बोल सकते थे।
9. गाधी जी के आना से कुलियों को आश्वासन मिला।
10. डाक्टर मणिलाल के आना से उन की दशा मे सुधार हुआ।

क्रियाओं के अन्य रूप

धातु (जड़ या मूल रूप)

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. नियमित रूप से पाठ पढ़ना।
2. इस वाक्य को अभी पढ़।

पहले वाक्य में कौन-सा शब्द क्रिया है? 'पढ़ना' शब्द क्रिया है न? देखो 'पढ़ना' क्रिया साधारण रूप में है, ठीक। दूसरे वाक्य मे कौन-सा शब्द क्रिया है? 'पढ़' शब्द क्रिया है न?

खंड 4

क्रियाओं का रूपान्तर

आओ क्रिया के रूपों को देखें फिर रूपों में अन्तर को देखें।

क्रियाओं का साधारण रूप

इन वाक्यों को पढ़ो—एक किसान बैठे-बैठे सोचता है—खेत **जोतना**, **खाद डालना**, **बीज बोना**, **सींचना** ! बाप रे ! इतने सारे काम करते-करते मैं मर जाऊँगा। उसी वक्त उसके पुत्रों ने आकर कहा—

पहला पुत्र—पिताजी, खेत जोतने का काम मुझ पर छोड़ दें।

दूसरा पुत्र—मैं खाद डालने के लिए अन्य लोगों को भी लाऊँगा।

तीसरा पुत्र—मैं बीज बोने आऊँगा।

चौथा पुत्र—मैं तो सींचना चाहता हूँ, पर...

सब साथ—पर तुम छोटे हो ! साथ मिलकर सिंचाई कर देंगे।

ऊपर के वाक्यों में वृद्ध किसान क्या करने को सोचता है ? वह काम करने को सोचता है न ? वह क्या काम करने को सोचता है ? 'खेत जोतना', 'खाद डालना', 'बीज बोना', और 'सींचना', ठीक। क्या तुम बता सकते हो, 'जोतना', 'डालना', 'बोना', 'सींचना' किस के नाम हैं ? ये काम के नाम हैं। इसको क्रिया कहते हैं। इससे किसी काम, घटना या अस्तित्व आदि का बोध होता है। ठीक। इस प्रकार 'जोतना', 'डालना' आदि क्रियाएँ हैं।

अच्छा अब बताओ, इन क्रियाओं का अन्त किस वर्ण से होता है। इनका अन्त 'ना' वर्ण से होता है, जैसे—जोत + ना = 'जोतना', डाल + ना = 'डालना'।

—तो क्रियाओं का रूप सामान्यतः 'ना' वर्ण से अन्त होता है।

क्रियाओं के साधारण रूप में विकार

पहले पुत्र की बात सुनो—पिताजी, खेत जोतने का काम मुझ पर छोड़ देना। इस वाक्य में—'जोतने का काम' एक संज्ञा की जगह पर प्रयोग हुआ है। पहला पुत्र बोल सकता है—'पिताजी खेत की जुताई मुझ पर छोड़ देना।' इस तरह 'जुताई' की जगह पर 'जोतने का काम' का प्रयोग किया है। सो,

जोतना शब्द क्रिया का अर्थ रखते हुए, संज्ञा की तरह प्रयोग हुआ है। इसलिए 'का' परसर्ग के आने से 'जोतना' में विकार आ गया है—'जोतने का'। इसी तरह दूसरा पुत्र—'डालने के लिए' का प्रयोग किया है। परन्तु कभी-कभी ऐसे प्रयोग में परसर्ग लुप्त रहता है। जैसे—

तीसरा पुत्र— 'बीज बोने—आऊँगा।'

अर्थात्—बीज बोने के लिए आऊँगा। और, यदि परसर्ग की जरूरत नही पड़ती तो उस मे विकार नही आता, जैसे—चौथा पुत्र—'सींचना चाहता हूँ।'

अन्य उदाहरण—

मोहन को पाठ पढ़ना है।—मोहन पाठ पढने के लिए बैठा है।

माँ को मंदिर जाना है।—माँ मंदिर जाने के लिए तैयार है।

—तो, जब क्रिया का साधारण रूप संज्ञा की तरह प्रयोग होता है, उसमे परसर्ग के आने से विकार आता है।

अभ्यास

इन वाक्यो को शुद्ध लिखो—

1. खेतों में काम करने के लिए भारतीय कुली मंगाये गये थे।
2. उनके रहना के लिए 'ढाका' बनाया गया था।
3. उनके खाना-पीना के लिए बहुत कम दिया जाता था।
4. कही आना-जाना के लिए मालिक मना करते थे।
5. बीमार पड़ना पर दवा-दारू की सुविधा नही थी।
6. भारी मेहनत करना पर भी उन की पूरी मजदूरी नही मिलती थी।
7. दूसरे मालिकों के साथ काम करना को सोचते तो उन की पिटाई होती थी।
8. इस तरह का अन्याय होना पर भी वे कुछ नही बोल सकते थे।
9. गांधी जी के आना से कुलियों को आश्वासन मिला।
10. *डाक्टर मणिलाल के आना से उन की दशा मे सुधार हुआ।*

क्रियाओं के अन्य रूप

धातु (जड़ या मूल रूप)

इन वाक्यों को पढो—

1. नियमित रूप से पाठ पढ़ना।
2. इस वाक्य को अभी पढ़।

पहले वाक्य मे कौन-सा शब्द क्रिया है? 'पढ़ना' शब्द क्रिया है न? देखो 'पढ़ना' क्रिया साधारण रूप में है, ठीक। दूसरे वाक्य में कौन-सा शब्द क्रिया है? 'पढ़' शब्द क्रिया है न?

अच्छा सोच कर बताओ, 'पढ़' क्रिया, किस क्रिया के साधारण रूप से निकली है ? 'पढ़' पढ़ना क्रिया से निकला है न। कैसे ? 'पढ़ना' क्रिया से 'ना' वर्ण उड़ा देने से 'पढ' रह जाता है। तो क्रियाओ के साधारण रूप से 'ना' वर्ण उड़ा देने से शेष जो रहते हैं, उन को क्रिया के धातु (जड़) या मूल रूप कहते है। जैसे—

क्रिया का साधारण रूप.		धातु या मूल रूप
पढ़ना	—	पढ
आना	—	आ
सोना	—	सो
पहुंचना	—	पहुंच
लिखवाना	—	लिखना

अभ्यास

इन क्रियाओं के मूल रूप छांटो—

होना, देना, लाना, जाना, पहनना, पहनाना, पहनवाना, सुनना, देखना, बोलना, पिलाना, खिलाना।

क्रिया के मूल रूप में विकार

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. तू सच बोल।
2. तुम सच बोलो।
3. आप सच बोलिए।
4. मैं सच बोलूं।

पहले वाक्य मे—'तू' के साथ प्रयोग होने से विकार नही आता है। दूसरे वाक्य में—'तुम' के साथ ओ (ो) जोड़ते हैं 'बोल' 'बोलो'। तीसरे वाक्य मे—'आप' (बड़ों के लिए) 'इए' जोड़ते है। चौथे वाक्य में—'मैं' (अपने लिए) 'ऊं' जोडते है।

नोट—जब हम किसी को आज्ञा देते हैं, या कुछ करने के लिए अनुरोध करते हैं, तब क्रियाओं के इन रूपों का प्रयोग करते हैं। और मना करने के लिए, क्रियाओं के आगे 'न', 'नहीं', 'मत', लगाकर प्रयोग करते है। जैसे—

1. तू झूठ मत बोल।
2. तुम झूठ मत बोलो।
3. आप झूठ मत बोलिए।
4. मैं झूठ नहीं बोलूं।

अभ्यास

इन वाक्यों को 'तू', 'तुम', 'आप', 'मैं', से पूरा करो—

1. ...यह काम कर दीजिए।
2. ...यहाँ मत आओ।
3. इस तरह... माटी से मत खेल।
4. हाय भगवान !...क्या करूँ।
5. ... कुरसी पर विराजिए।
6. ...मीठे-मीठे बेर लीजिए।
7. ...और आप से झूठ कहूँ।
8. ...अच्छे बच्चे हो।

क्रियाओं के अन्य रूप

कृदन्त

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. बहता पानी कीचड़ को धो डालता है।
2. बाढ़ में बहा कपड़ा समुद्रतट पर मिला।

पहले वाक्य में—कैसा पानी कीचड़ को धो डालता है? 'बहता पानी' न ! सो 'बहता' शब्द से पानी की एक दशा का बोध होता है। ठीक।

अच्छा तुम बता सकते हो, किन शब्दों से वस्तुओं की दशा, रंग-रूप आदि मालूम होता है? विशेषण शब्दों से न? इस वाक्य में कौन-सा शब्द विशेषण है? 'बहता' शब्द विशेषण है, ठीक ! तुम बता सकते हो? 'बहता' विशेषण शब्द कहाँ से आया है? हाँ ! यह 'बहता' क्रिया से आया है। 'बह' धातु में, 'ता' प्रत्यय जोड़कर बना है। जैसे—बहना=बहता। सो, 'बहता' 'बहना' क्रिया का एक रूप है जिसका उपयोग विशेषणों की तरह होता है। जैसे—बहता पानी, बहती हवा, बहते पत्ते। दूसरे वाक्य में 'बहा' शब्द से भी 'कपड़ा' की एक दशा (स्थिति) का बोध होता है। 'बहना' क्रिया का 'बहा' रूप भी विशेषणों की तरह प्रयोग होता है। जैसे—बहा कपड़ा, बही डाली, बहे पत्ते। —तो, क्रिया के जो रूप विशेषणों की तरह प्रयोग होते हैं उनको कृदन्त कहते हैं।

वर्तमान और भूतकालिक कृदन्त

अच्छा अब यह बताओ 'बहता पानी' में 'बहना' से किस समय की बात मालूम होती है? इससे एक होती हुई बात मालूम होती है। या मालूम होता है कि यह बात हमेशा होती है। ठीक। तो, 'बहता' कृदन्त से इस समय वर्तमान समय की बात मालूम होती है।

अन्य उदाहरण—

अच्छा सोच कर बताओ, 'पढ़' क्रिया, किस क्रिया के साधारण रूप से निकली है ? 'पढ़' पढ़ना क्रिया से निकला है न। कैसे ? 'पढ़ना' क्रिया से 'ना' वर्ण उड़ा देने से 'पढ़' रह जाता है। तो क्रियाओं के साधारण रूप से 'ना' वर्ण उड़ा देने से शेष जो रहते है, उन को क्रिया के धातु (जड़) या मूल रूप कहते है। जैसे—

क्रिया का साधारण रूप.		धातु या मूल रूप
पढ़ना	—	पढ़
आना	—	आ
सोना	—	सो
पहुंचना	—	पहुँच
लिखवाना	—	लिखवा

अभ्यास

इन क्रियाओं के मूल रूप छाँटो—

होना, देना, लाना, जाना, पहनना, पहनाना, पहनवाना, सुनना, देखना, बोलना, पिलाना, खिलाना।

क्रिया के मूल रूप में विकार

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. तू सच बोल।
2. तुम सच बोलो।
3. आप सच बोलिए।
4. मैं सच बोलूँ।

पहले वाक्य मे—'तू' के साथ प्रयोग होने से विकार नही आता है। दूसरे वाक्य मे—'तुम' के साथ ओ (ो) जोड़ते है 'बोल' 'बोलो'। तीसरे वाक्य मे—'आप' (बडो के लिए) 'इए' जोडते है। चौथे वाक्य मे—'मैं' (अपने लिए) 'ऊँ' जोडते है।

नोट—जब हम किसी को आज्ञा देते है, या कुछ करने के लिए अनुरोध करते है, तब क्रियाओं के इन रूपो का प्रयोग करते है। और मना करने के लिए, क्रियाओ के आगे 'न', 'नही', 'मत', लगाकर प्रयोग करते है। जैसे—

1. तू झूठ मत बोल।
2. तुम झूठ मत बोलो।
3. आप झूठ मत बोलिए।
4. मैं झूठ नही बोलूँ।

अभ्यास

इन वाक्यों को 'तू', 'तुम', 'आप', 'मैं', से पूरा करो—

1. ...यह काम कर दीजिए।
2. ...यहाँ मत आओ।
3. इस तरह... माटी से मत खेल।
4. हाय भगवान !...क्या करूँ।
5. ...कुरसी पर विराजिए।
6. ...मीठे-मीठे बेर लीजिए।
7. ...और आप से झूठ कहूँ।
8. ...अच्छे बच्चे हो।

क्रियाओं के अन्य रूप

कृदन्त

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. बहता पानी कीचड़ को धो डालता है।
2. बाढ़ में बहा कपड़ा समुद्रतट पर मिला।

पहले वाक्य में—कैसा पानी कीचड़ को धो डालता है ? 'बहता पानी' न ! सो 'बहता' शब्द से पानी की एक दशा का बोध होता है। ठीक।

अच्छा तुम बता सकते हो, किन शब्दों से वस्तुओं की दशा, रंग-रूप आदि मालूम होता है ? विशेषण शब्दों से न ? इस वाक्य में कौन-सा शब्द विशेषण है ? 'बहता' शब्द विशेषण है, ठीक ! तुम बता सकते हो ? 'बहता' विशेषण शब्द कहाँ से आया है ? हाँ ! यह 'बहता' क्रिया से आया है। 'बह' धातु में, 'ता' प्रत्यय जोड़कर बना है। जैसे—बहाना=बहता। सो, 'बहता' 'बहना' क्रिया का एक रूप है जिसका उपयोग विशेषणों की तरह होता है। जैसे—बहता पानी, बहती हवा, बहते पत्ते। दूसरे वाक्य में 'बहा' शब्द से भी 'कपड़ा' की एक दशा (स्थिति) का बोध होता है। 'बहना' क्रिया का 'बहा' रूप भी विशेषणों की तरह प्रयोग होता है। जैसे—बहा कपड़ा, बही डाली, बहे पत्ते। —तो, क्रिया के जो रूप विशेषणों की तरह प्रयोग होते है उनको कृदन्त कहते हैं।

वर्तमान और भूतकालिक कृदन्त

अच्छा अब यह बताओ 'बहता पानी' में 'बहता' से किस समय की बात मालूम होती है ? इससे एक होती हुई बात मालूम होती है। या मालूम होता है कि यह बात हमेशा होती है। ठीक। सो, 'बहता' कृदन्त से इस समय वर्तमान समय की बात मालूम होती है।

अन्य उदाहरण—

1. लड़का चलती गाड़ी से कूद पडा।
2 यात्री जाते समय जयजयकार करते है।
3. खिले (हुए) फूल झड़ गए।

अब 'वहा कपडा' मे 'वहा' से किस समय की बात मालूम होती है ? इस से बीते हुए समय की बात मालूम होती है न ? यह बात बीत कर समाप्त हो गई थी।

—तो 'वहा' कृदन्त से बीते समय की बात मालूम होती है।

अन्य उदाहरण—

1. भैया का भेजा पत्र आज तक नही मिला।
2. आपकी कही हुई बात अभी भी याद आती है।
3. बड़े जनो के बताए रास्तों पर चलो।

—तो 'वहता' कृदन्त से इस समय की बात मालूम होती है। यह वर्तमान कालिक कृदन्त है। 'वहा' कृदन्त से बीते समय की बात मालूम होती है। यह भूतकालिक कृदन्त है।

अभ्यास

कोष्ठकों मे दी गई क्रियाओ के वर्तमान कालिक कृदन्त से वाक्यों को पूरा करो।

1. प्रपात से'''पानी से भय लगता है। (झरना)
2. काम ' समय बातें मत करो। (करना)
3. नाव'''समय लहरो मे डूब गई। (जाना)
4. फूलों से ' (बिखरना) खुशबू, हवा से'''डालियाँ (झूमना) मन को प्रसन्न करती थी।
5. पुजारी ' अगारों पर चलने लगा। (जलना)
6. नानी शहर से'''हुई घर आई है। (होना)
7. '' धूप में मत खेलो। (चमकना)
8. दूर क्षितिज में बादल समुद्र को'' दिखाई देता है। (छूना)
9. शोर'''बच्चो को चुप करा दो। (मचाना)
10. सिपाही'''हवाई जहाज से कूद पड़ा। (उड़ना)

आओ भूतकालिक कृदन्त बनाएँ

क्रिया	धातु	कृदन्त
देखना	देख	देखा
सुनना	सुन	सुना

1. देखो—अकारान्त धातु मे आ (ा) जोड़ते है।

2. आकारान्त और ओकारान्त धातुओं में (या) जोड़ते हैं—

पढ़ाना	पढ़ा	पढ़ाया
आना	आ	आया
सोना	सो	सोया
बोना	बो	बोया

3. ईकारान्त धातुओं में दीर्घ 'ई' (ी) को ह्रस्व इ (ि) कर के 'या' जोड़ते हैं—

सीना	सी	सिया
पीना	पी	पिया

4. एकारान्त धातुओं में 'ए' (े) को ह्रस्व इ (ि) में बदल कर 'या' जोड़ते हैं—

लेना	ले	लिया
देना	दे	दिया

5. इन क्रियाओं में असामान्य रूप से कृन्दत बनते हैं—

होना	हो	हुआ
जाना	जा	गया
करना	कर	किया
छूना	छू	छुआ
चूना	चू	चुआ
भूलना	भूल	भुला

भूतकालिक कृदन्तों में विकार

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पका	पके	पकी	पकी
आया	आये (आए)	आई	आईं
सोया	सोये (सोए)	सोई	सोईं
हुआ	हुये (हुए)	हुई	हुईं
किया	किये (किए)	की	की
बना हुआ	बने हुए	बनी हुई	बनी हुईं
दिया	दिये (दिए)	दी	दी
लिया	लिये (लिए)	ली	ली
पिया	पिये (पिए)	पी	पी

नोट—कृदन्तों में अनेक कारणों से विकार आता है।

1. विशेष्य के कारण—जैसे—
पका केला, पके केले, पकी लीची, पकी लीचियाँ
(पकी लीचियाँ नही कहते है।)

2. परन्तु—
करने वाले या पुरुष के कारण स्त्रीलिंग बहुवचन रूप का प्रयोग करते है। जैसे—

एक लडकी आई	अनेक लड़कियाँ आईं
नानी देर से आई	मामीजी देर से आईं

3. कर्म के कारण—जैसे—
भैया ने पकी लीचियाँ दी

देखो—'पकी' मे स्त्रीलिंग बहुवचन नही लगी हैं क्योकि 'पकी' विशेषण ी तरह प्रयोग हुआ है। 'दीं' मे बहुवचन लगा है क्योकि 'दीं' क्रिया की तरह योग हुआ है। (आगे चल कर यह बात स्पष्ट हो जाएगी)

अभ्यास

कोष्ठक मे दी गई क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त से वाक्यों को पूरा रो।

1. इन'''कलमों को दराज मे रख दो। (टूटना)
2. बच्चों ने ' पुस्तके जला दी। (फटना)
3. बीमार'''जानवरों को दवा देना चाहिए। (होना)
4. '' चाभी मिलती नही। (खोना)
5. जेल से'''चार चोर पकडे गए। (छुटना)
6. '' मुन्ने को मत जगाओ। (सोना)
7. तुम '''' केले बाँट दो। (काटना—होना)
8. ''''' बात याद आती है। (भूलकर—होना)
9. मुझ से भारी गलती'''है। (होना)
10. पास'' बच्चे को इनाम मिलेगा। (होना)

तुम जान गए

1. क्रियाओं का साधारण रूप क्या है। वह किस वर्ण से अन्त होता है।
2. क्रियाओ के साधारण रूप मे विकार क्यों आता है।
3. क्रियाओ का मूल रूप (धातु) क्या है। उनमे कैसे विकार आता है।
4. क्रियाओं के कृदन्त क्या है। किस रूप से इस समय की बातो का बोध होता है। किस रूप से बीते हुए समय की बातों का बोध होता है।

5. कृदन्तो मे लिंग और वचन के कारण कैसे विकार आता है ।

याद रखो

1. यहां तक तुम ने क्रियाओं के रूपों का अभ्यास किया । तुमने देखा, क्रियाओं का प्रयोग करने से पहले उनको दो भागों में रखते है, जिन्हे क्रियाओं के भेद कहते है ।

आओ क्रियाओ के भेद को देखें, फिर प्रयोग करें ।

क्रियाओं के भेद

क्रियाओं के भेद जानने के लिए दो बातो को जानना आवश्यक है ।

(1) कर्त्ता (2) कर्म

कर्त्ता

इन वाक्यो को पढ़ो—

1. मोहन उठता है ।

2. सुरेश खाता है ।

पहले वाक्य मे 'उठता है' क्रिया का करने वाला कौन है ? 'मोहन' है न ? यह कैसे मालूम होता है । अच्छा, तुम, 'कौन' शब्द से 'उठता है' क्रिया के आगे रख कर प्रश्न करो । इस तरह 'कौन उठता है ।'

उत्तर मिलता है—'मोहन'

करनेवाले को 'कर्त्ता' कहते है ।

दूसरे वाक्य मे 'खाता है' क्रिया का कर्त्ता बताओ । हां 'सुरेश' 'खाता है' क्रिया का कर्त्ता है । तो, कर्त्ता क्रिया को करनेवाला होता है ।

नोट—क्रिया के कर्त्ता सभी होते है—जीव और पदार्थ दोनों ।

मोहन उठता है—(आदमी)
बैल उठता है—(पशु)
धुआं उठता है—(वस्तु)

अभ्यास

इन वाक्यो मे कर्त्ता भरो—

...भौंकता है ...बांग देता है... चहचहाती है ।
...बोलता है ...रंभाती है . मिमियाता है ।
.. गरजता है ...चमकती है ...टर्राता है ।
...कपडा सीता है ...खेत जोतता है . कपड़ा बेचता है ।
...न्याय करता है...जूते बनाता है...बाल काटता है ।

कर्म

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन उठता है ।

2. सुरेश रोटी खाता है।

पहले वाक्य में देखो—दो शब्द हैं। 'मोहन' (कर्त्ता) और 'उठता है' (क्रिया)

दूसरे वाक्य में तीन शब्द है—'सुरेश' (कर्त्ता) 'रोटी' और खाता है' (क्रिया)। इस वाक्य में 'रोटी' शब्द का क्या काम है।

अच्छा देखो, यदि हम कहते—सुरेश खाता है। तो क्या इसमें पता चलता है कि सुरेश क्या खाता है? पता नही चलता न कि सुरेश क्या खाता है? सो, 'रोटी' शब्द 'खाता है' क्रिया को पूरा करने के लिए प्रयोग हुआ है। फिर हम कहते है—'रोटी' शब्द 'खाता है' क्रिया का कर्म है।—तो जो शब्द किसी क्रिया को पूरा करने के लिए प्रयुक्त होते हैं उनको कर्म कहते हैं।

इस वाक्य में कर्म का पता लगाओ—

गाय घास खाती है।

'घास' शब्द कर्म है न? यह कैसे मालूम हुआ? अच्छा 'क्या' शब्द को क्रिया के आगे रख कर प्रश्न करो।

इस तरह—गाय क्या खाती है?

उत्तर मिलता है—'घास'। 'घास' 'खाती है' क्रिया का कर्म है।—तो, किसी वाक्य में कर्म को जानने के लिए, 'क्या' शब्द को क्रिया के आगे रखकर प्रश्न करते है।

अभ्यास

खाली जगहों में कर्म भरो—

मुर्गी...देती है। बढई...बनाता है। चित्रकार...बनाता है। कवि...लिखता है। कहानीकार...लिखता है। राजा...करता है। बादल...लाता है। ग्वाला... बेचता है। सुनार...बनाता है।

आओ क्रियाओं के भेद देखें

इन वाक्यों को पढ़ो—

अकर्मक क्रियाएँ

1. राजू आता है।

2. राजन पीता है।

पहले वाक्य में कहा गया है कि राजू आता है। अच्छा बताओ,'आता है' क्रिया से किसी के आने की बात स्पष्ट होती है? बात स्पष्ट नही होती है न? क्यों? हाँ, इसलिए कि 'आता है' क्रिया में बात को स्पष्ट रूप से कहने के लिए 'कर्ता' की जरूरत होती है। जैसे—

राजू आता है।

कुत्ता आता है।

तूफान आता है।

अब देखो, प्रत्येक वाक्य मे 'कर्त्ता' के आने से बात स्पष्ट होती है। क्रिया को कर्म की जरूरत नही पड़ती है।

—तो जिन क्रियाओं से केवल कर्त्ता के आने मे बात स्पष्ट हो जाती है और कर्म की जरूरत नही पड़ती है, वे क्रियाएँ अकर्मक है। 'अकर्मक' का अर्थ है—बिना कर्म का। जैसे—

बालक उठता है। मां बैठती है। गाडी चलती है।
उठना, बैठना, चलना, अकर्मक क्रियाएँ है।

सकर्मक क्रियाएँ

दूसरे वाक्य को देखो—

2. राजन पीता है।

इस वाक्य मे कहा गया है कि राजन पीता है। 'राजन' कर्त्ता है। देखो, केवल 'पीता है' क्रिया से 'पीना' काम अवश्य मालूम होता है। परन्तु वह वस्तु निश्चित नही होती है।

अब देखो—राजन दूध पीता है। 'पीता है' क्रिया के साथ दूध कर्म के आने से बात स्पष्ट होती है कि कौन पीता है और क्या पीता है।—तो जिन क्रियाओं से बात को स्पष्ट करने के लिए कर्ता और कर्म दोनो की जरूरत पड़ती है, वे क्रियाएँ **सकर्मक** है। 'सकर्मक' का अर्थ है—कर्म के साथ, जैसे—
1. बालक चित्र देखता है। 2. मां रोटी बनाती है। 3. लाला कहानी सुनाता है।

वाक्य 1 मे 'चित्र' देखता क्रिया का कर्म है।
2 में 'रोटी' पकाता क्रिया का कर्म है।
बताओ, वाक्य 3 में कौन-सा शब्द सुनाता क्रिया का कर्म है ?
देखना, बनाना, सुनाना, क्रियाएँ सकर्मक है ?

कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हे

इन वाक्यों को पढो—

1. उसका सिर खुजलाता है। (अकर्मक प्रयोग)
2. वह सिर खुजलाता है। (सकर्मक प्रयोग)

इस तरह 'खुजलाना' क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनो है।

कुछ क्रियाएँ अपवाद हैं

अपवाद का अर्थ है—जो नियम के विरुद्ध प्रयोग होता है। लाना, बोलना, भूलना, समझना, ये क्रियाएँ सकर्मक है, परन्तु अकर्मक कियाओं की तरह प्रयोग होती है।

आओ सकर्मक क्रियाएँ बनाएँ

अकर्मक क्रियाएँ	सकर्मक क्रियाए
सोना	सुलाना
उठना	उठाना
जगना	जगाना
दौडना	दौडाना
कूदना	कुदाना
गिरना	गिराना
बैठना	बिठाना
जीना	जिलाना
मरना	मारना
नाचना	नचाना
रोना	रुलाना
हँसना	हँसाना

आओ सकर्मक क्रियाओं से अन्य सकर्मक क्रियाएँ बनाएँ

देखना	दिखाना	दिखलाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
माँगना	मँगाना	मँगवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
करना	कराना	करवाना
पढना	पढाना	पढवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना

अभ्यास

इन अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक क्रियाएँ बनाओ—

हिलना	मिलना	भागना	चलना	बढ़ना
बसना	लगना	जलना	उखड़ना	दुखना
खिलना	बहना	मचना	पचना	बनना

संयुक्त क्रियाएँ

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. बाबू खीर खा चुका ।
2. बच्चा आँगन में गिर पड़ा ।

पहले वाक्य में 'खा चुका' एक क्रिया नहीं, दो क्रियाएँ है—'खा' (खाना) और 'चुका' (चुकना) । इन दोनो में 'खाना' मुख्य क्रिया है और 'चुकना' सहायक क्रिया है ।

इस तरह दूसरे वाक्य में दो क्रियाएँ है, 'गिर' और 'पड़ा' । बताओ तो देखूँ, कौन-सी क्रिया मुख्य है और कौन-सी क्रिया सहायक है ? हाँ 'गिर' (गिरना) मुख्य है और 'पडा' (पड़ना) सहायक क्रिया है । ठीक ।

तो जो क्रिया दो या अधिक क्रियाओं से मिलकर बनती है, उसको सयुक्त क्रियाएँ कहते हैं । सयुक्त क्रिया का अर्थ है, मिला हुआ । सयुक्त क्रियाओं में एक क्रिया मुख्य होती है और अन्य क्रियाएँ सहायक होती है ।

इन क्रियाओं से सयुक्त क्रियाएँ बनती है । सकना, पड़ना, देना, चुकना, लेना, जाना, बैठना, चलना, आना, डालना, होना ।

नोट—ये क्रियाएँ अकेले आने पर मुख्य क्रियाएँ है, और अन्य क्रियाओ के साथ आने पर सहायक क्रियाएँ है । जैसे—

1. मेरा नन्हा भैया चलता है ।
2. वह आँगन में खेलता चलता है ।

पहले वाक्य में चलता' (चलना) क्रिया अकेली आई है। अतः इस वाक्य में यह मुख्य क्रिया है ।

दूसरे वाक्य में 'चलना' क्रिया 'खेलना' क्रिया की सहायता करती है । अत' इस वाक्य मे 'चलना' सहायक क्रिया है । सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रियाओं मे एक विशेषता (बल) लाती है ।

पूर्वकालिक क्रिया

इन वाक्यो को पढो—

1. मोहन खेल देखकर आया है ।
2. पंडित जी स्नान करके आए है ।

पहले वाक्य मे देखो, दो क्रियाएँ है, 'देखकर' और 'आया है' । इस वाक्य को फिर से पढो । बताओ, कौन-सी क्रिया (काम) आगे हुई है, 'देखना' या 'आना' । 'देखना' क्रिया आगे हुई न ? अब बताओ, 'देखकर' क्रिया किन-किन क्रियाओ के मेल से बनी है ? 'देखना' क्रिया के धातु 'देख' और 'करना' क्रिया के धातु 'कर' के मेल से बनी है न ? देख+कर=देखकर । तो जो क्रिया 'कर'

धातु के मेल से बनती है और जिससे मुख्य क्रिया के आगे की स्थिति (बात) का बोध होता है, उस को पूर्वकालिक क्रिया कहते है।

दूसरे वाक्य मे, कौन-सी क्रिया पूर्वकालिक क्रिया है ? 'करके' पूर्वकालिक क्रिया है न ? 'करके' पूर्वकालिक कैसे बनी है ? ये 'कर' धातु के साथ 'के' जोडकर बनी है न ? ठीक। तो 'करना' क्रिया से पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिए 'कर' धातु मे 'के' जोडते है। और अन्य क्रियाओं के धातुओं में 'कर' जोड़ते है। जैसे—

नाना काम करके आते हैं।

माताजी पूजा करके आती है।

मामा नानी को पहुँचाकर आये है।

दीदी घास लाकर शहर गई है।

नोट—पूर्वकालिक क्रियाओ को अलग-अलग नहीं लिखते है। साथ मिला कर लिखते है, जैसे—करके, लाकर, पाकर, देकर।

अभ्यास

कोष्ठको में दी गई क्रियाओं से पूर्वकालिक क्रियाएँ बनाओ—

1. जनक कटहल ' आया है। (खाना)
2. नौकर चिट्ठी दे गया। (आना)
3. तुम मास्टरजी से'''आओ। (पूछना)
4. उसने मेहनत'''धन कमाया है। (करना)
5. वह जरूर कुछ ' आया है। (करना)
6. मुन्ना अभी-अभी ''उठा है। (सोना)
7. यात्री सवेरे'''चला गया। (उठना)
8. तुम वहाँ'' खाली हाथ लौट आए। (जाना)
9. मेरा मित्र भोजन'' नही आया है। (करना)
10. तुम्हे कुछ ' दिखाना होगा। (बनना)

(ख) इन सयुक्त क्रियाओं को अपने वाक्यो में प्रयोग करो—

चल पड़ना, आ सकना, पहुँच सकना, सो जाना, गिर जाना।

तुम जान गए

1. सयुक्त क्रियाएँ कौन-सी हैं। उनमें कौन-सी क्रिया मुख्य है और कौन-सी क्रिया सहायक है।

2. पूर्वकालिक क्रियाएँ किसको कहते है। वे कैसे बनती है।

नामधातु

नामबोधक क्रिया और नामधातु

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन अपने मित्र से नहीं बतियाता है।

2. मौसी ने एक अनाथ बच्चे को अपनाया है।

पहले वाक्य में 'बतियाता है' क्रिया को देखो—'बतियाना' क्रिया से एक नाम (संज्ञा) का बोध होता है, बताओ तो देखूँ वह कौन-सा नाम है? हाँ, 'बात' नाम (संज्ञा) है, है न? ठीक। अत., 'बतियाना' क्रिया 'बात' नाम (संज्ञा) से बनी है। दूसरे वाक्य में 'अपनाया है' क्रिया किस शब्द से बनी है? 'अपनाया है' क्रिया 'अपना' विशेषण शब्द से बनी है न। अतः 'अपनाना' क्रिया 'अपना' विशेषण शब्द से बनी है। तो, जिन क्रियाओं से 'नाम' या 'विशेषण' का बोध होता है, उनको नामबोधक क्रियाएँ कहते है और उन क्रियाओं के धातुओं को 'नामधातु' कहते हैं। जैसे—

'बतियाना' क्रिया का धातु 'बात' है।

'हथियाना' क्रिया का धातु 'हाथ' है।

अन्य नामबोधक क्रियाएँ

लात	लतियाना
मुड़ी	मुड़ियाना
लाठी	लठियाना
धक्का	धक्कियाना
चिकना	चिकनाना
दुख	दुखना, दुखाना
गारी	गरियाना

अभ्यास

इन शब्दों से क्रिया बनाओ—

दाग, बदल, गुजर, स्वीकार, दुलार, दुतकार, फूल, फल

अब आओ क्रियाओं के कालों को देखें—क्रिया के काल

काल समय को कहते है। समय को हम तीन भागों में रखते है—

(1) जो समय अभी है, चल रहा है। वह है वर्तमान काल।

(2) जो समय बीत गया, और नहीं रहा। पहले का समय, बीता हुए समय। वह है भूतकाल।

(3) जो समय आने वाला है। आज के बाद का समय। वह है भविष्यत् काल।

समय के कारण क्रिया के रूपों मे अन्तर होता है, और क्रिया के जिन रूपों से समय का बोध होता है उनको क्रिया के काल कहते हैं।

क्रिया के वर्तमान काल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. रामू हमेशा चार बजे घर आता है।

2. श्याम अभी घर आ रहा है।

3. इस वक्त मोहन घर आता होगा।

पहले वाक्य मे 'आना' क्रिया किस समय पर होती है ? एक निश्चित समय पर न, (जो हमेशा है) ठीक। 'आना' क्रिया का रूप देखा, 'आता है', इससे वर्तमान समय का बोध होता है। दूसरे वाक्य मे 'आ रहा है' (आना क्रिया के और एक रूप से) किस समय का बोध हो रहा है ? इस समय 'अभी' का बोध हो रहा है न ? ठीक।

तीसरे वाक्य से भी 'इस वक्त' का बोध होता है। 'आता होगा' क्रिया से वर्तमान समय की बात मालूम होती है।

अच्छा बताओ किन शब्दो से वर्तमान समय या वर्तमान काल का बोध होता है ? 'हमेशा', 'अभी', 'इस वक्त' और क्रिया के रूपों 'आता है', 'आ रहा है', 'आता होगा' से वर्तमान समय का बोध होता है न ?

तो, जो समय, हमेशा, अभी, इस वक्त है, उसको वर्तमान समय या वर्तमान काल कहते हैं।

और क्रिया के जिन रूपो से वर्तमान समय का बोध होता है, उनको क्रिया के वर्तमान काल के रूप कहते है। फिर हम कहते है, **क्रिया वर्तमान काल में है।**

क्रिया के भूतकाल

इन वाक्यों को पढो—

1. पहले रामू घर आता था।
2. गत सप्ताह चोर आया था।
3. श्याम घर आया होगा।
4. राजू ने रात को कुछ नही खाया।
5. कमला चीनी ला रही थी।
6. भक्तगण आग पर उतर गए थे।

पहले और दूसरे वाक्यो मे देखो—'पहले' और 'गत सप्ताह' से किस समय का बोध होता है ? बीते हुए समय का बोध होता है न ? तो बीते हुए समय को भूतकाल कहते है। क्रियाओं के रूपो को देखो—'आता था', 'आया था', 'आया होगा', 'खाया', 'ला रही थी', 'उतर गए थे', ये क्रियाओं के भूतकाल के रूप हैं। हम कहते है—ये क्रियाएँ भूतकाल में हैं।

देखो—पहले, गत, पिछले, प्राचीन समय, आदि शब्द भी भूतकाल के सूचक है।

बताओ तो देखूं, कौन-सी क्रियाएँ वर्तमान काल, भूत काल में हैं ?

1. कमरे मे पखा चल रहा था।

2. मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।
3. माताजी चावल चुन रही थी।
4. कमला ने काम नही किया होगा।
5. पिताजी घर पर आ गए थे।
6. रात मे जोर की वारिश हुई थी।
7. वादल गरज रहा है, कही पानी पड़ता होगा।
8. हम स्कूल आते थे।
9. आप किधर जाते है।
10. आज शहर जा रहा हूँ।

भविष्यत् काल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. भैया आगामी सप्ताह आएगा।
2. ये कलमी पौधे अगले दो-तीन साल मे फल देंगे।
3. मै मेहनत करूँगा और कक्षा में प्रथम होऊँगा।
4. तुम देखकर आओ तो मैं जाऊँ।

पहले और दूसरे वाक्यो में देखो—'आगामी सप्ताह' और 'दो-तीन साल मे', इन शब्दों से किस समय का बोध होता है? आने वाले समय का बोध होता है न? तो आनेवाले समय को भविष्यत् काल कहते है। क्रियाओ के रूपों को देखो, 'आएगा', 'देंगे', 'होऊँगा', करूँगा', 'जाऊँ' ये क्रियाओ के भविष्यत् काल के रूप है। तो हम कहते है, ये क्रियाएँ भविष्यत् काल मे हैं।

देखो—आगामी, वाद में, दो-तीन दिन वाद आदि शब्द भविष्यत् काल के सूचक हैं।

बताओ तो देखूँ कौन-सी क्रियाएँ भविष्यत् काल में है—

1. दिनेश भारत से आया है। कुछ दिनों मे इग्लंड जाएगा।
2. मैं अभी छोटा हूँ, वड़ा होऊँगा तो खूब पढ़ूँगा।
3. मोहन आ गया होगा, कुछ घड़ी वाद देखने जाऊँगा।
4. तुम उठो तो मैं बैठूँ।
5. रमेश खेल रहा है, लगता है स्कूल नही जाएगा।
6. वह सिनेमा देखकर आ रहा था।
7. वह खाकर आया होगा।
8. आगामी सप्ताह मे समुद्र किनारे जाऊँगा।
9. आप शाम को क्या करते हैं?
10. वह दो दिन वाद आएगा।

तुम जान गए

1. काल—समय को कहते हैं।
2. क्रियाओं के काल तीन हैं—वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल।
3. प्रत्येक काल में क्रियाओं के भिन्न-भिन्न रूप है और उन रूपों में कैसा अन्तर है।

आओ देखें प्रत्येक काल के कितने रूप हैं और उन रूपों में क्यों विकार आता है

वर्तमान काल

वर्तमान काल मे क्रियाओं मे 'कर्त्ता' के कारण विकार आता है।

इन वाक्यों को पढो—

1. राजेश सवेरे ही उठता है।
2. मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।
3. तुम कितने बजे उठते हो?
4. लड़कियाँ सवेरे उठती है।

पहले वाक्य में कर्त्ता कौन? प्रश्न करो, कौन उठता है? 'राजेश' उठता है न? तो 'राजेश 'उठता है' क्रिया का 'कर्त्ता' है। 'राजेश' कर्त्ता के साथ क्रिया के रूप को देखो—'उठता है'। दूसरे वाक्य में 'करता हूँ' क्रिया का कर्त्ता कौन है? 'मैं' प्रथम पुरुष कर्त्ता है न? 'मैं' कर्त्ता के साथ क्रिया के रूप को देखो—'करता हूँ'।

तीसरे वाक्य मे 'उठते हो' क्रिया का कर्त्ता बताओ। 'तुम' मध्यम पुरुष कर्त्ता है न। 'तुम' कर्त्ता के साथ क्रिया के रूप को देखो—'उठते हो'।

चौथे वाक्य मे कर्त्ता कौन है? 'लडकियाँ' कर्त्ता है न? 'लड़कियाँ' कर्त्ता के लिंग और वचन बताओ। 'लडकियाँ' कर्त्ता स्त्रीलिंग बहुवचन है। स्त्रीलिंग बहुवचन कर्त्ता के साथ क्रिया के रूप को देखो—'उठती हैं'। तो वर्तमान काल मे, क्रियाओं मे कर्त्ता के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है।

अच्छा तुम बता सकते हो—'करता हूँ', 'उठता हैं', 'उठते हो', 'उठती है' क्रियाओं मे—'हूँ', 'है', 'हो', 'है' किस क्रिया के रूप है? ये 'होना' सहायक क्रिया के रूप है। ठीक। याद रखो—'होना' क्रिया के ये रूप सभी क्रियाओं को रूपान्तरित करने मे सहायता करते है। ये वर्तमान काल के सहायक रूप हैं।

हूँ, है, हो, है अपने आप मे एक मुख्य क्रिया के रूप मे प्रयोग होते हैं। इन से वर्तमान काल का बोध होता है।

'होना' क्रिया का सहायक रूप

पुलिंग—स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं हूँ	हम है
2. द्वितीय पुरुष	तू है	तुम हो
3. अन्य पुरुष	वह है	वे है
आदर-सूचक	(आप)	
	(जो) पिताजी, माताजी हैं।	

अभ्यास

इन वाक्यों को, है, हूँ, हो, है से पूरा करो—

1. हम नदी किनारे…।
2. मै बीमार नही…।
3. मामू जी इंग्लैंड में…।
4. मैं और तुम मित्र…।
5. पक्षी डाली पर…।
6. मुन्ना और मुन्नी घर…।
7. मोहन और सुरेश अच्छे लड़के…।
8. तुम अभी बच्चे…।
9. लीला कमरे में नही…।
10. ये मजदूर परिश्रमी…।

क्रियाओं के सामान्य वर्तमान काल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. सूर्य पश्चिम मे अस्त होता है।
2. अच्छा बालक सवेरे उठता है।

पहले वाक्य मे 'होता है' क्रिया, 'होना' क्रिया के वर्तमान का एक रूप है। अच्छा, बता सकते हो, सूर्य कब अस्त होता हैं? सूर्य प्रतिदिन (हमेशा) अस्त होता है न? तो, जो काम वर्तमान समय मे प्रतिदिन (हमेशा) होता है उसको बताने के लिए क्रियाओ के वर्तमान काल के इस रूप का प्रयोग करते है। क्रियाओं के उस रूप को सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। सामान्य वर्तमान काल में काम का पूरा होना या अधूरा रहना मालूम नही होता परन्तु काम का होना या करना मालूम होता है। दूसरे वाक्य मे 'उठता है' क्रिया किस काल में है। 'उठता है' क्रिया 'सामान्य वर्तमान काल' मे है। ठीक।

'होना' क्रिया का सामान्य वर्तमान काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मैं होता हूँ	हम होते हैं
द्वितीय पुरुष	तू होता है	तुम होते हो
अन्य पुरुष	वह होता है	वे होते हैं
आदर-सूचक 'आप'	आप होते है	
'जी'	पिताजी होते हैं	

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं होती हूँ	हम होते है
2. द्वितीय पुरुष	तू होती है	तुम होती हो
3. अन्य पुरुष	वह होती है	वे होती हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप होती हैं
	'जी'	माताजी होती हैं

'उठाना' क्रिया का सामान्य वर्तमान काल

लिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठता हूँ	हम उठते हैं
2. द्वितीय पुरुष	तू उठता है	तुम उठते हो
3. अन्य पुरुष	वह उठता है	वे उठते हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप उठते है
	'जी'	पिताजी उठते हैं

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मै उठती हूँ	हम उठती है
2. द्वितीय पुरुष	तू उठती है	तुम उठती हो
3. अन्य पुरुष	वह उठती है	वे उठती हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप उठती हैं
	'जी'	माताजी उठती हैं

नोट—यदि एक वाक्य मे एक कर्त्ता पुंलिग हो और एक कर्त्ता स्त्रीलिंग हो तो क्रिया को पुंलिग—बहुवचन में लिखते है। जैसे—लड़के और लड़कियाँ खेलते हैं।

अभ्यास

1. कोष्ठकों मे लिखी क्रियाओं को सामान्य वर्तमान काल मे लिखो—

1. हम कभी-कभी वीमार ··। (होना)
2. माताजी शनिवार को बाजार ···। (जाना)
3. तितलियाँ कोमल ·· (होना)
4. सूरज पूरब में··· (उठना) और पश्चिम में ·· (ढलना)
5. पृथ्वी अपनी धुरी पर··· (घूमना)
6. इस तरह रात··· (होना) और दिन ·· (होना)

2. काली छपी क्रियाओं को उचित काल में लिखो—

पिताजी रविवार को काम पर नही जाना। हम देर से उठना। पिताजी मोटर आना। हम सब वाजार जाना। मोती भी साथ आना। रमेश भैया समूसा पसन्द करना। मुन्नी और गातोपिमा पसन्द करना। मोती मिठाई वाले पर भौंकना। मिठाई वाला मोती को एक दालपुरी देना। माताजी सब्जी लेकर जल्दी लौटना।

3. इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

1. चिड़िया दाना चुगती है।
2. मैं भिक्षु को दान देता हूँ।
3. माता लोरी गाती है।
4. ओझा भूत से डरता है।
5. बन्दर का झुण्ड धूप सेंकता है।

तुम जान गए

1. क्रियाओं का सामान्य वर्तमान काल क्या है।
2. क्रियाओं में कर्त्ता के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है।
3. क्रियाओं के सामान्य वर्तमान काल के काम के पूरे होने और अधूरे रहने की बात मालूम नहीं होती है। परन्तु, काम के होने या करने की बात मालूम होती है।

अपूर्ण वर्तमान काल

क्रियाओं का अपूर्ण वर्तमान काल

1. दवाई लगा दी है, घाव ठीक हो रहा है।
2. कहीं आग लगी है, धुआँ उठ रहा है।

पहले वाक्य में देखो, 'हो रहा है' क्रिया वर्तमान काल का और एक रूप है। अच्छा वता सकते हो, घाव ठीक हो रहा है? हाँ, जिस समय हम वोल रहे हैं उसी समय घाव ठीक हो रहा है। तो, क्रिया के जिस रूप से, वर्तमान समय में हमारे वोलने के तत्काल वाद किसी काम का होना या करना मालूम हो उस रूप को तात्कालिक वर्तमान काल कहते है। तात्कालिक वर्तमान काल से काम का अपूर्ण रहना मालूम होता है। इसलिए इस काल को अपूर्ण वर्तमान

काल भी कहते हैं।

दूसरे वाक्य में देखो—धुआँ किस समय उठ रहा है? जिस समय हम बोल रहे हैं उसी समय धुआँ उठ रहा है। तो 'उठ रहा है' क्रिया किस काल में है? 'उठ रहा है' क्रिया अपूर्ण वर्तमान काल में है। ठीक।

'होना' क्रिया का अपूर्ण वर्तमान काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं हो रहा हूँ	हम हो रहे हैं
2. द्वितीय पुरुष	तू हो रहा है	तुम हो रहे हो
3. अन्य पुरुष	वह हो रहा है	वे हो रहे हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप हो रहे हैं
	'जी'	पिताजी हो रहे हैं

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हो रही हूँ	हम हो रही हैं
2. द्वितीय पुरुष	तू हो रही है	तुम हो रही हो
3. अन्य पुरुष	वह हो रही है	वे हो रही हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप हो रही हैं
	'जी'	माताजी हो रही हैं

'उठना' क्रिया का अपूर्ण वर्तमान काल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठ रहा हूँ	हम उठ रहे हैं
2. द्वितीय पुरुष	तू उठ रहा है	तुम उठ रहे हो
3. अन्य पुरुष	वह उठ रहा है	वे उठ रहे हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप उठ रहे हैं
	'जी'	पिताजी उठ रहे हैं

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठ रही हूँ	हम उठ रही हैं
2. द्वितीय पुरुष	तू उठ रही है	तुम उठ रही हो
3. अन्य पुरुष	वह उठ रही है	वे उठ रही हैं
आदर-सूचक	'आप'	आप उठ रही हैं
	'जी'	माताजी उठ रही हैं

नोट—वाक्य में जब भिन्न-भिन्न लिंग के कर्त्ता हों, तो क्रिया को पुंलिंग-बहुवचन में लिखते हैं। जैसे—लड़के और लड़कियाँ आ रहे हैं।

अभ्यास

1. कोष्ठकों में दिए क्रियाओ के उचित रूप से वाक्यों को पूरा करो—
   1. तूफान···(आ रही है, आ रहे है, आ रहा है)
   2. हवा तेज···(बह रहे है, वह रही है, वह रहा है)
   3. पत्ते···(झड़ रहा है, झड़ रहे है, झड़ रही है)
   4. डालियाँ ··(टूट रहे है, टूट रही है, टूट रही है)
   5. वर्षा ··(आ रहा है, आ रही है, आ रही है)
   6. पेड़···(उखड़ रही है, उखड़ रहा है, उखड़ रहे है)
   7. हम बचाव इंतजाम ··(कर रहा हूँ, कर रहे है, कर रहे हो)

2. काली छपी क्रियाओं को अपूर्ण वर्तमान काल मे लिखो—

   सूरज **उठना**। किरणें **फैलना**। ओस **चमकना**। हवा में उष्णता **आना**। पक्षियो का संगीत प्रिय **होना**। किसान खेतों मे काम **करना**। सकड़ों मजदूर ईख **काटना**। औरतें पशुओं के लिए चारा **ढूँढना**। बच्चे पाठशाला में **पढ़ना**। वे आलसी **सोना**।

3. इन वाक्यों को वहुवचन में लिखो—
   1. बच्चा पक्षी की बोली सुन रहा है।
   2. यह लड़का चिड़िया को पकडने के लिए लसा लगा रहा है।
   3. यह लड़की पिंजड़े मे लालमुनिया पाल रही है।
   4. पुलिस वाला डाकू को जीप मे ले जा रहा है।
   5. यह सज्जन यात्री को चाय दे रहा है।

तुम जान गए

1. अपूर्ण वर्तमान काल को तात्कालिक वर्तमान काल भी कहते है।
2. वोलने के तत्काल वाद जो काम होता है उस को बताने के लिए अपूर्ण वर्तमान का प्रयोग करते है।
3. अपूर्ण वर्तमान काल मे भी क्रियाओं में कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

क्रियाओं का संदिग्ध वर्तमान काल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. हम यहाँ है, बच्चे घर पर है, खूब धूडधड़ाका होता होगा।
2. तूफान आ रहा है, समुद्र मे ऊँची लहरें उठती होगी।

पहले वाक्य में क्या बात कही गई है? यही न कि माता-पिता घर पर नही है, बच्चे शोर मचाते होंगे। अच्छा बताओ, यह बात देख कर कही गई है या अनुमान लगाकर? यह बात अनुमान लगाकर कही गई है न? अतः यह

वात निश्चित भी हो सकती है और अनिश्चित भी हो सकती है। कहने वाला सदेह करता है कि धूमधडाका होता है। सो, इस की वात निश्चित नही है सदिग्ध है और ऐसी सदिग्ध वात (निश्चित नही है) कहने के लिए क्रिया का सदिग्ध काल का प्रयोग करता है। 'होता होगा', 'होना' क्रिया का सदिग्ध वर्तमान काल है। तो वर्तमान समय की सदिग्ध वात कहने के लिए क्रियाओं के सदिग्ध वर्तमान काल का प्रयोग करते है। दूसरे वाक्य मे 'उठती होगी' क्रिया किस काल मे है? 'उठती होगी' क्रिया सदिग्ध वर्तमान काल मे है। ठीक।

नोट—सदिग्ध वर्तमान काल को सामान्य वर्तमान काल भी कहते हैं।

'होना' क्रिया का संदिग्ध वर्तमान काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं होता होऊँगा	हम होते होगे
2. द्वितीय पुरुष	तू होता होगा	तुम होते होगे
3. अन्य पुरुष	वह होता होगा	वे होते होगे
आदर-सूचक	'आप'	आप होते होगे
	'जी'	पिताजी होते होगे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं होती होऊँगी	हम होती होंगी
2. द्वितीय पुरुष	तू होती होगी	तुम होती होंगी
3. अन्य पुरुष	वह होती होगी	वे होती होंगी
आदर-सूचक	'आप'	आप होती होगी
	'जी'	माताजी होती होगी

नोट—भिन्न-भिन्न लिंग के कर्त्ता हों तो क्रिया को पुंलिग बहुवचन में लिखते है।

अभ्यास

कोष्ठकों मे लिखी क्रियाओं को सदिग्ध वर्तमान काल में लिखो—

1. किशन पाठशाला नही आया है, वह···(खेलन)
2. महेश कक्षा मे है, वह ··(पढना)
3. माता जी वाहर गई है, अब ··(आना)
4. पिताजी अभी तक नही आए, वे काम ··(करना)
5. वावू गहरी नीद मे हँसता है, वह परियों का सपना ··(देखना)
6. आज मुन्ना का जन्मदिन है, माँ मिठाई ··(वनाना)
7. वादल गरजता है, कही पानी ··(पड़ना)
8. मीरा घर पर नही है, कही···(खेलना)

तुम जान गए

1. वर्तमान काल के तीन रूप हैं—

(क) सामान्य वर्तमान काल

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल या तात्कालिक वर्तमान काल

(ग) संदिग्ध वर्तमान काल

2. वर्तमान काल में क्रियाओं में कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है।

वर्तमान काल



अब आओ क्रियाओं के भूतकाल को देखें और उस के रूपों में विकार आने के कारणों को पहचानें।

'होना' क्रिया के भूतकाल का सहायक रूप

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. पहले हमारे देश में रेलगाड़ी थी।

2. अधिकांश लोग रेल द्वारा ही यात्रा करते थे।

पहले वाक्य में 'थी' 'होना' क्रिया का एक रूप है जो भूतकाल का बोध कराता है। ऊपर के वाक्य में यह मुख्य क्रिया है, यह अकेले आया है और इससे भूतकाल की एक निश्चित स्थिति या बात का बोध होता है 'पहले' रेलगाड़ी थी।

दूसरे वाक्य में देखो—'करते थे' में 'थे' 'करना' क्रिया के रूपान्तर करने में सहायता करता है तो, 'थी' 'होना' क्रिया के भूतकाल के रूप···

(क) अकेले आने से एक निश्चित स्थिति का बोध करते हैं।

(ख) अन्य क्रियाओं के भूतकाल बनाने में सहायता करते हैं।

अतः ये भूतकाल के सहायक रूप हैं।

'होना' क्रिया के भूतकाल के सहायक रूप

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं था	हम थे
2. द्वितीय पुरुष	तू था	तुम थे
3. अन्य पुरुष	वह था	वे थे
आदर-सूचक	'आप'	आप थे
	'जी'	पिताजी थे

	स्त्रीलिंग	
1. प्रथम पुरुष	मैं थी	हम थी
2. द्वितीय पुरुष	तू थी	तुम थी
3. अन्य पुरुष	वह थी	वे थी
आदर-सूचक	'आप'	आप थी
	'जी'	माताजी थी

अभ्यास

1. खाली जगहों में क्रियाओं के उचित रूप लिखो—

    1. श्रीकृष्ण जी और सुदामा···(था, थी, थी, थे)
    2. राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न भाई· (था, थे, थी, थी)
    3. श्री सीताजी रामजी की पत्नी ··(था, थे, थी, थी)
    4. दशरथजी अयोध्या के राजा ··(था, थे, थी, थीं)
    5. रावण लका का राजा···(था, थे, थी, थी)
    6. विभीषण रामभक्त···(था, थे, थी, थी)
    7. श्री हनुमान जी वीर···(था, थे, थी, थी)
    8. वसिष्ठजी राजकुमारों के गुरु···(था, थे, थी, थी)
    9. विश्वामित्रजी क्रोधी ऋषि···(था, थे, थी, थी)
    10. कौशल्या जी राम की माता···(था, थे, थी, थी)
    11. जटायु पक्षी ··(था, थे, थी, थी)
    12. वाल्मीकि जी आदि कवि···(था, थे, थी, थी)
    13. तुलसीदास जी रामचरितमानस के रचयिता···(था, थे, थी, थी)
    14. भरतजी केकई के पुत्र···(था, थे, थी, थी)
    15. सुमित्रा जी के दो पुत्र···(था, थे, थी, थी)

2. खाली जगहों को 'होना' क्रिया के भूतकाल के सहायक रूप से पूरा करो—

    1. पाडु के पाँच पुत्र···(होना)
    2. कौरवगण कुटुम्ब···(होना)
    3. श्रीकृष्ण जी भगवान···(होना)
    4. शकुनि मामा···(होना)
    5. भीम बलवान ··(होना)
    6. अर्जुन धनुर्धारी···(होना)
    7. युधिष्ठिर जी विद्वान ·(होना)
    8. नकुल और सहदेव भी भाई···(होना)
    9. द्रौपदी पत्नी···(होना)
    10. द्रोणाचार्य जी राजकुमारों के गुरु···(होना)

11. अभिमन्यु वीर पुत्र…(होना)
12. व्यासजी महाभारत के रचयिता…(होना)
13. महात्मा गांधी जी गीता के पाठक…(होना)
14. कस दुष्ट मामा…(होना)
15. होलिका दुष्ट बुआ…(होना)

क्रियाओं के अपूर्ण भूतकाल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. कल रात को जब मेरी नीद खुली तो वर्षा हो रही थी।
2. सवेरे आठ बजे नहाकर आया तो रमेश उठ रहा था।

पहले वाक्य मे क्या बात कही गई है ? यही न कि वर्षा हो रही थी ? अच्छा बताओ, कल वर्षा हो रही थी ? 'जब मेरी नीद खुली' तब न। क्या वर्षा होकर समाप्त हो गई थी ? वर्षा समाप्त नहीं हुई थी न, हो रही थी। तो भूतकाल मे होते हुए काम को बताने के लिए क्रियाओं के अपूर्ण भूतकाल का प्रयोग करते है।

दूसरे वाक्य मे रमेश कब उठ रहा है ? 'जब मै नहाकर आया' न ? देखो 'जब नहाकर आया' से एक निश्चित समय का बोध हो रहा है। अत: रमेश एक निश्चित समय पर उठने का काम कर रहा है। 'उठ रहा है' क्रिया से काम का पूरा होने की बात या अधूरा रहने की बात मालूम नही होती, पर काम के होने की बात मालूम होती है।

तो क्रिया के जिस रूप से, बीते हुए समय मे, एक निश्चित वक्त पर होते हुए काम का बोध होता है, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते है।

नोट—प्रथम वाक्य मे 'होना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल है।

दूसरे वाक्य मे 'उठना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल है।

क्रियाओ के अपूर्ण भूतकाल मे दो रूप है।

आओ अपूर्ण भूतकाल का प्रथम रूप देखें

'होना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल

पुलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं हो रहा था	हम हो रहे थे
2. द्वितीय पुरुष	तू हो रहा था	तुम हो रहे थे
3. अन्य पुरुष	वह हो रहा था	वे हो रहे थे
आदर-सूचक	'आप'	आप हो रहे थे
	'जी'	पिताजी हो रहे थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हो रही थी	हम हो रही थी
2. द्वितीय पुरुष	तू हो रही थी	तुम हो रही थी
3. अन्य पुरुष	वह हो रही थी	वे हो रही थी
आदर-सूचक	'आप'	आप हो रही थी
	'जी'	माताजी हो रही थी

'उठना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल (प्रथम रूप)

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठ रहा था	हम उठ रहे थे
2. द्वितीय पुरुष	तू उठ रहा था	तुम उठ रहे थे
3. अन्य पुरुष	वह उठ रहा था	वे उठ रहे थे
आदर-सूचक	'आप'	आप उठ रहे थे
	'जी'	पिताजी उठ रहे थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठ रही थी	हम उठ रही थी
2. द्वितीय पुरुष	तू उठ रही थी	तुम उठ रही थी
3. अन्य पुरुष	वह उठ रही थी	वे उठ रही थी
आदर-सूचक	'आप'	आप उठ रही थी
	'जी'	माताजी उठ रही थी

नोट—अपूर्ण भूतकाल मे क्रियाओं के लिंग-वचन कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते है। यदि एक वाक्य कर्ता पुंलिंग हो और एक स्त्रीलिंग तो क्रिया पुंलिंग बहुवचन मे लिखी जाती है। जैसे—कुत्ता और बिल्ली खेल रहे थे।

अभ्यास

खाली जगहों मे क्रियाओं के उचित रूप भरो—

1. तुम बीमार···(हो रहा था, हो रहे थे, हो रही थी)
2. नानी दस बजे···(जा रहा था, जा रही थी, जा रही थी)
3. रात···(हो रही थी, हो रहा था, हो रहे थे)
4. जब पाठशाला ··(आ रहा था, आ रही थी, आ रहे थे)
5. तब लीला ··(खेल रहा था, खेल रहे थे, खेल रही थी)
6. तरकारी ··(पक रहा था, पक रहे थे, पक रही थी)
7. माताजी आटा ··(सान रही थी, सान रहे थे, सान रहा था)

2. क्रियाओं को अपूर्ण भूतकाल में लिखो—

1. जब पानी ··(बरसना), शीतल···(पढ़ना)
2. पक्षी की जान ··(जान) बच्चों को खेल···(सूझना)
3. जब आप···(जागना) मैं ··(सोना)
4. वे मजदूर बरसात मे भी काम···(करना)
5. मछुए मछली · (मारना)
6. यात्री धूप में ··(चलना)
7. बतख पानी में ··(तैरना)
8. आप क्या···(करना)

याद रखो

अपूर्ण भूतकाल के इस रूप से (प्रथम रूप से) पता चलता है कि बीते हुए समय में, एक निश्चित वक्त पर काम हो रहा था।

अब आओ क्रियाओ के अपूर्ण भूतकाल का दूसरा रूप देखें।

अपूर्ण भूतकाल का दूसरा रूप (द्वितीय रूप)

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. पहले मजदूरों पर अत्याचार होता था।
2. जब मोहन स्वस्थ था तो वह सबसे आगे उठता था।

पहले वाक्य में कहा गया है—'मजदूरों पर अत्याचार होता था', क्या हुआ अत्याचार एक ही बार होकर समाप्त हो गया था ? नही समाप्त हुआ था न ? वह (पहले) हमेशा होता था। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में—'मोहन का सबसे आगे उठना' एक आदत-सी थी जो वह हमेशा करता था। तो, जब हम पहले की बीतती हुई बात या घटना को बताना चाहते हैं तब हम अपूर्ण भूतकाल के द्वितीय रूप प्रयोग करते है। इस काल से बात या घटना का पूरा होना मालूम नही होता है।

'होना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल (द्वितीय रूप)

पुल्लिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं होता था	हम होते थे
2. द्वितीय पुरुष	तू होता था	तुम होते थे
3. अन्य पुरुष	वह होता था	वे होते थे
आदर-सूचक	'आप'	आप होते थे
	'जी'	पिताजी होते थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मै होती थी	हम होती थी
2. द्वितीय पुरुष	तू होती थी	तुम होती थी
3. अन्य पुरुष	वह होती थी	वे होती थी
आदर-सूचक	'आप'	आप होती थी
	'जी'	माताजी होती थी

'उठना' क्रिया का अपूर्ण भूतकाल (द्वितीय रूप)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1 प्रथम पुरुष	मैं उठता था	हम उठते थे
2. द्वितीय पुरुष	तू उठता था	तुम उठते थे
3. अन्य पुरुष	वह उठता था	वे उठते थे
आदर-सूचक	'आप'	आप उठते थे
	'जी'	पिताजी उठते थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठती थी	हम उठती थी
2. द्वितीय पुरुष	तू उठती थी	तुम उठती थी
3. अन्य पुरुष	वह उठती थी	वे उठती थी
आदर-सूचक	'आप'	आप उठती थी
	'जी'	माताजी उठती थी

नोट—1. अपूर्ण भूतकाल के इस रूप मे भी क्रिया के लिंग-वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं।

2. यदि वाक्य मे एक कर्ता स्त्रीलिंग हो और एक कर्त्ता पुलिंग हो तो क्रिया पुलिंग बहुवचन मे होती है। जैसे—

कुत्ता और बिल्ली खेलते थे।

अभ्यास

1. कोष्ठकों मे लिखी गई क्रियाओं को अपूर्ण भूतकाल द्वितीय रूप मे लिखो—

जब मैं दस साल का था तो मोहन के घर (जाना)। उसके घर और कई दोस्त (आना)। हम साथ (खेलना) साथ (पढ़ना)।

मोहन के पिताजी मिठाई (लाना)। उसकी माताजी फूल (देना)। कभी-कभी भारी शोर (मचना) चुन्नु (गाना) और बबलू तबला (बजाना) मुन्नु (चिल्लाना) इस पर मोहन की नानी (बिगड़ना) और सब को लाठी से

(पीटना) । हम नहीं (रोना) बल्कि दूर भागकर (खिलखिलाना) । यार क्या कहूँ ! बड़ा मजा (आना) ।

मोहन के पिताजी हमको हमेशा पिकनिक पर ले (जाना) हम स्नान (करना) बालू पर (खेलना) और शाम को घर (लौटना) ।

2. इन वाक्यो को बहुवचन में लिखो—

1. यह लड़का मछली को तैरते देखता था ।
2. मेरे पड़ोसी को देखो वह बहुत मेहनत करता है ।
3. धोबी टट्टू पर मोटरी लाद रहा था ।
4. बिल्ली अपने बच्चे को मुंह मे दबाए भागती थी ।
5. मुर्गी अपने चूजे को दाना चुगाती है ।

याद रखो

1. अपूर्ण भूतकाल के दो रूप होते हैं—
   (क) प्रथम रूप से एक निश्चित समय पर होते हुए काम का बोध कराते है ।
   (ख) दूसरे रूप से पता चलता है कि काम का होना या करना एक आदत-सी थी, वह पहले हमेशा होता था ।
2. अपूर्ण भूतकाल के दोनो रूपो मे क्रिया के लिग-वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते है ।
3. वर्तमान काल के तीनो रूपों मे भी क्रिया के लिग-वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते है ।

अब आओ, भूतकाल के उन रूपों को देखें, जिन से काम के पूरा होने की बात मालूम होती है और उन मे क्यों विकार आता है ।

सामान्य भूतकाल

इन वाक्यों को पढ़ो —

1. सुरेश के फेल होने से मोहन को बहुत दुख हुआ ।
2. बादल के गर्जन से मुन्ना चीख कर उठा ।

पहले वाक्य से पता चलता है कि मोहन को दुख हुआ । मोहन को कब दुख हुआ ? समय तो मालूम नहीं है, पर बीते हुए समय मे दुख होने की बात पूरी हुई है ।

इसी तरह दूसरे वाक्य से पता चलता है कि मुन्ना 'उठा' । वह एक कारण से उठा, अर्थात् बादल के गर्जन से 'उठा' पर समय निश्चित नही है कि कब 'उठा' । मुन्ना के उठने का काम बीते हुए समय में पूर्ण हो जाता है ।

नोट—क्रिया के जिस रूप से, बीते हुए समय मे पूर्ण हुए कार्यों का पता

चुके, पर समय निश्चित न हो, उस को क्रिया का सामान्य भूतकाल कहते हैं।

'होना' क्रिया का रूप 'हुआ' और 'उठना' क्रिया का रूप 'उठा' सामान्य भूतकाल के हैं।

'होना' क्रिया का सामान्य भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1 प्रथम पुरुष	मैं हुआ	हम हुए
2 द्वितीय पुरुष	तू हुआ	तुम हुए
3 अन्य पुरुष	वह हुआ	वे हुए
आदर-सूचक	'आप'	आप हुए
	'जी'	पिताजी हुए

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हुई	हम हुईं
2 द्वितीय पुरुष	तू हुई	तुम हुईं
3. अन्य पुरुष	वह हुई	वे हुईं
आदर-सूचक	'आप'	आप हुईं
	'जी'	माताजी हुईं

नोट—'होना' क्रिया के इस रूप में कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है—

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठा	हम उठे
2. द्वितीय पुरुष	तू उठा	तुम उठे
3. अन्य पुरुष	वह उठा	वे उठे
आदर-सूचक	'आप'	आप उठे
	'जी'	पिताजी उठे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठी	हम उठीं
2. द्वितीय पुरुष	तू उठी	तुम उठीं
3. अन्य पुरुष	वह उठी	वे उठीं
आदर-सूचक	'आप'	आप उठीं
	'जी'	माताजी उठीं

नोट—क्रियाओं का सामान्य भूतकाल उनके भूतकालिक कृदन्त से बनता है।

(सकर्मक) 'खाना' क्रिया का सामान्य भूतकाल

पुंलिग-स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं ने खाया	हमने खाया
2. द्वितीय पुरुष	तू ने खाया	तुम ने खाया
3. अन्य पुरुष	उसने खाया	उन्होने खाया
आदर-सूचक	'आप'	आप ने खाया
	'जी'	पिताजी या माताजी ने खाया

देखो

1. सकर्मक क्रिया मे कर्त्ता के साथ 'ने' परसर्ग लगता है।
2. अन्य पुरुष (वह) के साथ परसर्ग के आने से 'उसने' और बहुवचन मे (वे) 'उन्होंने' होते है। ('यह'—'इसने' और 'ये'—'इन्होंने' होते हैं)
3. पुंलिग और स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ इसका रूपान्तर समान है।
4. 'खाना' क्रिया का कर्म नही है और इसका रूप सभी पुरुषो में 'खाया' ही है।
5. *'खाया' खाना क्रिया का भूतकालिक कृदन्त है। अतः सामान्य* भूतकाल भूतकालिक कृदन्त से बना काल है।

आओ एक मजे की बात देखें

सामान्य भूतकाल में—

(क) अकर्मक क्रियाओं के लिंग-वचन, कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते है।

(ख) सकर्मक क्रियाओ के लिंग-वचन, कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होते है।

अकर्मक क्रिया में विकार

इन वाक्यों को पढो—

1. मेरा भैया सवेरे उठा।
2. मुन्नी देर से उठी।
3. लड़के सात बजे उठे।
4. लड़कियाँ अभी तक नही उठी।

अच्छा बताओ तो देखूँ, एक ही क्रिया के भिन्न-भिन्न रूप क्यों हैं? इसलिए कि, पहले वाक्य में 'मेरा भैया' कर्त्ता पुंलिग एकवचन है, 'उठो' क्रिया भी पुंलिग एकवचन है।

दूसरे वाक्य में—'मुन्नी' कर्त्ता स्त्रीलिंग एकवचन है, 'उठी' क्रिया भी स्त्रीलिंग एकवचन है। तीसरे वाक्य में—'लड़के' कर्त्ता पुंलिंग बहुवचन है; 'उठे' क्रिया भी पुंलिंग एकवचन में है। चौथे वाक्य में—'लड़कियाँ' कर्त्ता स्त्रीलिंग बहुवचन में है, 'उठीं' क्रिया भी स्त्रीलिंग बहुवचन में है। 'उठना' कैसी क्रिया है? 'उठना' अकर्मक क्रिया है न? यो अकर्मक क्रियाओं के लिंग-वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं। ठीक।

सकर्मक क्रियाओं में कर्म के लिंग-वचन के अनुसार

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. दीदी ने भात खाया।
2. माँ ने दो आम खाए।
3. भैया ने खीर खाई।
4. बाबू ने लीचियाँ खाईं।

पहले वाक्य में कर्त्ता कौन है? 'दीदी' कर्त्ता है न? 'दीदी' का लिंग और वचन क्या है? 'दीदी' स्त्रीलिंग एक वचन है। ठीक। अब 'खाया' क्रिया का लिंग और वचन बताओ। 'खाया' क्रिया पुंलिंग एकवचन है। फिर कर्त्ता स्त्रीलिंग और क्रिया पुंलिंग क्यों? अच्छा प्रश्न करो, कर्म को जानने के लिए दीदी ने क्या खाया? दीदी ने भात खाया। 'भात' शब्द 'खाया' क्रिया का कर्म है। 'भात' कर्म का क्या लिंग और वचन है? भात शब्द पुंलिंग एकवचन है न। फिर क्रिया पुंलिंग एकवचन है और कर्म पुंलिंग एकवचन है। क्या तुम बता सकते हो, क्रिया के लिंग-वचन किस के अनुसार है? हाँ, क्रिया के लिंग-वचन कर्म के लिंग-वचन के अनुसार है। अन्य वाक्यों में भी देखो, 'दो आम खाये', 'खीर खाई' और 'लीचियाँ खाईं'। तो सकर्मक क्रियाओं के सामान्य भूतकाल में कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

नोट—सामान्य भूतकाल भूतकालिक कृदन्त से बना काल है। भूतकालिक कृदन्त से बने अन्य कालों में भी कर्म के कारण ही परिवर्तन आता है। इसका उल्लेख आगे करते हैं।

अभ्यास

1. कोष्ठकों में लिखी अकर्मक क्रियाएँ है, इनको सामान्य भूतकाल में लिखो—
   1. मैं गत सप्ताह ''(आना)
   2. वह पिछली रात खूब ' (रोना)
   3. मास्टर जी छुट्टी पर ' (जाना)
   4. माताजी दस बजे . (सोना)
   5. बिजली रात में'''(कटना)

6. पक्षी चीखते-चीखते मर…(जाना)
7. उस रात भारी वर्षा…(आना)
8. नदियाँ उमड़…(जाना)
9. घर मे पानी भर…(जाना)
10. खेत की सारी सब्जियाँ बह…(जाना)

2. कोष्ठकों मे लिखी सकर्मक क्रियाएँ है, इनको सामान्य भूतकाल मे लिखो—

1. मैंने पाठ…(पढना)
2. नौकरानी ने साडी…(धोना)
3. लड़कों ने फल…(तोड़ना)
4. नाना ने क्या घर…(बनवाना)
5. बढ़ई ने अलमारी बना…(देना)
6. बच्चो ने रोटियाँ नहीं…(लेना)
7. किसने चिट्ठियाँ…(भेजना)
8. दीदी ने बहुत गहने…(खरीदना)

यदि वाक्य में कर्म के साथ 'को' परसर्ग आए तो

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. दीदी ने गुड़िया फेंक दी।
2. मुन्नी ने गुड़िया को फेंक दिया।

पहले वाक्य में कौन-सा शब्द कर्म है? 'गुड़िया' शब्द कर्म है न? 'गुड़िया' स्त्रीलिंग कर्म के साथ क्रिया का क्या रूप है? 'दी' क्रिया भी स्त्रीलिंग है न? दूसरे वाक्य मे देखो, 'गुड़िया' स्त्रीलिंग कर्म के साथ 'फेंक दिया' पुलिंग क्रिया क्यों है? हाँ, इसलिए कि 'गुड़िया' कर्म के तुरन्त बाद 'को' परसर्ग आया है। तो, कर्म के साथ 'को' परसर्ग के आने से क्रियाओं को पुलिंग एकवचन मे लिखते हैं।

अभ्यास

खाली स्थानों को, क्रियाओं के उचित रूप से पूरा करो—

1. माली ने क्यारियों को…। (सींची, सींचा, सींचे)
2. हमने कुत्तों को… (भगा दी, भगा दिया, भगा दिए)
3. माताजी ने दाल-पुरी… (पकाई, पकाईं, पकाया)
4. नानी ने उसकी कहानी नहीं…(सुना, सुनी, सुने)
5. हम ने रंगबिरंगी तितलियों को…(पकड़ी, पकड़ी, पकड़ा)
6. अध्यापिका ने छात्राओं को… (बुलाई, बुलाया, बुलाईं)
7. मालिक ने नौकर को…(भेजी, भेजा, भेजी)

8. क्या आपने परियों को ··? (देखी, देखे, देखा)

9. महिलाओं ने उस अभिनेत्री का स्वागत · (की, किया, किए)

10. लीला ने अपनी पुस्तकें···(फाड़ दिया, फाड़ दी, फाड़ दी)

यदि एक वाक्य में एक से अधिक कर्म और भिन्न-भिन्न लिंग-वचन के हों।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मामी ने दाल, भात और आलू पकाया।

2. नाना ने आम, केले और लीचियाँ भेजीं।

पहले वाक्य मे देखो—कितने कर्म है? तीन कर्म है न? प्रत्येक कर्म के लिंग-वचन देखो भिन्न-भिन्न है। क्रिया का लिंग-वचन क्या है? 'पकाया' क्रिया पुलिंग एकवचन मे है। ठीक। दूसरे वाक्य में भी तीन भिन्न लिंग-वचन के कर्म हैं। बताओ क्रिया का लिंग-वचन किस कर्म के अनुसार है? 'भेजीं' क्रिया के लिंग-वचन अन्तिम कर्म 'लीचियाँ' के लिंग-वचन के अनुसार है न? ठीक।

तो, जिस वाक्य में एक से अधिक भिन्न-भिन्न लिंग-वचन के कर्म हों, तो क्रिया अन्तिम कर्म (जो 'और' के बाद आता हो) के अनुसार होती है।

अभ्यास

खाली स्थानों क्रियाओं के उचित रूप लिखो—

1. नाना ने बगीचे में अनेक पौधे और बेलें···(रोपी, रोपे, रोपीं)

2. पिताजी ने गिलास, देगची और परात ··(खरीदी, खरीदे, खरीदीं)

3. दूकानदार ने चावल और चीनी ··(भेजी, भेजे, भेजीं)

4. अध्यापक ने कलम और कापियाँ ··(माँगे, माँगी, माँगीं)

5. हमने पत्र, पत्रिकाएँ और चिट्ठियाँ ··(देखे, देखी, देखीं)

6. उन्होंने आपकी कविताएँ और आपके चित्र···(देखी, देखे, देखीं)

7. नानी ने साड़ी, ओढ़नी और लहँगा···(खरीदा, खरीदे खरीदीं)

8. क्या आपने उनके नौकरों को···(देखी, देखा, देखे)

9. दादा ने नई धोती · (माँगा, माँगे, माँगी)

10. माँ ने पंडितों को भोजन···(दिया, दिये, दी)

अपवाद क्रियाएँ

तुम जानते हो—

अपवाद का अर्थ है—जो नियम के विरुद्ध प्रयोग होता है। लाना, बोलना, भूलना, समझना—ये क्रियाएँ सकर्मक है। परन्तु भूतकाल में अकर्मक क्रियाओं की तरह प्रयोग होती हैं।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. सुरेश ने पुस्तक खरीदी।

2. महेश पुस्तक लाया।

पहले वाक्य में 'खरीदी' क्रिया का कर्म 'पुस्तक' है। 'पुस्तक' कर्म स्त्रीलिंग एकवचन है, इसलिए 'खरीदी' क्रिया भी स्त्रीलिंग एकवचन है। दूसरे वाक्य में 'लाया' क्रिया का कर्म 'पुस्तक' ही है। परन्तु वह पुलिंग एकवचन में है? यह क्यों? इसलिए कि 'लाना' क्रिया सकर्मक होते हुए अकर्मक क्रिया की तरह प्रयोग होती है। अतः 'लाना' क्रिया अपवाद है। तो जो क्रियाएँ सकर्मक होते हुए अकर्मक क्रियाओं की तरह प्रयोग होती है, वे क्रियाएँ अपवाद है। अपवाद क्रियाओं में कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

देखो

'लाया' क्रिया के साथ 'ने' विभक्ति नहीं आई है। अपवाद क्रियाओं का सामान्य भूतकाल—

1. मोहन फल लाया—मीना पानी लाई—बच्चे फल लाये।
2. दादू पाठ बोला—दादी किस्सा बोली—लड़के झूठ बोले।
3. मैं पाठ भूला—लीला सब कुछ भूली—बच्चे रास्ता भूले।
4. भैया बात समझा—दीदी सार समझी—हम सब समझे।

अभ्यास

खाली स्थानों को, क्रियाओं के उचित रूप से पूरा करो—

1. नाना जी अमरूद—(लाया, लाए, लाई)
2. लीला—(बोला, बोले, बोली) मैंने अमरूद नहीं—(खाया, खाये, खाई)
3. नानी जी सेव—(लाये, लाई, लाई) मोहन—(बोला, बोले, बोली)
4. माँ—(समझा, समझी, समझी) कि मैं झूठ—(बोला, बोले, बोली)
5. हम—(समझा, समझे, समझी) तुम सब कुछ—(भूला, भूली, भूले)
6. अध्यापक ने—(पूछा, पूछी, पूछे) तुम क्या—? (समझा, समझे, समझी)
7. बच्चे सुन्दर फूल—(लाया, लाये, लाई) मैंने स्वीकार—(किया, किए, की)।
8. माताजी क्या—(बोला, बोली, बोली) कि तुम रूठ—(गया, गये, गई)

तुम जान गये

1. क्रियाओं का सामान्य भूतकाल भूतकालिक कृदन्त से बना काल है।
2. सामान्य भूतकाल में अकर्मक क्रियाओं के लिंग और वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं।
3. अकर्मक क्रियाओं के लिंग और वचन कर्म के लिंग और वचन के अनुसार नहीं होते है।

4. यदि कर्म के साथ 'को' परसर्ग आये तो क्रिया पुलिंग-एकवचन में लिखते है।
5. यदि वाक्य मे भिन्न-भिन्न लिंग और वचन के कर्म हो तो क्रिया के लिंग-वचन अन्तिम कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं।
6. अपवाद क्रियाएँ सकर्मक होते हुए भी अकर्मक क्रियाओं की तरह प्रयोग होती है।
7. सामान्य भूतकाल से काम का पूरा होने की बात मालूम होती है, परन्तु समय मालूम नही होता है।

याद रखो

1. सामान्य भूतकाल की तरह क्रियाओं के भूतकाल के और रूप है जो भूतकालिक कृदन्त से बनते है। और सकर्मक क्रिया से उन रूपों में भी कर्म के लिंग और वचन के अनुसार विकार आता है। आओ देखें—

क्रियाओं के आसन्न भूतकाल

1. लीला को सरदर्द हुआ है।
2. मोहन का बच्चा उठा है।
3. श्याम ने पेडा खाया है।

बताओ पहले वाक्य में क्या बात कही गई है? लीला को सरदर्द होने की बात कही गई है न? 'सरदर्द' कब हुआ? जिस वक्त हम बोलते है उसी वक्त दर्द हो गया है। 'हुआ है' क्रिया के रूप से मालूम होता है कि दर्द थोड़ी घड़ी पहले हुआ और अभी भी है। दूसरे वाक्य से पता चलता है कि 'बच्चा' का उठना अभी-अभी पूरा हुआ है। तीसरे वाक्य में 'खाया है' क्रिया से पता चलता है कि श्याम ने कुछ ही मिनट पूर्व पेड़ा खाकर समाप्त किया है और पेड़े का स्वाद अभी भी उसके मुह मे है। तो, क्रियाओ के आसन्न भूतकाल से मालूम होता है कि काम थोड़ी घड़ी पहले होकर पूरा हुआ है।

'होना' क्रिया का आसन्न भूतकाल

पुलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं हुआ हूँ	हम हुए हैं।
2. द्वितीय पुरुष	तू हुआ है	तुम हुए हो।
3. अन्य पुरुष	वह हुआ है	वे हुए हैं।
आदर-सूचक	'आप'	आप हुए हैं
	'जी'	पिताजी हुए हैं।

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हुई हूँ	हम हुई है
2. द्वितीय पुरुष	तू हुई है	तुम हुई हो
3. अन्य पुरुष	वह हुई है	वे हुई है
आदर-सूचक	'आप'	आप हुई हैं।
	'जी'	माताजी हुई है।

(अकर्मक) 'उठना' क्रिया का आसन्न भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठा हूँ	हम उठे हैं।
2. द्वितीय पुरुष	तू उठा है	तुम उठे हो।
3. अन्य पुरुष	वह उठा है	वे उठे है।
आदर-सूचक	'आप'	आप उठे है।
	'जी'	पिताजी है।

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठी हूँ	हम उठी है
2. द्वितीय पुरुष	तू उठी है	तुम उठी हो
3. अन्य पुरुष	वह उठी है	वे उठी है
आदर-सूचक	'आप'	आप उठी है
	'जी'	माताजी उठी है

सकर्मक 'खाना' क्रिया का आसन्न भूतकाल

पुंलिंग-स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैंने खाया है	हमने खाया है
2. द्वितीय पुरुष	तू ने खाया है	तुमने खाया है
3. अन्य पुरुष	उसने खाया है	उन्होंने खाया है
आदर-सूचक	'आप'	आपने खाया है
	'जी'	पिताजी/माताजी ने खाया है

देखो

सकर्मक क्रिया मे सभी पुरुषों के साथ 'खाया है' आया है। और कर्म नही।

अकर्मक क्रियाओ के लिंग-वचन कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार है।

अभ्यास

1. क्रियाओं का उचित रूप चुन कर खाली स्थानों मे भरो—
   1. महिलाएँ मंदिर मे (बैठी है, बैठी है, बैठे है)
   2. बच्चों ने सारी लीचियाँ ··(तोड़ डाले, तोड़ डाली, तोड़ डाली)
   3. माली ने साग-सब्जियाँ, फल और कई पौधे ··(रोपे हैं, रोपी है, रोपी है)
   4. हम आपके काम ··(कर चुके, कर चुका, कर चुकी)
   5. पानी किधर से टपक ··(रहा है, रही है, रहे हैं)
   6. हमने जलेबियाँ ··(खाई है, खाई है, खाये हैं).
   7. किसान ने मकई की खेती···(किया है, की है, किये हैं)
   8. माताजी ने उन साड़ियों को···(देखी है, देखा है, देखी हैं)
   9. मैंने चिट्ठी ··(दिया, दी, दिये) और उन्होंने धन्यवाद···(कहा, कही, कहे)
   10. कोष्ठकों मे दी गई क्रियाओं को आसन्न भूतकाल मे लिखो—
2. कोष्ठकों मे दी गई क्रियाओ को आसन्न भूतकाल मे लिखो—
   1. मैंने एक सुन्दर कहानी···(पढ़ना)
   2. उसके हाथ पत्थर तले···(दबाना)
   3. रसोई मे खिचड़ी ··(पकाना)
   4. तू (जागना) लाला···(सोना)
   5. दरवाजे···(टूटना) छतें···(उजड़ना)

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. यह बच्चा लीची लाया है।
2. मैंने पौधा लगाया है।
3. उसने मुर्गी को दाना दिया है।
4. लड़के ने कहानी पढ़ी है।
5. चिडिया का घोंसला गिर गया है।

तुम जान गए

1. आसन्न भूतकाल के क्या रूप है।
2. क्रियाओ के आसन्न भूतकाल से पता चलता है कि काम कुछ ही देर पहले होकर पूरा हुआ है।
3. अकर्मक क्रियाओ मे कर्त्ता के लिंग-वचन और सकर्मक क्रियाओं मे कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

याद रखो

1. क्रियाओं के सामान्य भूतकाल से पता चलता है कि कार्य पूरा हुआ परन्तु समय निश्चित नही होता है, कुछ ही पल पहले या बहुत दिन पहले।
2. आसन्न भूतकाल से भी काम का पूरा होना मालूम होता है और वह कुछ ही देर पहले।

अब आओ क्रियाओं का पूर्ण भूतकाल देखें।

पूर्ण भूतकाल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. कल रात शीला को भारी पेटदर्द हुआ था।
2. मोहन का बच्चा आधी रात को उठा था।
3. कल महेश ने परांठा खाया था।

पहले वाक्य में क्या बात कही गई है? यही न कि शीला को पेटदर्द हुआ था? क्या अभी तक दर्द होता ही है? नही, दर्द कल रात को हुआ और होकर समाप्त भी हो गया था। तो 'हुआ था' क्रिया के रूप से बीते हुए समय में किसी काम का शुरू होकर पूरा भी हो जाना मालूम होता है।

दूसरे वाक्य मे 'उठा था' क्रिया से भी 'उठना' क्रिया का शुरू होना और पूरा भी हो जाना मालूम होता है। तीसरे वाक्य में 'खाया था' क्रिया से खाने का काम पूरा हो जाना मालूम होता है। तो क्रियाओ के जिस रूप से बीते हुए समय में काम का शुरू होकर पूरा भी हो जाने का बोध होता है, उस रूप को पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

'होना' क्रिया का पूर्ण भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मै हुआ था	हम हुए थे
2. द्वितीय पुरुष	तू हुआ था	तुम हुए थे
3. अन्य पुरुष	वह हुआ था	वे हुए थे
आदर-सूचक	'आप'	आप हुए थे
	'जी'	पिताजी हुए थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हुई थी	हम हुई थी
2. द्वितीय पुरुष	तू हुई थी	तुम हुई थी
3. अन्य पुरुष	वह हुई थी	वे हुई थी
आदर-सूचक	'आप'	आप हुई थीं
	'जी'	माताजी हुई थी

अकर्मक 'उठना' क्रिया का पूर्ण भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठा था	हम उठे थे
2. द्वितीय पुरुष	तू उठा था	तुम उठे थे
3. अन्य पुरुष	वह उठा था	वे उठे थे
आदर-सूचक	'आप'	आप उठे थे
	'जी'	पिताजी उठे थे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठी थी	हम उठी थी
2. द्वितीय पुरुष	तू उठी थी	तुम उठी थी
3. अन्य पुरुष	वह उठी थी	वे उठी थी
आदर-सूचक	'आप'	आप उठी थी
	'जी'	माताजी उठी थी

(सकर्मक) 'खाना' क्रिया का पूर्ण भूतकाल

पुंलिग-स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैंने खाया था	हमने खाया था
2. द्वितीय पुरुष	तू ने खाया था	तुमने खाया था
3. अन्य पुरुष	उसने खाया था	उन्होंने खाया था
आदर-सूचक	'आप'	आपने खाया था
	'जी'	पिताजी/माताजी ने खाया था।

देखो

सभी पुरुषो के साथ 'खाया था' है और कर्म नही है। कर्म के आने से, इसमें कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

अभ्यास

1. क्रियाओं का उचित रूप चुन कर खाली स्थानो को पूरा करो—
   1. राम ने धनुप—(तोड़े थे, तोड़ा था, तोड़ी थी)
   2. सीता ने राम के गले मे जयमाला—(पहनाया था, पहनाई थी, पहनाई थी)
   3. राम ने रावण को—(मारा था, मारे थे, मारी थी)
   4. कृष्णजी ने कस को—(मारा था, मारे थे, मारी थी)
   5. हरिश्चन्द्र ने सत्य का व्रत नही—(छोडी थी, छोड़ा था, छोड़े थे)
   6. गाँधी जी भी सत्य मार्ग पर—(चला था, चले थे, चली थी)

7. जवाहरलाल ने बच्चों से प्यार—(किया था, की थी, किये थे)

2. कोष्ठकों में दी गई क्रियाओं को पूर्ण भूतकाल में लिखो—

1. लीला गत साल फेल हो—(जाना)
2. बहन जी बीमार हो—(जाना)
3. हमने देवी-देवताओं की पूजा—(करना)
4. माता जी ब्राह्मणों को दक्षिणा—(देना)
5. यात्रियों ने मंदिर की परिक्रमा—(करना)
6. यात्री अपनी कांवर को शीशों, फूलों और गुरियों से—(सजाना)
7. माली ने पेड़, पौधे और लताएँ—(रोपना)

3. इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

1. पँवरिया ढोलक लेकर आया था।
2. चुहिया बिल के भीतर बैठी थी।
3. मैंने बंदर को धूप सेंकते देखा था।
4. तू ने प्रार्थना गाई थी।
5. मुन्नी ने कली को तोड़ दिया।

तुम जान गये

1. क्रियाओं का पूर्ण भूतकाल क्या है।
2. पूर्ण भूतकाल से पता चलता है कि बीते हुए समय में, काम शुरू होकर पूरा भी हो जाता है।
3 अकर्मक क्रियाओं में कर्त्ता के लिंग-वचन के अनुसार और सकर्मक क्रियाओं में कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

याद रखो

1. सामान्य भूतकाल से पता चलता है कि काम पूरा हुआ परन्तु समय निश्चित नहीं होता है, कुछ ही पल पहले या बहुत दिन पहले।
2. आसन्न भूतकाल से भी काम का पूरा होना मालूम होता है और वह कुछ ही देर पहले।
3. पूर्ण भूतकाल से पता चलता है कि काम शुरू होकर पूरा भी हो जाता है, काफी देर पहले।

अब आओ क्रियाओं का संदिग्ध भूतकाल देखें।

संदिग्ध भूतकाल

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. कल मदन नहीं आया था, वह बीमार हुआ होगा।
2. रात को बत्ती जली थी, बच्चा उठा होगा।

3. बच्चे रसोईघर में थे, किसी ने फल खाया होगा।

पहले वाक्य में क्या बात कही गई है ? यही न कि मदन बीमार होगा ? मदन कब बीमार हुआ होगा ? 'कल' (बीते हुए समय मे) बीमार हुआ होगा। क्या निश्चित है कि मदन बीमार था ? नही, निश्चय नही है मदन बीमार था। तो 'हुआ होगा' क्रिया अनिश्चित बात कहने के लिए प्रयोग करते है।

दूसरे वाक्य में मालूम होता है कि बच्चा उठा होगा, परन्तु निश्चय नही, क्योंकि घर में और कई लोग होते है, उनमें से कोई भी उठा होगा; परन्तु संदेह है कि बच्चा उठा होगा। तो 'बच्चा' के उठने की बात एक संदिग्ध बात है।

तीसरे वाक्य मे फल को खा जाने की बात मे भी सदेह है। किसी ने भी बच्चों को फल खाते नही देखा, केवल सदेह है क्योकि बच्चे रसोईघर में थे।

तो, बीते हुए समय मे संदिग्ध बातों को बताने के लिए क्रियाओं के संदिग्ध भूतकाल का प्रयोग करते है।

'होना' क्रिया का सदिग्ध भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं हुआ होऊँगा	हम हुए होंगे।
2. द्वितीय पुरुष	तू हुआ होगा	तुम हुए होंगे।
3. अन्य पुरुष	वह हुआ होगा	वे हुए होंगे।
आदर-सूचक	'आप'	आप हुए होंगे।
	'जी'	पिताजी हुए होंगे।

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं हुई होऊँगी	हम हुई होंगी
2. द्वितीय पुरुष	तू हुई होगी	तुम हुई होंगी
3. अन्य पुरुष	वह हुई होगी	वे हुई होंगी
आदर-सूचक	'आप'	आप हुई होंगी।
	'जी'	माताजी हुई होंगी।

(अकर्मक) 'उठना' क्रिया का संदिग्ध भूतकाल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठा होऊँगा	हम उठे होंगे।
2. द्वितीय पुरुष	तू उठा होगा	तुम उठे होंगे।
3. अन्य पुरुष	वह उठा होगा	वे उठे होंगे।

आदर-सूचक	'आप'	आप उठे होंगे।
	'जी'	पिताजी उठे होंगे।

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं उठी होऊँगी	हम उठी होंगी।
2. द्वितीय पुरुष	तू उठी होगी	तुम उठी होगी।
3. अन्य पुरुष	वह उठी होगी	वे उठी होंगी।
आदर-सूचक	'आप'	आप उठी होंगी।
	'जी'	माताजी उठी होंगी।

(सकर्मक) 'खाना' क्रिया का संदिग्ध भूतकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैंने खाया होगा	हमने खाया होगा
2. द्वितीय पुरुष	तूने खाया होगा	तुमने खाया होगा
3. अन्य पुरुष	उसने खाया होगा	उन्होंने खाया होगा
आदर-सूचक	'आप'	आपने खाया होगा
	'जी'	पिताजी/माताजी ने खाया होगा

देखो—सभी पुरुषों के साथ 'खाया होगा' आया है, और कर्म नहीं है। कर्म के आने से, इसमें कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

अभ्यास

1. क्रियाओं का उचित रूप चुनकर खाली स्थानों को पूरा करो—
   1. राजन पाठशाला गया है, वह—(पढ़ता होगा, पढ़ते होंगे, पढ़ता होऊँगा)
   2. माता जी काम पर —(गई होगी, गई होंगी, गई होऊँगी)
   3. नाना ने पैसा —(दिये होंगे, दिया होगा, दी होगी)
   4. पेटदर्द हुआ है। जली रोटी —(खाया होगा, खाई होगी, खाई होंगी)
   5. बच्चे पिकनिक पर गये थे, बालू पर—(खेला होगा, खेले होंगे, खेली होंगी)
   6. आज मुन्ना का जन्मदिन है। माताजी ने मिठाइयाँ—(बनाई होंगी, बनाई होगी, बनाये होंगे)
   7. चाचा आँगन में था, उसने हमारी बातें—(सुना होगा, सुनी होगी, सुनी होंगी)
2. कोष्ठकों में दी गई क्रियाओं को संदिग्ध भूतकाल में लिखो—
   1. राजू शीघ्र नहीं आया था, जरूर—(खेलना)

2. बच्चा नींद में हँसता था, उसने सपना—(देखना)
3 आज दिवाली नहीं जो मिठाइयाँ—(बनना)
4. फलवाला आया था, लीचियाँ—(लाना)
5 अध्यापक ने ठीक बताया था, तू गलत—(समझना)
6. कमला देर से आई थी, बस नहीं—(देखना)

3. इन वाक्यों को बहुवचन में लिखो—

1. चाचा मिठाई लाया होगा।
2. घर की छत उड़ गई होगी।
3. कपड़ा दह गया होगा।
4. सड़क टूट गई होगी।
5. लड़के ने पुस्तक दी होगी।
6 मैंने सपना देखा होगा।

तुम जान गये

1. संदिग्ध भूतकाल का क्या रूप है।
2. क्रियाओं के संदिग्ध भूतकाल से बीते हुए समय की संदिग्ध बातों का बोध होता है।
3. संदिग्ध भूतकाल में भी अकर्मक क्रियाओं के लिंग-वचन कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं और सकर्मक क्रियाओं के लिंग-वचन कर्म के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं।

याद रखो

1. सामान्य भूतकाल से काम का पूरा होना मालूम होता है, पर समय निश्चित नहीं होता।
2 आसन्न भूतकाल में काम भूतकाल में शुरू होकर पूरा भी होता है।
3. संदिग्ध भूतकाल से पता चलता है कि बीते हुए समय में काम का होना सम्भव था पर निश्चित नहीं था।
4. सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्ण और संदिग्ध भूतकाल में अकर्मक क्रियाओं में कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है, सकर्मक क्रियाओं में कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

आओ अब क्रियाओं के भविष्यत् काल को देखें।

भविष्यत् काल

तुम जानते हो—
भविष्यत् काल से आने वाले दिनों की बात का बोध होता है।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. आगामी साल में पास होऊँगा (हूँगा)।

2. कल सुबह सबसे पहले उठूँगा।

3. सवेरे रोटी खाई थी, शाम को भात खाऊँगा।

पहले वाक्य मे क्या बात कही गई है ? परीक्षा मे पास होने की बात कही गई है न ? कब परीक्षा में पास होना है ? आगामी साल (आने वाला साल) परीक्षा में पास होना है। ठीक तो, आने वाले साल की बात को भविष्य की बात कहते हे और क्रिया के जिस रूप (होऊँगा) से भविष्य की बात मालूम होती है, उसको क्रिया का भविष्यत् काल कहते है।

दूसरे वाक्य में देखो 'कल सुबह' से आने वाली सुबह की बात मालूम होती है। तीसरे वाक्य मे भी आने वाली शाम की बात मालूम होती है। क्रिया के रूप को देखो 'खाऊँगा'। वाक्य में कर्त्ता लुप्त है पर मालूम होता है कि प्रथम पुरुष बोलता है। तो, क्रिया के जिस रूप से आने वाले दिन, समय आदि की बात का बोध हो, उस रूप को क्रिया का भविष्यत् काल कहते है।

'होना' क्रिया का भविष्यत् काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं होऊँगा	हम होंगे
2. द्वितीय पुरुष	तू होगा	तुम होगे
3. अन्य पुरुष	वह होगा	वे होंगे
आदर-सूचक	'आप'	आप होंगे
	'जी'	पिताजी होंगे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं होऊँगी	हम होंगी
2. द्वितीय पुरुष	तू होगी	तुम होगी
3. अन्य पुरुष	वह होगी	वे होंगी
आदर-सूचक	'आप'	आप होंगी
	'जी'	माताजी होंगी

(अकर्मक) 'उठना' क्रिया का भविष्यत् काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं उठूँगा	हम उठेंगे

2. द्वितीय पुरुष	तू उठेगा	तुम उठोगे
3. अन्य पुरुष	वह उठेगा	वे उठेंगे
आदर-सूचक	'आप'	आप उठेंगे
	'जी'	पिताजी उठेंगे

स्त्रीलिंग

1 प्रथम पुरुष	मैं उठूंगी	हम उठेंगी
2. द्वितीय पुरुष	तू उठेगी	तुम उठोगी
3 अन्य पुरुष	वह उठेगी	वे उठेंगी
आदर-सूचक	'आप'	आप उठेंगी
	'जी'	माताजी उठेंगी

(सकर्मक) 'खाना' क्रिया का भविष्यत् काल

पुंलिंग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. प्रथम पुरुष	मैं खाऊँगा	हम खाएँगे
2. द्वितीय पुरुष	तू खाएगा	तुम खाओगे
3. अन्य पुरुष	वह खाएगा	वे खाएँगे
आदर-सूचक	'आप'	आप खाएँगे
	'जी'	पिताजी खाएँगे

स्त्रीलिंग

1. प्रथम पुरुष	मैं खाऊँगी	हम खाएँगी
2. द्वितीय पुरुष	तू खाएगी	तुम खाओगी
3. अन्य पुरुष	वह खाएगी	वे खाएँगी
आदर-सूचक	'आप'	आप खाएँगी
	'जी'	माता जी खाएँगी

देखो—(i) भविष्यत् काल मे सभी क्रियाओं के लिंग-वचन कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते है।

(ii) अकारान्त धातु—'उठ' में मात्राओं के मेल से भविष्यत् काल बनता है। जैसे—उठ + (ऊँ) गा = उठूंगा, उठ + (ए) गा = उठेगा, आदि।

(iii) आकारान्त धातु 'खा' में स्वरो के मेल से भविष्यत् काल बनता है। जैसे—खा + ऊँगा = खाऊँगा, खा + एगा = खाएगा। खा + एगे — खाएँगे, खा + ओगे = खाओगे।

(iv) ओकारान्त और ईकारान्त धातुओं में भी स्वरों के मेल से भविष्यत् काल बनता है। जैसे—सो + ऊँगा = सोऊँगा, सो + एँगे = सोएँगे, आदि
पी + ऊँगा = पीऊँगा, पी + ओगे = पीओगे आदि

अच्छा एक बात बताओ—

'होना' क्रिया का भविष्यत् काल का रूप और किन कालों मे आता है ? हो— 'होऊँगा' 'होगा' 'होंगे' आदि क्रियाओं के रूप संदिग्ध कालों में भी आते है। ठीक।

तो 'होऊँगा' 'होगा' 'होंगे' आदि क्रियाओं का रूपान्तर करने मे सहायक होते है और अकेले आने पर ये भविष्यत् काल की स्थिति का बोध कराते हैं।

अभ्यास

1. क्रियाओं का उचित रूप खाली स्थानों में भरो—

   1. माता जी गगातालाव—(जाएगी, जाएँगी, जाऊँगी)
   2. नाना और नानी घर—(आएगी, आएगा, आएँगे)
   3. मेहनत करो, फल अवश्य—(मिलेगी, मिलेगा, मिलोगे)
   4. बादल गरज रहा है, बारिश—(होगा, होगी, होंगी)
   5. आप अगले रविवार को कहाँ—(जाओगे, जाएँगे, जाएगा)
   6. माता जी सवेरे ही भोजन—(बनाएगी, बनाएँगी, बनाएँगे)
   7. मैं खेती—(करेंगे, करूँगा, करेंगे)
   8 तुम क्या—(सीखोगे, सीखेंगे)

2. कोष्ठकों में दी गई क्रियाओं को भविष्यत् काल में लिखो—

   1. मैं कल सवेरे—(उठना)। दाँत साफ—(करना)—(नहाना) चाय—(पीना) बाल—(बनाना) कपड़ा—(पहनना) फिर पाठशाला—(आना)
   2. दुख के दिन—(जाना) सुख के दिन—(आना)
   माली बाग—(लगाना) क्यारियाँ—(सीचना) ऋतु—(आना) फूल—(लगना) और फल—(लगना)

3. इन वाक्यो को बहुवचन मे लिखो—

   1. लड़का गाय को चारा देगा।
   2. हमारे देश मे खेती लहलहाएगी।
   3. सब्जी की कमी नही होगी।
   4. बाग मे फल होगा।
   5. नदी में मछली होगी।

6. तराई में पशु का पालन होगा।

7. पहाड़ पर महल बनेगा।

याद रखो

1. काम के नाम को क्रिया कहते हैं।
2. क्रियाओं के अनेक रूप है—साधारण रूप, धातु और कृदन्त।
3. क्रियाओं के दो भेद हैं—अकर्मक और सकर्मक।
   कुछ क्रियाएँ अपवाद है। कुछ क्रियाएँ सहायक क्रियाएँ भी होती हैं और उनसे संयुक्त बनती है।
4. सभी क्रियाओं मे कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।
5. क्रियाओं के होने के तीन काल हैं—वर्तमान, भूत और भविष्यत् काल।
6. *काल समय को कहते है और क्रियाओं के समय के कारण जो रूपान्तर* होते हैं उनको क्रियाओं के काल कहते हैं।
7. वचन के अनुसार होते है।
8. सकर्मक क्रियाओं के लिंग-वचन, वर्तमान काल, भविष्यत् काल और अपूर्ण भूतकाल मे कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार होते हैं परन्तु भूत-कालिक कृदन्त से बने कालों में सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध कर्म के लिंग-वचन के अनुसार विकार आता है।

क्या तुम्हें पूरी-पूरी तरह याद है ?

1. संज्ञा शब्द किस को कहते हैं और उन मे क्यों विकार आता है ?
2. सर्वनाम शब्द किस को कहते हैं, उनका क्या काम है और उनमें किस कारण विकार आता है ?
3. विशेषण शब्द किसको कहते हैं और किस वर्ण के विशेषणो मे विकार आता है ?
4. क्रिया शब्द क्या है और उनमे किन-किन कारणों से विकार आता है ?
5. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्दों मे विकार आता है और इनको *विकारी शब्द* कहते है।

अब आओ, अगले खण्ड मे उन शब्दो को देखें जिन मे विकार नही आता है। जिन शब्दों में विकार नही आता उनको **अविकारी शब्द** कहते है।

खंड 5

अविकारी शब्द

क्रिया-विशेषण

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मेरा भाई आज आएगा।
2. तुम यहां बैठो।
3. कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
4. पानी थोड़ा-थोड़ा गिरता है।
5. तुम बुरा मत सुनो।

पहले वाक्य में क्या बात कही गई है? हां, कहा गया है कि भाई आएगा। ठीक। अब प्रश्न करो, इस तरह, "भाई कब आएगा? भाई 'आज' आएगा। 'आज' शब्द से दिन का पता चलता है? 'आज' शब्द से दिन (समय) का पता चलता है न? अर्थात्—भाई के आने का दिन (समय) मालूम होता है। यों 'आज' शब्द से क्रिया के होने का समय (काल) मालूम होता है।

दूसरे वाक्य में देखो, 'यहां बैठो' शब्दों से एक स्थान (जगह) पर [illegible] होता है। यों 'यहां' शब्द से 'बैठना' क्रिया करने के [illegible] बोध होता है।

तीसरे वाक्य में 'धीरे-धीरे' शब्द से 'चलना' [illegible] मालूम होती है।

(2) आप आगे-आगे चलें। (स्थान)

(3) नौकर शीघ्र आ गया। (रीति)

(4) वह घर बहुत बिगड़ गया है। (परिमाण)

(5) बिना हाथ धोए नहीं खाओ। (निषेध)

नोट—क्रिया-विशेषणों में लिंग, वचन और परसर्ग के कारण विकार नहीं आता है। आओ कुछ क्रिया-विशेषणों का अभ्यास करें—

1. काल (समय) बताने वाले—
   अब, कब, जब, तब, प्रतिदिन, हमेशा, कभी-कभी, सवेरे, फिर, एकदम।
2. स्थान को बताने वाले—
   आगे, पीछे, नीचे, यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, इधर-उधर, किधर, जिधर, बाहर, भीतर।
3. रीति बताने वाले—
   जल्दी, झटपट, ज्यो, त्यों, ठीक, पैदल, अवश्य।
4. परिमाण (कम या अधिक) बताने वाले—
   सब, थोडा, कुछ, बहुत, लगभग, बस, और।
5. निषेध और स्वीकार करने वाले—
   नही, न, मत, जी, हाँ।

आओ क्रिया विशेषण बनाएँ

कुछ शब्दो को जोड़कर भी क्रिया-विशेषण बनाते है, जैसे दिन+भर=दिनभर, प्रेम+पूर्वक=प्रेमपूर्वक, अपने+आप=अपने-आप।

चलते-चलते, गिरते-उठते, रोते-रोते, चिल्ला-चिल्लाकर, थोडा-बहुत, कम-से-कम।

अभ्यास

1. उचित क्रिया-विशेषण से खाली स्थानों को पूरा करो—
   थर-थर, बार-बार, मत, रोते-रोते।

1. नेवला अपने बिल से···निकला, और चूहे को मार डाला।
2. भीगा कुत्ता···काँपता है।
3. वह मजदूर····· काम करता था।
4. ईख के कल्लों को····· काटो।
5. बच्चा······माँ को पुकारता था।
6. शावक ·····चलता है।
7. मुन्ना······सो गया।

सम्बन्धबोधक शब्द

[illegible]—

1. [illegible] है।

2. [illegible] है।

3. [illegible] नहीं गया था।

4. [illegible]।

[illegible]— 'घर' और 'सामने' शब्दों में एक सम्बन्ध मालूम होता है। [illegible] घर के—एक मन्दिर है,' तो हमारी बात स्पष्ट नहीं होती। [illegible] शब्द के आने से 'घर' और 'मन्दिर' का स्थान स्पष्ट रूप से [illegible] होता है।

[illegible] शब्द 'घर' से सम्बन्ध [illegible]—बात को स्पष्ट करने में सहायता करता है।

दूसरे वाक्य में देखो—'ओर' और 'नदी' शब्द में एक सम्बन्ध है।

तीसरे वाक्य में—'बाहर' शब्द 'कमरे' शब्द से सम्बन्ध रखता है।

चौथे वाक्य में—'नीचे' और 'पेड़' शब्द में भी सम्बन्ध है।

तो, जो शब्द वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताते हैं, उनको सम्बन्धबोधक शब्द कहते हैं। 'सामने', 'ओर', 'बाहर', और 'नीचे' सम्बन्धबोधक शब्द हैं।

आओ, सम्बन्धबोधक शब्दों का प्रयोग करें।

वाक्यों को क्रम से देखो—

1. 'घर के सामने'

'घर' और 'सामने' शब्दों के बीच कौन-सा [illegible] प्रयोग हुआ है न?

तो, इन सम्बन्धबोधक शब्दों के साथ भी [illegible] है। जैसे—

(2) आप आगे-आगे चलें। (स्थान)

(3) नौकर शीघ्र आ गया। (रीति)

(4) वह घर बहुत बिगड़ गया है। (परिमाण)

(5) बिना हाथ धोए नहीं खाओ। (निषेध)

नोट—क्रिया-विशेषणों में लिंग, वचन और परसर्ग के कारण विकार नहीं आता है। आओ कुछ क्रिया-विशेषणों का अभ्यास करें—

1. काल (समय) बताने वाले—
अब, कब, जब, तब, प्रतिदिन, हमेशा, कभी-कभी, सवेरे, फिर, एकदम।

2. स्थान को बताने वाले—
आगे, पीछे, नीचे, यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, इधर-उधर, किधर, जिधर, बाहर, भीतर।

3. रीति बताने वाले—
जल्दी, झटपट, ज्यों, त्यों, ठीक, पैदल, अवश्य।

4. परिमाण (कम या अधिक) बताने वाले—
सब, थोड़ा, कुछ, बहुत, लगभग, बस, और।

5. निषेध और स्वीकार करने वाले—
नहीं, न, मत, जी, हाँ।

आओ क्रिया विशेषण बनाएँ

कुछ शब्दों को जोड़कर भी क्रिया-विशेषण बनाते हैं, जैसे दिन+भर= दिनभर, प्रेम+पूर्वक=प्रेमपूर्वक, अपने+आप=अपने-आप।

चलते-चलते, गिरते-उठते, रोते-रोते, चिल्ला-चिल्लाकर, थोड़ा-बहुत, कम-से-कम।

अभ्यास

1. उचित क्रिया-विशेषण से खाली स्थानों को पूरा करो—
थर-थर, बार-बार, मत, रोते-रोते।

1. नेवला अपने बिल से···निकला, और चूहे को मार डाला।
2. भीगा कुत्ता···काँपता है।
3. वह मजदूर····· काम करता था।
4. ईख के कल्लों को····· काटो।
5. बच्चा····· माँ को पुकारता था।
6. शावक ·····चलता है।
7. मुन्ना·····सो गया।

सम्बन्धबोधक शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. घर के सामने मन्दिर है।
2. मुन्ना नदी की ओर गया है।
3. वह कमरे से बाहर नहीं गया था।
4. यात्री पेड़ तले बैठ गया।

पहले वाक्य में देखो—'घर' और 'सामने' शब्दों में एक सम्बन्ध मालूम होता है। यदि हम कहते 'घर के—एक मन्दिर है,' तो हमारी बात स्पष्ट नहीं होती। देखो 'सामने' शब्द के आने से 'घर' और 'मन्दिर' का स्थान स्पष्ट रूप से मालूम होता है।

तो, 'सामने' शब्द 'घर' से सम्बन्ध रखकर—बात को स्पष्ट कहने में सहायता करता है।

दूसरे वाक्य में देखो—'ओर' और 'नदी' शब्द में एक सम्बन्ध है।

तीसरे वाक्य में—'बाहर' शब्द 'कमरे' शब्द से सम्बन्ध रखता है।

चौथे वाक्य में—'तले' और 'पेड़' शब्द में भी सम्बन्ध है।

तो, जो शब्द वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताते है, उनको सम्बन्ध-बोधक शब्द कहते है। 'सामने', 'ओर', 'बाहर', और 'तले' सम्बन्धबोधक शब्द है।

आओ, सम्बन्धबोधक शब्दों का प्रयोग करें।

वाक्यों को क्रम से देखो—

1. 'घर के सामने'

'घर' और 'सामने' शब्दों के बीच कौन-सा शब्द प्रयोग हुआ है? 'के' शब्द प्रयोग हुआ है न?

तो, इन सम्बन्धबोधक शब्दों के साथ भी 'के' या 'रे' शब्द प्रयोग होता है। जैसे—

घर के अन्दर	—	मेरे अन्दर
राम के साथ	—	हमारे साथ
नाना के लिए	—	तुम्हारे लिए

नीचे लिखे शब्दों को, ऊपर के उदाहरणों के आधार पर वाक्यों में प्रयोग करो—

आस-पास, कारण, आगे, पीछे, यहाँ, मारे, ऊपर, नीचे।

2. 'नदी की ओर'

'नदी' और 'ओर' के बीच कौन सा शब्द प्रयोग हुआ है?

'को' शब्द प्रयोग हुआ है न ?

1. खाली स्थानो को एक सम्बन्धबोधक शब्द से पूरा करो—

1. बालू चाँदी की तरह······ चमकती है।
2. उस पौधे के ···· पास उगेगा ।
3. नदियाँ समुद्र की ···· जाती है।
4. यात्री पेड़ · बैठ गया।
5. दूध वाले ने बोतल · ···दूध नही दिया।
6. कुत्ता, शेर की ·· हरिण पर कूद पड़ा।
7. हम धन के ···· प्यार चाहते हैं।
8. पैसा पानी की · बहाया गया।
9. तापमान मौसम के······रहेगा।
10. चौदह वर्ष के·· ···राम जी अयोध्या लौटे।

तुम जान गए

1. क्रिया-विशेषण क्या है ?
   क्रिया-विशेषण क्रियाओ की विशेषता बताते हैं।
2. सम्बन्धबोधक शब्द क्या है ?
   सम्बन्धबोधक शब्द वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताते है।

समुच्चयबोधक शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. गाय **और** बकरी एक ही घर में हैं।
2. मोहन आया **पर** देर तक नही रहा।
3. **यदि** मैं घर पर नही होता **तो** सब कुछ नष्ट हो जाता।
4. रीता स्कूल नही आयी थी **क्योंकि** उसकी माँ बीमार थी।
5. **चाहे** फल खाओ **चाहे** मिठाई, सब कुछ है।

पहले वाक्य मे देखो—'**और**' शब्द दो शब्दों—'गाय'—'बकरी' को जोड़ रहा है—'गाय **और** बकरी'।

दूसरे वाक्य मे—'**पर**' शब्द दो वाक्यो—'मोहन आया' —'देर तक नही रहा' को जोड़ देता है।

तो जो दो शब्दो या वाक्यो को जोड़ते है उनको **संयोजक** कहते है। '**और**' '**पर**' संयोजक शब्द है।

इसी तरह अन्य वाक्यो मे देखो—'यदि', 'तो', 'क्योकि' 'चाहे' शब्द भी संयोजक हैं। ये अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व रखते है। आओ, इन

वाक्यों को क्रम से देखें।

वाक्य 1. गाय और बकरी।

'और' संयोजक शब्द केवल शब्दो को जोड़ने का काम करता है।
'तथा' 'एव' भी संयोजक शब्द है। शब्दों को जोड़ने का काम करते है।
जैसे—मिठाई तथा चाय से सत्कार किया जायगा।
पान, फूल एवं सुपारी लाए गए।

वाक्य 2. मोहन आया पर ···· रहा नही।

'पर' समुच्चयबोधक शब्द दो वाक्यों को जोडते हुए विरोधी बातों को बताने का काम भी करता है।

'मगर, लेकिन, परन्तु, बल्कि,' समुच्चयबोधक भी वाक्यों को जोड़ते हुए विरोधी बातों को बताते है। जैसे—

आदमी गरीब है परन्तु बेईमान नही।

वाक्य 3. यदि नही होता तो—नष्ट हो जाता।

'यदि'—'तो' 'समुच्चयबोधक शब्द वाक्य को जोड़ते हुए ठोस बात की ओर सकेत करने का काम भी करते है।

अगर, वो फिर, भी, तो भी, यद्यपि, तथापि सम्मुच्चयबोधक शब्द भी किसी ठोस बात की ओर सकेत करने के लिए प्रयोग करते है। जैसे—यद्यपि नौकरानी ने कपड़ा धोया तथापि मैल नही गया।

वाक्य 4. रीता स्कूल नही आई थी, क्योकि उसकी माँ बीमार थी।
तुम बता सकते हो रीता किस कारण स्कूल नहीं आई थी ? हाँ। क्योंकि उसकी माँ बीमार थी न।

तो—'क्योकि' समुच्चयबोधक शब्द वाक्यों को जोड़ते हुए कारण बताने का काम भी करता है।

'के लिए, कि, ताकि' समुच्चयबोधक शब्द भी कारण बताने के लिए प्रयोग करते है। जैसे—उसने डण्डा दिया ताकि पिताजी मुझे पीट सकें।

वाक्य 5. चाहे फल खाओ चाहे मिठाई ··।

'चाहे-चाहे' समुच्चय बोधक शब्द वाक्यों को जोडते हुए वस्तुओ या बातो को अलग-अलग बताने के लिए प्रयोग करते है।

न-न, या-या, नही तो, या, अथवा, आदि समुच्चयबोधक शब्द भी बातों को अलग-अलग बताने के लिए प्रयोग करते हैं। जैसे—दाल और भाजी के साथ चटनी अथवा अचार चलता है।

अभ्यास

1. इन समुच्चयबोधक शब्दों को वाक्यो को प्रयोग करो—
   और, तथा, बल्कि, फिर भी, तो भी, कि, के लिए न-न, नही तो, मगर, अगर, पर, यदि ।
2. खाली जगहो मे उचित समुच्चयबोधक भरो—
   क्योकि, नही तो, या कि, अगर, तो, यद्यपि, तथापि, मगर, बल्कि, न-न ।

1. ——तुम मेहनत करोगे——धन मिलेगा ।
2. अभी से करना सीखो——पछताना पड़ेगा ।
3. पानी उबालकर पीओ——उसमें कीटाणु है ।
4. भाई पेपसी——फान्ता लाओ, भारी प्यास लगी है ।
5. रामू ने कहा——उसकी बहन की शादी है ।
6. गाय ने——घास खाई——पानी पिया, यूँही पड़ी रही ।
7. ——कुलियों ने भारी मेहनत की——उनको धन नहीं मिला ।
8. शादी रविवार को है, शनिवार को कथा——हल्दी है ।
9. उन्होने बहुत बातें कही——मैंने कुछ नही कहा ।
10. उन्होने कहा——भूखो को भाषण की नहीं——भोजन की आवश्यकता है ।

याद रखो

1. समुच्चयबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं, उनमे किसी कारण विकार नही आता है ।
2. कुछ समुच्चयबोधक शब्द, शब्दों और वाक्यो को जोड़ते है ।
3. कुछ समुच्चयबोधक शब्द, वाक्यों या शब्दो को जोड़ते हुए वस्तुओं और बातों को अलग-अलग बताते है ।

तुम जान गए

1. समुच्चयबोधक शब्द किस तरह के शब्द है ।
2. एक वाक्य मे इन शब्दो का क्या-क्या काम है ।

विस्मयादिबोधक शब्द

इन वाक्यों को पढो—

1. आह ! जोर से घाव लगा ।
2. आहा ! कितनी सुन्दर तितली !
3. छि-छि ! कैसी खराब बात बोलता है !
4. हे ! कुत्ता ! भागो ।

1. पहले वाक्य में क्या बात कही गई है ? घाव लगने की बात कही गई है न ? अच्छा, यह बताओ, जब तुम को घाव लगता है तो कौन-सा शब्द मुंह से निकलता है ? 'आह !' 'आइयो !' आदि शब्द मुंह से निकलते है न ? ऐसे शब्दो से किस का बोध होता है ? यही न कि कोई चोट, घाव या दर्द हुआ है ?

बताओ तो देखूं, 'आह !' 'आइयो' शब्दों का क्या अर्थ है ? हाँ, इन शब्दों का कोई अर्थ नही परन्तु जब हमको दुख-दर्द होता है तो ऐसे शब्द यूंही मुंह से निकल जाते है । इन शब्दो को विस्मयादिबोधक शब्द कहते है ।

तो 'आह' 'आइयो' विस्मयादिबोधक शब्द है जो दुख (दर्द-शोक) के सूचक है ।

इन शब्दों को देखो—हाय ! ओफ ! हा ! हाय रे ! इनसे भी दुख- दर्द का बोध होता है । जैसे—

ओफ ! अँगुली कट गई ।

हा ! कांटा चुभ गया ।

2. दूसरे वाक्य मे देखो 'आहा !' शब्द से किस बात का बोध होता है ? एक खुशी या प्रसन्नता होने की बात मालूम होती है ! 'आहा' शब्द का भी कोई अर्थ नही, परन्तु जब हमको खुशी या प्रसन्नता होती है तो यह शब्द यूंही मुंह से निकल जाता है । तो, 'आहा !' विस्मयादिबोधक शब्द से खुशी या प्रसन्नता मालूम होती है ।

इस तरह—वाह-वाह ! खूब ! धन्य ! वाह शाबास ! ठीक ! अच्छा ! आदि विस्मयादिबोधक शब्द खुशी या प्रसन्नतासूचक है ।

3. तीसरे वाक्य मे देखो—छि-छि ! शब्द से कैसी बात का पता चलता है ? इससे एक खराब बात का पता चलता है न ? अच्छा एक बात बताओ, तुम कैसी बातों को पसन्द करते हो—अच्छी बातो को या खराब बातों को ? तुम अच्छी बातो को पसन्द करते हो न, और खराब बातों से घृणा करते हो ! अर्थात् खराब बातों को टालते हो, उनका तिरस्कार करते हो, है न ? और तिरस्कार या घृणा प्रकट करने के लिए तुम—छि ! छि ! थू ! राम-राम ! हट ! छी ! आदि का प्रयोग करते हो । तो इन विस्मयादिबोधक शब्दों से घृणा या तिरस्कार की बात मालूम होती है ।

4. चौथे वाक्य में देखो—'हे !' शब्द से डर लगने की बात मालूम होती है । जब हमको किसी से डर (विस्मय) होता है तो हमारे मुंह से ऐसे कितने ही शब्द निकल आते है । जैसे—ओह ! ओहो ! अरे, बाप ! बाप-रे-बाप ! आदि ये विस्मयादिबोधक शब्द विस्मय (डर) सूचक है ।

अभ्यास

1. खाली स्थानों को उचित विस्मयादिबोधक शब्दो से पूरा करो—हाय !

अरे ! धिक्कार ! छि-छि ! राम-राम ! वाह ! धन्य ! वाह ! ओफ् ! वाह-वाह ! ठीक !

1. ……! मेरा धन लूट लिया बेईमान ने ?
2. …… ! काली बिल्ली चल ! चल !
3. …… ! बकरी का बच्चा मर गया !
4. … …! कैसी दुर्गन्ध है, चलो यहाँ से !
5. ……! खूब कहा आप ने !
6. ……! ईश्वर तूने शुभ दिन दिखाया !
7. … …! वह मैला सूअर देख ।
8. … …! कैसी कडी ठण्ड पड़ती है !
9. ……! खूब ! कविता फिर सुनाओ ।
10. ……! क्या मजे की बात कही !

2. इन विस्मयादिबोधक शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो—
छि ! शाबाश ! बाप-रे-बाप ! हट ! वाह ! ओह !

याद रखो

1. जिन शब्दों से हमारे, सुख-दुख, शोक-हर्ष, खुशी-प्रसन्नता, प्यार-घृणा, आश्चर्य, डर-भय की बातों का बोध हो, तो उनको विस्मयादिबोधक शब्द कहते है ।

2. विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द है । इनमें किसी भी कारण विकार नही आता है ।

तुम जान गए

1. क्रिया-विशेषण अविकारी शब्द है ।
2. सम्बन्धबोधक शब्द अविकारी शब्द हैं ।
3. समुच्चयबोधक (संयोजक) अविकारी शब्द हैं ।
4. विस्मयादिबोधक शब्द अविकारी शब्द है ।

इन शब्दों में किसी भी कारण विकार नही आता है ।

खंड 6

शब्द-निर्माण (सन्धि)

तुम जानते हो—

1. रूढ़ि शब्दों के खंड नहीं होते है।

2. यौगिक शब्दों के खंड होते है और प्रत्येक खंड का एक अर्थ होता है। अब आओ देखें उन शब्दों को कैसे जोड़ते है।

इन वाक्यो को पढ़ो—

1. सूर्यास्त को देखो कितना भव्य लगता है।
2. विद्यार्थी मन लगाकर पढता है।
3. मुनीन्द्र जी शाम को नही आए।
4. योगीश जी सभा के प्रधान होंगे।
5. सिंधूर्मि फेन उड़ाती बह जाती है।
6. वधूत्सव के दिन लोग नही आए थे।

इन वाक्यो में काले छपे शब्दों को देखो—

वाक्य एक और दो में—'सूर्यास्त', 'विद्यार्थी'

'सूर्यास्त'—'सूर्य' और 'अस्त' के मेल से बना है।

'विद्यार्थी'—'विद्या' और 'अर्थी' के मेल से बना है।

बताओ तो देखूं, ये शब्द कैसे मिले हैं।

देखो—'सूर्य' शब्द का अन्त 'अ' ध्वनि से होता है।
'अस्त' शब्द का शुरू 'अ' ध्वनि से होता है।
'विद्या' शब्द का अन्त 'आ' ध्वनि से होता है।
'अर्थी' शब्द का शुरू 'अ' ध्वनि से होता है।

'अ' और 'आ' ध्वनियां (स्वर) एक ही स्थान के स्वर हैं, और ये पास-पास आए है।

तो, एक ही स्थान के दो स्वर पास-पास आएँ तो उनमें मेल होता है, जैसे, 'अ'+'अ'='आ' (ा)

'आ' + 'अ' = 'आ' (ा)

दोनों स्वरों के बदले एक दीर्घ (बड़ा, स्वर होता है।

दोनों स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसको संधि कहते हैं।

'सूर्यास्त' शब्द मे 'अ' और 'अ' की संधि है।

'विद्यार्थी' शब्द में 'आ' और 'अ' की संधि है।

अच्छा, अब बताओ — वाक्य तीन और चार में 'मुनीन्द्र' और 'योगीश' शब्दों में कौन-कौन से स्वर मिले हैं ?

देखो—मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र
योगी + ईश = योगीश

तो 'मुनीन्द्र' शब्द में 'इ' और 'इ' की संधि है, जैसे—

इ + इ = ई (ी)

एक ही स्थान के दो स्वर पास-पास आए हैं, और दोनों के बदले में एक दीर्घ स्वर हुआ है।

अब बताओ—वाक्य पाँच और छ. मे 'सिंधूर्मि' और 'वधूत्सव' शब्दों में कौन-कौन से स्वर मिले है ?

देखो—सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
वधू + उत्सव = वधूत्सव

तो, 'सिंधूर्मि' शब्द मे 'उ' और 'ऊ' की संधि है, जैसे—

'उ' + 'ऊ' = 'ऊ' (ू)

'वधूत्सव' मे शब्द मे 'ऊ' और 'उ' की संधि है, जैसे—

'ऊ + 'उ' = 'ऊ' (ू)

एक ही स्थान के दो स्वर पास-पास आए है, और दोनों के बदले मे एक दीर्घ स्वर हुआ है।

अभ्यास

1. इनको मिलाओ—

विद्या + आलय, महा + आत्मा, जल + आशय, उच्च + आयोग, शिष्ट + आचार, रवि + इन्द्र, मुनि + ईश्वर, परम + आनन्द, भानु + उदय, भू + ऊष्मा, प्रति + इच्छा।

2. इन शब्दों में दो-दो शब्द मिले हुए है, इनको अलग-अलग लिखो—

अरुणास्त, रामायण, धर्मात्मा, रवीन्द्र, महाशय, आत्मानन्द, विद्याभ्यास, कार्यालय, अनाथालय, परमार्थ, स्वार्थ, पर्वतारोही।

अब इन वाक्यों को पढ़ो —

1. धर्मेन्द्र जी एक बड़े कलाकार है।

2. उमेश के घर से आमंत्रण आया है।

3. आगामी मास मे हमारी पाठशाला का वार्षिकोत्सव है।

4. अहिल्या रूप और गुण मे सर्वोपरी थी।

देखो—वाक्य एक और दो में 'धर्मेन्द्र' और 'उमेश' शब्दों मे दो-दो शब्द है।

धर्म + इन्द्र

उमा + ईश

बताओ तो देखूं इन शब्दों में किन-किन स्वरों का मेल है। 'धर्मेन्द्र' शब्द मे 'अ' और 'इ' की संधि है, जैसे—

अ + इ = ए (े)

'उमेश' शब्द मे —'आ' और 'ई' की संधि है, जैसे—

आ + ई = ए (े)

याद रखो, अ, आ और इ, ई एक ही स्थान के स्वर नही है, ये निकटवर्ती स्वर है।

तो, अ, आ और इ, ई के मेल से ए (े) होता है।

वाक्य तीन और चार में—

अच्छा, अब बताओ, 'वार्षिकोत्सव' और 'सर्वोपरी' शब्द में किन-किन निकटवर्ती स्वरों का मेल है।

देखो, वार्षिक + उत्सव = वार्षिकोत्सव

सर्व + ऊपरी = सर्वोपरी

हाँ, 'वार्षिकोत्सव' मे — 'अ' और 'उ' की संधि है, जैसे—

अ + उ = ओ (ो)

'सर्वोपरी' में — 'अ' और ऊ' की संधि है, जैसे—

अ + ऊ = ओ (ो)

तो, 'अ', 'आ' और 'उ', 'ऊ' के मेल से 'ओ' (ो) होता है।

अभ्यास

1. इन शब्दों को मिलाओ—

राज + ईश, समुद्र + ऊर्मि, नीच + आशय, मुनि + ईश्वर, वक्र + उक्ति, वीर + इन्द्र, हरि + ईश।

2. इन शब्दों मे दो-दो शब्द मिले हैं। अलग-अलग लिखकर बताओ इन मे किन-किन स्वरों का मेल है।

महेश, कमलेश्वर, महेन्द्र, राजेन्द्र, सुरेश, महोत्सव, परोपकार, पुरुषोत्तम, अरुणोदय, परमेश्वर।

तुम जान गए

1. (क) एक ही स्थान के दो स्वर पास-पास आएँ तो उन में मेल होता है।

(ख) दो निकटवर्ती स्वर पास-पास आएँ तो उनमें भी मेल होता है।

2. स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसको संधि कहते हैं।

अब आओ आगे देखें, और किस विधि से शब्द बनाते हैं।

उपसर्ग और प्रत्यय

आओ कुछ ऐसे अक्षरों या शब्दों को देखें जिनको अन्य शब्दों के आगे लगाने से या अन्त में जोड़ने से एक नया शब्द बनता है।

उपसर्ग

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. सत्य प्रिय लगता है।
2. असत्य अप्रिय लगता है।

पहले वाक्य में देखो—'सत्य' 'सच' का अर्थ रखता है। और 'प्रिय' 'ठीक' 'अच्छा' का अर्थ रखता है।

दूसरे वाक्य में—'अ' अक्षर को आगे लगाने से—'असत्य' 'झूठ' का अर्थ रखने लगता है। और 'अप्रिय' 'ठीक नहीं' 'अच्छा नहीं' का अर्थ रखता है। तो जिस अक्षर या शब्द को अन्य शब्दों के आगे लगाते हैं, उसको उपसर्ग कहते है। भिन्न-भिन्न उपसर्ग भिन्न-भिन्न अर्थ रखते हैं, जैसे—'अ' उपसर्ग 'नहीं, निषेध' का अर्थ रखता है।

धर्म, अधर्म, विद्या, अविद्या।

1. इन शब्दों में 'अ' उपसर्ग लगाओ—

पवित्र, धूत, ज्ञात, सार, स्वस्थ, टल, लग, पर, भाव, योग्य, जड़, वैर, स्वीकार, प्राप्य, टूट, विकारी।

2. 'अन' उपसर्ग 'कमी', 'अभाव' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'अन' उपसर्ग लगाओ—

अर्थ, एकता, पढ़, जान, मोल, वन आदि।

यह ध्यान में रहे कि हिन्दी में 'अ' उपसर्ग केवल व्यजनों के आगे लगता है और 'अन' उपसर्ग स्वर और व्यजन दोनों के आगे लगता है।

3 'अप' 'खराब' या 'विरुद्ध' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'अप' उपसर्ग लगाओ—

मान, नाम, हरण, कीर्ति, यश, शकुन।

4. 'आ' 'समेत' या 'उलटा' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'आ' उपसर्ग लगाओ—

कार, चार, क्रमण, चरण, जन्म, लोक, गमन।

5. 'उप' 'समीप' और 'समान' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'उप' उपसर्ग लगाओ—

सर्ग, नाम, वेद, नेत्र, देश, निवेश, भेद, योग, भोग।

6. 'कम' 'थोड़ा' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'कम' उपसर्ग लगाओ—

जोर, कीमत, वख्त, हिम्मत, उम्र।

7. 'कु' 'खराब' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'कु' उपसर्ग लगाओ—

पुत्र, पात्र, कर्म, रूप।

8. 'खुश', 'अच्छा' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'खुश' उपसर्ग लगाओ—

हाल, खबरी, दिल, नसीब, किस्मत, बू।

9. 'दुर'-'दुष' 'कठिन' और 'दुष्ट' का अर्थ रखता है।

नोट—यदि, 'र' दो व्यंजनों के बीच आए तो रेफ (ॅ) हो जाता है।

जैसे—दुर + लभ = दुर्लभ।

इन शब्दों में 'दुर' उपसर्ग लगाओ—

बल, आधार, दशा, दिन, उपयोग, गम, गुण।

इन शब्दों में 'दुष' लगाओ—

[1] कर्म।

10. 'ना' 'कमी' या 'अभाव' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'ना' उपसर्ग लगाओ—

राज, दान, पास, लायक, पसन्द, साज, आस्तिक।

11. 'प्र' 'आगे' या 'अधिक' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'प्र' उपसर्ग लगाओ—

बल, स्थान, मुख, सिद्ध, योग, चार, लोभन, करण, लय, क्रिया।

12. 'प्रति' 'एक-एक' या 'विरुद्ध' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'प्रति' उपसर्ग लगाओ—

दिन, वादी, पक्षी, मास, वर्ष, ध्वनि, क्रिया, पल।

13. 'बद' 'बुरा' या 'खराब' का अर्थ रखता है।

इन शब्दों में 'बद' उपसर्ग लगाओ—

नाम, सूरत, बू, किस्मत।

3. इस पुस्तक का लेखक कौन है ?
4. मुन्नी का कपड़ा भड़कीला है।

पहले वाक्य में 'भलाई' शब्द को देखो।

'भला' शब्द विशेषण है। इसके 'अन्त' में 'आई' शब्द जोड़कर 'भलाई' संज्ञा बनी है, जैसे—

भला और आई=भलाई।

'भलाई' संज्ञा से 'भला' होने के गुण का बोध होता है। जिस शब्द या अक्षर को, किसी अन्य शब्द के अन्त में जोड़कर नया शब्द बनाते है उसको प्रत्यय कहते है।

तो 'आई' शब्द. प्रत्यय है जिससे शब्दों में जोड़कर संज्ञा बनाते है।

दूसरे वाक्य में 'तैयारी' शब्द मे 'ई' प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनी है, जैसे— तैयारी—तैयार और ई=तैयारी।

तीसरे वाक्य में 'लेख' शब्द में 'क' प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनी है। जैसे— लेख+क ='लेखक'

चौथे वाक्य में 'भड़क' संज्ञा में 'ईला' प्रत्यय जोड़कर विशेषण बना है, जैसे—भड़क+ईला=भड़कीला।

तो प्रत्यय जोड़कर संज्ञा और विशेषण बनाते है। भिन्न-भिन्न प्रत्यय भिन्न-भिन्न शब्दों से लगाते हैं। आओ संज्ञाएं बनाएं।

1. 'आई' प्रत्यय से गुण या भाव' का बोध होता है।
   इन शब्दों मे 'आई' जोड़ो—
   सच्चा, बड़ा, बुरा, ढीठ, चिकना, चतुर, पडित, कमा, लिख, पढ़, सुन, धुला, सिला, विदा, गहरा, चौड़ा, लम्बा, ऊँचा।
2. 'आव' प्रत्यय से भी गुण-भाव का बोध होता है।
   इन शब्दों में 'आव' प्रत्यय जोड़ो—
   लग, बढ़, बच, घुम, चुन, ठहर, तन।
3. 'ई' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता है।
   इन शब्दो मे 'ई' प्रत्यय जोड़ो—
   सवार, तैयार, मंजूर, मजदूर, दोस्त, दलाल, दुश्मन, नादान, सरदार, चाकर, नौकर, खेत, डाक्टर, चोर, जवान।
4. 'ता' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता है।
   इन शब्दों में 'ता' प्रत्यय जोड़ो—
   सुन्दर, विशाल, कुशल, उदार, मधुर, सुघड़, आवश्यक।
5. 'न' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता हैं।

इन शब्दों में 'न' प्रत्यय जोड़ो—
मिल, ले, दे, गठ, कुढ़क, चल, दह, मथ।

6. 'पन' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता है।
इन शब्दों से 'पन' प्रत्यय जोड़ो—
पागल, पीला, नीला, अधेड़, भोला, बहरा, अंधा।
'पा' प्रत्यय से भी गुण-भाव का बोध होता है। जैसे—मोटा, बूढ़ा, पूजा।

7. 'आवट' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता है।
इन शब्दों में 'आवट' प्रत्यय जोड़ो—
सजा, थक, बन, मिल, रुक।

8. 'आहट' प्रत्यय से गुण-भाव का बोध होता है।
इन शब्दो मे 'आहट' प्रत्यय जोड़ो—
सरसर, गड़गड़, चिल्ला, घबरा, जगमग, गुर्रा, झनझन।

अब आओ ऐसी संज्ञाएं बनाएं जिससे कर्त्ता भाव या स्थान का बोध होता है

1. 'क' प्रत्यय से कर्त्ता के भाव का बोध होता है।
इन शब्दो मे 'क' प्रत्यय जोड़ो—
लेख, बैठ, बोध, पाल, घात, नाश।

2. 'खोर', प्रत्यय से कर्त्ता का बोध होता है।
इन शब्दो मे 'खोर' प्रत्यय जोड़ो—
गम, चुगल, सूद, हराम, हलाल।

3. 'खाना' प्रत्यय से स्थान का बोध होता है।
इन शब्दों मे 'खाना' प्रत्यय जोड़ो—
कार, पागल, जेल, दवा, गरीब, दौलत, शराब।

4. 'गार' प्रत्यय से कर्त्ता का बोध होता है।
इन शब्दो मे 'गार' प्रत्यय जोड़ो—
मदद, गुनाह, याद, खिदमत।

5. 'दान' प्रत्यय से पात्र का बोध होता है।
इन शब्दों मे 'दान' प्रत्यय जोड़ो—
फूल, इत्र, राख, पाय।

6. 'वाला' प्रत्यय से कर्त्ता का बोध होता है।
इन शब्दों मे 'वाला' प्रत्यय जोड़ो—
मोटर, साइकिल; मिठाई, पान, दूध।

अब आओ कुछ प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाएँ

1. 'ई' प्रत्यय संज्ञाओं में 'ई' प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाते है।

इन सज्ञाओं में 'ई' प्रत्यय जोड़ो—

जापान, रूस, फ्रांस, चीन, पाकिस्तान, मॉरिशन।

2. 'इक' प्रत्यय

इन शब्दो में 'इक' प्रत्यय जोड़ो—

काल, समय, सप्ताह, मास, वर्ष, लोक, बुद्धि, भू, वर्ण, मात्र, शरीर।

'इक' प्रत्यय जुड़ने के बाद जो शब्द बनेगा उसमे पहले व्यंजन के बाद 'आ' प्रत्यय लगेगा। जैसे सप्ताह + इक = साप्ताहिक

3. 'इत' प्रत्यय

इन शब्दों मे 'इत' प्रत्यय जोड़ो—

फल, फूल, प्रवाह, प्रसार, प्रमाण, शोभ, जड़, खंड, लिख, पठ, मोह।

4. 'ईला' प्रत्यय

इन शब्दो में 'ईला' प्रत्यय जोड़ो—

रंग, चमक, भड़क, सज, सुर, गठ, रस, नशा, शर्म।

5. 'आलु' प्रत्यय

इन शब्दों मे 'आलु' प्रत्यय जोडो—

दया, झगड़ा, कृपा, श्रद्धा।

समास

तुम लोगों ने ऐसे शब्द बनाए जिन में स्वरों का मेल होता है। अब आओ ऐसे शब्द बनाएँ जो दो, एक-दूसरे से सम्बन्ध रखने वाले शब्दों के मेल से बनते हैं।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. भैया गायघर बना रहा है।

2. माँ ने बाबू को दूध-भात खिलाया।

पहले वाक्य मे 'गायघर' शब्द को देखो। उस शब्द से मालूम होता है 'गाय का घर'।

देखो 'गाय' और 'घर' शब्दों मे एक सम्बन्ध है, और इस सम्बन्ध को बनाने वाला 'का' शब्द है।

अच्छा, तुम बताओ तो देखूं—'गायघर' शब्द कैसे बना है। हाँ, 'का' सम्बन्धबोधक शब्द का लोप हो जाता है, फिर 'गाय' और 'घर' शब्दों मे संयोग (मेल) होता है।

तो दो, एक दूसरे से सम्बन्ध रखने वाले शब्दो का जो संयोग होता है उसको समास कहते हैं, और जो नया शब्द बनता है उसको सामासिक शब्द कहते है। जैसे—

गाय का घर=गायघर। लोक की कथा=लोककथा।

अभ्यास

1. इन शब्दों से एक सामासिक शब्द बनाओ—

स्नान का घर=......, रसोई का घर=......
शयन का कमरा=......, बिजली की बत्ती=......
शक्कर की कोठी=......, राज का कुमार=......
राजा का महल=......, राज की सभा=......,
वन का गमन=......, सीता का हरण+......,
बैल की गाड़ी=......, रावण का वध=......,
जन्म की भूमि=......, देश का प्रेम=......,
समाज की सेवा=......, सेवा का भाव=......,
देश की भक्ति=......, शिव का भक्त=......,
भगवान का भक्त=......, राम का भक्त=......,
गंगा का जल=...... ।

दूसरे वाक्य को देखो—

2. माँ ने बाबू को दूध-भात खिलाया।

इस वाक्य से मालूम होता है—'दूध और भात'। 'दूध-भात' भी सामासिक शब्द है। 'दूध' और 'भात' शब्दों को मिलाते हुए 'और' समुच्चयबोधक शब्द को लोप कर देते है और उसकी जगह पर योजक चिह्न (—) लगाते है, जैसे—माँ और बाप=माँ-बाप, चटनी और रोटी=चटनी-रोटी।

अभ्यास

इन शब्दों से एक सामासिक शब्द बनाओ—

1. मेरे माता और पिता आए है।
2. उसने खान और पान में दिन गँवा दिया।
3. मोहन खेल और कूद में अधिक समय देता है।
4. आपके बाल और बच्चे कैसे है?
5. जल्दी करो, दीया और बत्ती का समय हो गया है।
6. पड़ोसी के बच्चे मार और पीट कर रहे है।
7. वह मीठा और ताजा हो गया, कहाँ रेशन लेता है।
8. तुम घर और द्वार साफ करो।
9. माँ को घर के काम और काज से फुर्सत नही मिलती है।
10. पूजा के लिए पान और फूल जुटाओ।

समान अर्थ वाले (समानार्थक) या पर्यायवाची शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो—

रमेश और रहीम बातें कर रहे हैं।

रमेश—मेरी माताजी अच्छी मिठाई बनाती हैं।

रहीम—मेरी अम्माँ अच्छी बिरयानी बनाती है।

रमेश किस के बारे में बातें करता है? वह अपनी 'माताजी' के बारे में बातें करता है न? 'माताजी' किसको कहते है? 'माताजी' माँ को कहते हैं न? ठीक।

रहीम किसके बारे में बातें करता है? वह अपनी अम्माँ के बारे में बातें करता है। 'अम्माँ' किसको कहते है? 'अम्माँ' भी 'माँ' को ही कहते है न? ठीक।

सो, माँ, माताजी, अम्माँ समान अर्थ वाले शब्द है। क्या तुम अन्य शब्द जानते हो जो 'माँ' का अर्थ रखते है। हाँ, माई, मैया, मम्मी, जननी आदि 'माँ' का अर्थ रखते है। तो जो-जो शब्द एक ही व्यक्ति या वस्तु का अर्थ रखते हैं, उनको समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

आओ कुछ समानार्थक (पर्यायवाची) शब्दों का अभ्यास करें—

माँ, माताजी, जननी, अम्माँ, मम्मी, माई, मैया।

बाप, पिताजी, बापू, बाबा, पापा।

भाई, भैया, बन्धु।

बहन, दीदी, बहिन।

घर, मकान, महल, गृह, शाला, सदन।

बाग, बगीचा, उपवन, उद्यान।

जंगल, वन, विपिन, अरण्य।

पहाड़, पर्वत, गिरि, नग।

नदी, नद, दरिया, सरिता।

समुद्र, समुन्दर, सागर।

आकाश, गगन, अम्बर, व्योम, अंतरिक्ष।

सावधान

पर्यायवाची शब्द

ऐसे तो तुम अनेकों समानार्थक या पर्यायवाची शब्दों से परिचित हो, परन्तु इनके प्रयोग में सावधान रहना चाहिए।

इस वाक्य को पढ़ो—

1. चाचा ईख के खेत मे काम करता है।

यदि इस वाक्य को इस तरह लिखते--'चाचा ईख के बाग में काम करता है।' क्या यह ठीक होता ? यह ठीक नही होता न ? क्यों ? इसलिए कि खेत ही उपयुक्त शब्द है। 'खेत' उस छोटे से घेरे को कहते है जिस में एक फसल हो। 'बाग' उस जगह को कहते हैंजहाँ फल फूल आदि साथ लगाए गए हैं। 'उद्यान' उस स्थान को कहते हैं जहाँ देश-विदेश के पेड़, पौधे और लताएँ सुरक्षित करते हैं। तो पर्यायवाची या समानार्थक शब्दो को प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए।

अभ्यास

इन वाक्यों को उचित शब्द से पूरा करो---

1. नदी के---- में कीटाणु पलते हैं। (जल, पानी, नीर)
2. महेश की माँ----उठती है। (प्रभात, भोर, सवेरे)
3. आज सोम-----है। (दिन, वार, दिवस)
4. ----पूरब में उगता है। (सूर्य, भानु, रवि)
5. बन्दर----सेंकता है। (गरमी, धूप, ऊष्मा)
6. ऋषि जी----में रहते हैं। (महल, बँगले, कुटिया)
7. ----में अनगिनत तारे चमकते हैं। (आकाश, अंतरिक्ष; व्योम)
8. रमेश और शीला----बहन है। (बन्धु, भाई, भ्राता)
9. मेरी माँ ----सीती है। (वस्त्र, वसन, कपड़ा)
10. रसोईघर मे----बनाता है। (अन्न, आहार, रसोई)

2. तुम प्रत्येक शब्द के लिए दो-दो समानार्थक शब्द लिखो---
पाठशाला,--, --, बेटा, --, --, बेटी --, --,
पेड़, --, --, दुल्हन, --, --, मुँह --, --,
शहर -- , --, ग्राम --, --, अच्छा --, --,
चिट्ठी --, --, पुस्तक --' --, छात्र --, --,
संसार --, --, देश --, --, आमंत्रण --, --,
शरीर --, --,

तुम जान गए

1. पर्यायवाची या समानार्थक शब्द क्या है।
2. पर्यायवाची शब्दों को प्रयोग करते समय सावधान रहना चाहिए।

तुम लोगों ने समान अर्थ वाले शब्दों को देखा।
आओ अब उलटे (विपरीत) अर्थ वाले शब्दो को देखे।

उल्टे अर्थ वाले (विपरीतार्थक) शब्द

इन वाक्यों को पढ़ो---

1. तुम कभी-कभी ठंडा भात खा लेते हो।

2. माता जी हमको गरम भात देती हैं।

पहले वाक्य में 'ठंडा' शब्द का अर्थ स्पष्ट है, जो 'गरम नही है'।

दूसरे वाक्य में 'गरम' शब्द का अर्थ है—जो ठंडा नही है। सो, 'ठंडा' और 'गरम' शब्द एक-दूसरे का उल्टा अर्थ बताते है। तो, जो शब्द एक दूसरे का उल्टा अर्थ बताते हैं, वे विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहलाते हैं। जैसे—

बड़ा	—	छोटा
दुख	—	सुख
दूर	—	समीप, पास
अँधेरा	—	उजाला
सरल	—	कठिन
भला	—	बुरा

आओ कुछ विपरीतार्थक शब्द बनाएँ।

1. कुछ शब्दो में 'अ' उपसर्ग लगाते है।

प्रिय	—	अप्रिय
सुन्दर	—	असुन्दर
सफल	—	असफल

इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो—

मंगल, सुविधा, स्वस्थ, शिक्षित, पूर्ण, हिंसा, समान, विद्या, हित, विश्वास, साधारण, ज्ञान, न्याय, प्रसन्नता, सत।

2. कुछ शब्दों में 'सु' 'दुर' और 'कु' उपसर्ग लगाकर लिखते है, जैसे—

सुकर्म	—	कुकर्म
सुगम	—	दुर्गम
सुलभ	—	दुर्लभ
सुजन	—	दुर्जन

तुम दुर, कु की सहायता से इन शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो—

सत्संग, सुगंध, सुअवसर, सुविचार, सुबुद्धि, सज्जन।

अभ्यास

1. इन शब्दो के विपरीतार्थक शब्द लिखो—

मित्र ·····, उत्थान······,
स्वदेश ·····, अपनाना······,
स्वतंत्र······, याद करना······,
मुक्त······, काम करना,

हर्ष......, मुहब्बत......,
शीघ्र......, पाना......,
पाप......, विजय......,
आसान......, ह्रस्व......,

2. काले छपे शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो—

1. व्यापारी ईमानदार है।
2. अमीर प्रसन्न है।
3. इस शहर में अपना कोई नहीं।
4. हम बुराई से घृणा करते हैं।
5. मिलना सुखदाई होता है।
6. विद्या उजाला है।
7. आज हमारी टीम की जीत हुई है।
8. युद्ध में सब कुछ का नाश होता है।

नोट—विपरीतार्थक शब्द एक-दूसरे का उलटा अर्थ बताते हैं, अर्थात् एक शब्द में नकारात्मक संकल्पना होती है, और दूसरे में सकारात्मक संकल्पना होती है।

देखो—'प्रिय' शब्द का अर्थ है—जो मन को भाता है

'अप्रिय' शब्द का अर्थ है—जो मन को नहीं भाता है।

इस तरह 'प्रिय' शब्द में सकारात्मक भाव या अर्थ संकल्पित है और 'अप्रिय' शब्द में नकारात्मक भाव या अर्थ संकल्पित है।

परन्तु, इन शब्दों को देखो—

पूरब—पश्चिम

ये शब्द एक-दूसरे का उलटा अर्थ नहीं बताते हैं, इनमें सकारात्मक नकारात्मक भाव या अर्थ नहीं है। 'पूरब'—पूरब है, 'पश्चिम'—पश्चिम है। ये शब्द युग्म हो सकते हैं, परन्तु इनमें परस्पर विरोध नहीं है।

अन्य उदाहरण—

उत्तर	—	दक्षिण
नीचे	—	ऊपर
आगे	—	पीछे
दायाँ	—	बायाँ
धूप	—	छाँह
सुबह	—	शाम
रात	—	दिन
स्वामी	—	सेवक

तुम जान गए-

1. विपरीतार्थक शब्द एक-दूसरे का उलटा अर्थ बताते है।

वाक्य

तुम जानते हो

1. सार्थक शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं।
2. एक वाक्य में एक बात होती है या एक विचार होता है।

अब आओ वाक्यों के बारे में कुछ सीखें।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. नाना चाय की खेती करते हैं।
2. नाना ईख की खेती नही करते है।
3. नाना, आप ईख की खेती करिए।
4. नाना किस की खेती करते हैं?
5. भगवान, नाना को खेती मे सफलता मिले!
6. आह! कैसी लहलहाती खेती!

ऊपर छह (6) प्रकार के वाक्य दिए गए है। आओ एक-एक करके देखें, प्रत्येक मे क्या बात कही गई है और कैसे कही गई है।

विधानबोधक वाक्य

1. नाना ईख की खेती करते हैं।

इस वाक्य में क्या बात बताई गई है? इस वाक्य मे बताया गया है कि नाना चाय की खेती करते है न! देखो—ऐसे वाक्य के जरिए हम काम का होना या करना बताते है।

तो, जिस वाक्य के जरिए काम के होने या करने का बोध होता है, उसको कथन वाक्य या विधानबोधक वाक्य कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

(क) मोटर तेज गई।
(ख) माँ ने पुजारी को दक्षिणा दी।
(ग) फूल झड़ जाएगा।

इन शब्दों को विधानबोधक वाक्य मे प्रयोग करो—

झण्डा, तालाब, पहाड़, नदी, समुद्र, जगल, शिकारी, प्रतिनिधि, महात्मा।

निषेधबोधक वाक्य

2. नाना ईख की खेती नही करते है।

इस वाक्य में नाना के ईख की खेती नही करने की बात बताई गई है, न?

देखो ऐसे वाक्य को भी विधानवोधक वाक्य कहते हैं, परन्तु इससे काम के नहीं होने या करने की बात मालूम होने के कारण इसको **निषेधबोधक वाक्य** कहते हैं। इसको **नकारात्मक वाक्य** भी कहते है।

अन्य उदाहरण—

(क) बच्चा दूध नहीं पीता था।

(ख) गाड़ी तेज नहीं गई।

(ग) तुम शर्बत नहीं पीते हो।

इन शब्दों को निषेधबोधक वाक्यों मे प्रयोग करो—

खान, सब्जियाँ, तम्बाकू, चाय, शराब, मण्डप।

आज्ञाबोधक वाक्य

3. नाना, आप ईख की खेती करिए।

इस वाक्य में नाना को ईख की खेती करने की आज्ञा (आदेश) देते हैं। ऐसा वाक्य, जिसमें किसी को कुछ करने के लिए आज्ञा (आदेश) सलाह देते है, उसको आज्ञाबोधक वाक्य कहते हैं। तो, जिस वाक्य में आज्ञा देने का बोध होता है उसको **आज्ञाबोधक वाक्य** कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

(क) तुम आकर यहाँ बैठो।

(ख) आप यहाँ आइए।

(ग) तू जाकर सो जा।

इन शब्दो को आज्ञाबोधक वाक्यो में प्रयोग करो—

दाईं ओर, सवेरे, ध्यान से, मन लगाकर, सच।

देखो विधानवोधक, निषेधबोधक और आज्ञाबोधक वाक्यों के अन्त मे पूर्ण विराम चिह्न (।) लगाते हैं।

प्रश्नबोधक वाक्य

4. नाना किस की खेती करते है?

इस वाक्य से पता चलता है कि हम नाना की खेती के बारे में कुछ जानने के लिए पूछते हैं, प्रश्न करते है न?

तो, जिस वाक्य से प्रश्न करते है उसको **प्रश्नबोधक वाक्य** कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

(क) क्या नाना खेती करते है?

(ख) नाना किसकी खेती करते है?

(ग) नाना कहाँ खेती करते है।

(घ) नाना ने कब खेती की है ?

(च) नाना क्यों खेती करते हैं ?

देखो—प्रश्नबोधक वाक्य के अन्त मे प्रश्नसूचक चिह्न (?) होता है। इन शब्दों को प्रश्नवोधक वाक्यों में प्रयोग करो—

काम, खेत, बाग, शहर, गाँव, जिला, खेल।

इच्छाबोधक वाक्य

5. भगवान ! नाना को खेती मे सफलता मिले !

इस वाक्य से एक इच्छा की बात मालूम होती है। हम इच्छा करते है कि नाना को खेती में लाभ हो।

तो, जिस वाक्य से इच्छा का वोध होता है, उसको **इच्छाबोधक वाक्य** कहते है।

अन्य उदाहरण—

(क) ईश्वर, नाना को लम्बी उमर दें !

(ख) तुम जुग-जुग जीओ।

(ग) प्रभु, यह तूफान टल जाए।

इन शब्दों को इच्छावोधक वाक्यों में प्रयोग करो—

जय, जीत, लाभ, सफल, जाय, पास

विस्मयबोधक वाक्य

6. आ हा ! कैसी लहलहाती खेती !

इस वाक्य से प्रसन्नता होने की वात मालूम होती है। ऐसे वाक्यो से विस्मय, डर, आश्चर्य, खुशी, शोक आदि का बोध होता है। तो, जिस वाक्य से विस्मय, खुशी, शोक, आदि का वोध होता है उसको **विस्मयादिबोधक वाक्य** कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

(क) वाह ! खूब कहा आपने !

(ख) छि ! छि ! कैसा गन्दी महक !

(ग) बाप रे ! कहाँ का पागल कुत्ता !

देखो—इच्छावोधक और विस्मयादिवोधक वाक्यो के अन्त मे विस्मयादि-बोधक चिह्न (!) होता है।

इन शब्दों को विस्मयादिबोधक वाक्यो मे प्रयोग करो—

राम-राम ! हे ! आह ! ओहो ! बाप रे ! आ हा !

तो, हम वाक्यो को छह (6) वर्गों मे रखते हैं—विधानवोधक, निषेध-बोधक, आज्ञावोधक, प्रश्नवोधक, इच्छावोधक और विस्मयादिवोधक वाक्य।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों के वर्ग बताओ—
   1. माँ घर पर नहीं है। (   )
   2. दीदी ने हार बनवाया है। (   )
   3. छिः छिः ! कैसा गन्दा नाला ! (   )
   4. भगवान, उन बच्चों को सुबुद्धि दें ! (   )
   5. आप बाजार जाकर फल लायें। (   )
   6. आगामी साल धूमधाम से होली मनाई जाएगी। (   )
   7. आपको पहला इनाम मिले। (   )
   8. तुम झूठ मत बोलो। (   )
   9. तू वहां क्या करने जाएगा ? (   )
   10. वाह-वाह ! सुन्दर कहानी ! (   )

2. नीचे लिखे वाक्यों के अन्त में उचित चिह्न लगाओ—
   1. कौन खेत में आया था।
   2. माँ ने मिठाई बनाई थी।
   3. प्रभु, तुम को शक्ति दें।
   4. आह ! मेरा पैर मुड़ गया।
   5. तुम को खाना नहीं मिलेगा।
   6. कुत्ते को बाहर खदेड़ दो।
   7. आप क्या कहते है।
   8. हे ! हे ! मुझको मारता है।
   9. स्वामी जी कहाँ रहते है।
   10. पिताजी आपको बुला रहे है।

तुम जान गए

1. वाक्य, सार्थक शब्द-समूह को कहते है—

2. किस वाक्य से कहते है, किस वाक्य से पूछते है, किस वाक्य से आज्ञा देते है, किस वाक्य से इच्छा प्रगट करते हैं, किस वाक्य से निषेध करते है, और किस वाक्य से दुख-सुख व्यक्त करते है।

अब आओ वाक्य के भाग को देखे।

वाक्य के भाग

उद्देश्य और विधेय

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. भैया लिखते है।

2. कुत्ता घर में घुस गया।
3. बन्दर चालाक है।
4. आप कलाकार हैं।

पहले वाक्य को देखो। किस के बारे में कहा गया है? 'भैया के बारे में कहा गया है न? भैया के बारे क्या कहा गया है? कहा गया है कि 'लिखते हैं।'

देखो—जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, वह वाक्य का उद्देश्य है। पहले वाक्य मे 'भैया' उद्देश्य है।

और (भैया) उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाय, वह विधेय है। 'लिखते हैं' वाक्य का विधेय है। तो, एक वाक्य के दो भाग हैं—उद्देश्य और विधेय। दूसरे वाक्य में किस के बारे मे कहा गया है? 'कुत्ता' के बारे में कहा गया है न? तो 'कुत्ता' वाक्य का उद्देश्य है। (कुत्ता) उद्देश्य के बारे में क्या कहागया है? कहा गया है कि 'घर मे घुस गया' सो 'घर में घुस गया' वाक्य का विधेय है। तुम अन्य वाक्यों के उद्देश्य और विधेय बताओ तो देखूं।

उद्देश्य		विधेय
बन्दर	—	चालाक है।
आप	—	कलाकार हैं।

अभ्यास

1. खाली जगहों में उचित उद्देश्य भरें—
   1. ——बाग देता है।
   2. ——भौंकता है।
   3. ——रंभाती है।
   4. ——मिमियाती है।
   5. ——म्याऊँ-म्याऊँ करती है।
   6. ——टर्राता है।
   7. ——हिनहिनाते हैं।
   8. ——गरजता है।

2. उचित उद्देश्य के साथ विधेय जोड़ो—

उद्देश्य		विधेय
(क) राम	—	सिग्रंज बनती है
(ख) मीरा	—	डाक ले जाता है
(ग) गाधी जी	—	समुद्र में चलता था।
(घ) श्रीमती इन्दिरा गांधी	—	अयोध्या के राजा थे।
(ङ) चीनी	—	गीत गाती और नाचती थी।

(च) तम्बाकू के पत्तों से — भारत की प्रधान मन्त्री है।
(छ) जहाज — कारखाने में बनती है।
(ज) हवाई जहाज — एक महात्मा थे।

तुम जान गए

1. एक वाक्य में दो भाग हैं—उद्देश्य और विधेय
2. जिसके बारे में कहा जाय वह उद्देश्य है।
3. उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाय वह विधेय है।

उद्देश्य का विस्तार

उद्देश्य एक शब्द होता है और अनेक शब्द भी होते हैं।
यह कैसे होता है, आओ देखें।
इन वाक्यों को पढ़ो—
1. भैया लिखते हैं।
2. बड़े भैया लिखते हैं।
3. रमेश के भाई लिखते हैं।

पहले वाक्य में उद्देश्य 'भैया' एक शब्द है।

दूसरे वाक्य में उद्देश्य के साथ 'बड़े' विशेषण लगाकर उद्देश्य को थोड़ा बड़ा किया किया। अर्थात् उद्देश्य का थोड़ा विस्तार हुआ।

तीसरे वाक्य में उद्देश्य का विस्तार कैसे हुआ है?

उद्देश्य का सम्बन्ध बताकर विस्तार किया गया है, जैसे—'रमेश के भाई', 'उमा का भैया', 'मेरे भैया' आदि।

तो हम विशेषण लगाकर और सम्बन्ध आदि बताकर उद्देश्य का विस्तार कर सकते हैं।

अभ्यास

1. इन वाक्यों में उद्देश्य का विस्तार करो—
   (क) दीया कम प्रकाश करता है।
   (ख) मोहन मक्खन खाते थे।
   (ग) चाचा ने चिट्ठी भेजी है।
   (घ) किसान आलू बोता था।
   (ङ) हार गुम हो गया।
   (च) नदी धीरे-धीरे बहती है।
   (छ) आवाज नहीं सुनाई देती है।
   (ज) सहेलियाँ आई हैं।
   (झ) नानी चावल चुनती है।
   (ञ) भाभी भाजी भूनती है।

विधेय का विस्तार

अव तुम उद्देश्य का विस्तार करके वाक्यों को कुछ बढ़ा सकते हो। विधेय का विस्तार करके भी वाक्यों को बढ़ाया जाता है।

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. भैया लिखते हैं।
2. भैया पत्र लिखते हैं।
3. भैया लम्बे-लम्बे पत्र लिखते हैं।
4. भैया धीरे-धीरे पत्र लिखते हैं।
5. भैया वहाँ जाकर पत्र लिखते है।

1. पहले वाक्य मे 'भैया' उद्देश्य है और 'लिखते हैं 'विधेय' न ?
2. दूसरे वाक्य मे—भैया क्या लिखते हैं ? भैया 'पत्र' लिखते हैं।
   तो, 'विधेय' के साथ पत्र लगाकर उसका विस्तार किया।
3. तीसरे वाक्य में—'लम्वे-लम्बे'—विशेषण शब्द से कर्म की विशेषता बताकर विधेय को कुछ और बढ़ाया गया है।
   तो, कर्म की विशेषता बताकर विधेय का विस्तार होता है।
4. चौथे वाक्य मे—'धीरे-धीरे' क्रिया-विशेषण शब्द से क्रिया की विशेषता बताकर विधेय को थोड़ा और बढ़ाया गया है।
   तो, क्रिया-विशेषण लगाकर विधेय का विस्तार होता है।
5. पाँचवें वाक्य में 'जाकर' पूर्वकालिक क्रिया लगाकर विधेय को थोड़ा और बढ़ाया गया है।

तो, पूर्वकालिक क्रिया लगाकर विधेय का विस्तार होता है। इस तरह हम कर्म, विशेषण, क्रिया-विशेषण, पूर्वकालिक क्रिया आदि लगाकर विधेय का विस्तार करते है।

अभ्यास

1. इन वाक्यों मे विधेय का विस्तार करो—
   (क) मजदूर काटता है।
   (ख) शोफर बस चलाता है।
   (ग) मुन्ना उठा है।
   (घ) कुत्ता भौंकता है।
   (ङ) उसने पत्र पढ़ लिया है।
   (च) खरगोश भाग गया।
   (छ) काली बिल्ली ने चूहे को पकड़ा।
   (ज) काली गाय दूध देती है।

2. इन वाक्यों में उद्देश्य और विधेय दोनों का विस्तार करो—

(क) चिड़िया उड़ गई।
(ख) डाकिया चिट्ठी लाया है।
(ग) मुर्गी अण्डे देती है।
(घ) नेवला ने चूहे को खा लिया।
(ङ) टीम की हार हुई है।
(च) दोस्त चला गया।
(छ) गोभी बिक गई।
(ज) गुलाब सूख गया।
(झ) नदी बहती है।
(ञ) लीचियाँ पक गई है।

तुम जान गए

1. उद्देश्य और विधेय क्या है।
2. किस तरह उद्देश्य का विस्तार कर सकते हैं और किस तरह विधेय का विस्तार कर सकते है।

वाक्य-रचना

ऐसे तो तुम, अब उद्देश्य और विधेय दोनो का विस्तार कर सकते हो परन्तु, एक वाक्य में ऐसे अनेक शब्द लिखते समय यह जानना आवश्यक है कि प्रत्येक शब्द को किस स्थान पर लिखें। एक वाक्य में प्रत्येक शब्द का अपना-अपना स्थान होता है।

आओ शब्दो का क्रम देखे—

1. कुत्ता दौड़ा।
2. कुत्ता गराज में था।
3. कुत्ता समझदार था।
4. कुत्ता तेज दौड़ा।
5. समझदार कुत्ता तेज दौड़ा।
6. मोहन का समझदार कुत्ता तेज दौड़ा।

नोट—'दौड़ना' अकर्मक क्रिया है।

1. यदि क्रिया अकर्मक हो

उद्देश्य		विधेय
1. कुत्ता		दौड़ा।
(कुत्ता	पहले	अन्त में क्रिया)

2. कुत्ता	गराज में	था।
(कुत्ता पहले,	विधेय का विस्तार,	अन्त में क्रिया)
3. कुत्ता	समझदार	था।
(कुत्ता पहले,	कर्म या पूरक,	अन्त मे क्रिया)
4. कुत्ता	तेज	दौड़ा।
(कुत्ता,	क्रिया-विशेषण,	अन्त मे क्रिया)
5. समझदार कुत्ता	तेज	दौड़ा।
(विशेषण कत्ता का विस्तार),	क्रिया-विशेषण	अन्त में क्रिया)

अभ्यास

1. इन वाक्यों का क्रम ठीक नही है, शब्दों को क्रम में रखकर वाक्यों को पुनः लिखो—

(क) मैदान है लड़के में खेलते।
(ख) खड़ी मे आंगन है माँ।
(ग) जंगल है हरिण में रहता।
(घ) बच्चे अच्छे समय पर है आते पाठशाला।
(ङ) दीदी बड़ी घर मोहन की आई है।
(च) पत्थरीले नंगे पैरों पर रास्ते चलते बच्चे है।
(छ) एक था अर्जुन वीर भारी।
(ज) सेब बढ़िया पिताजी हैं लाये।
(झ) राजू मेरा भाई, आएगा कल भारत से।
(ञ) नारियल सूखा धड़ाम से गिरा छत पर।

2. यदि क्रिया सकर्मक हो

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. मोहन ने जलेबी खाई।
2. मोहन ने गरम जलेबी खाई।
3. मोहन ने गप-गप गरम जलेबी खाई।
4. रमेश के भाई मोहन ने गप-गप गरम जलेबी खाई।

नोट—'खाना' क्रिया सकर्मक है।

उद्देश्य		विधेय
कर्ता	कर्म	क्रिया
1. मोहन ने	जलेबी	खाई।
(कर्ता पहले,	कर्म,	अन्त में

2. मोहन ने गरम जलेबी खाई।
(कर्त्ता, कर्म का विस्तार, कर्म, अन्त में क्रिया)

3. मोहन ने गप-गप गरम जलेबी खाई।
(कर्त्ता, क्रिया-विशेषण, कर्म का विस्तार, कर्म, अन्त में क्रिया)

4. रमेश के भाई मोहन ने गप-गप गरम जलेबी खाई।
(कर्त्ता का विस्तार, कर्त्ता, क्रिया-विशेषण, कर्म का विस्तार, कर्म, अन्त में क्रिया)

अभ्यास

1. इन वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक करो—

(क) रावण को मारा था राम ने।
(ख) मारा था कंस को कृष्ण ने।
(ग) स्वादिष्ट बनाई खीर माँ ने गरम-गरम।
(घ) रोटी बासी बच्चों ने खाई थी।
(ङ) नारंगी लगी पसन्द को दीदी ने।
(च) फल पके दिये थे उन्होंने।
(छ) मैला कपड़ा फटा लड़का गरीब पहनता है।
(ज) ओढ़नी लाल रंग की औरत ओढ़ती है।
(झ) चूड़ियाँ रंग-बिरंगी लड़कियों ने खरीदी है।
(ञ) नाना लीचियाँ मीठी-मीठी देते थे।

3. यदि क्रिया द्विकर्मक हो

इस वाक्य को पढ़ो—

माँ ने बाबू को दूध पिलाया।

उद्देश्य		विधेय
कर्त्ता	कर्म	क्रिया।
माँ ने	बाबू को दूध	पिलाया

(कर्त्ता, गौण कर्म, मुख्य कर्म, अन्त में क्रिया)

अभ्यास

1. इन वाक्यों में शब्दों का क्रम शुद्ध करो—

(क) डाक्टर ने इन्जेक्शन लगाई रोगी को।
(ख) बच्चों को नानी ने सुनाई थी कहानी।
(ग) आप घास हरी देते हैं बकरी को।
(घ) अध्यापक ने वाक्य-रचना सभी बच्चों को सिखाया था।
(ङ) प्रतिनिधियों को मंत्री जी ने फूलों का हार पहनाया।

यदि वाक्य निषेधबोधक हो

इन वाक्यों को पढ़ो—

1. तुम बाहर मत जाओ।
2. रोगी खटिया से नहीं उठ सकता।
3. नानी मुन्नी के लिए खिलौना न लाना।

देखो—निषेधबोधक वाक्यों में मत, नहीं, न, क्रियाओं से एकदम पूर्व आते हैं।

अभ्यास

इन वाक्यों को निषेधबोधक वाक्य बनाओ—

1. बच्चा रोता है।
2. माँ ने पैसा दिया था।
3. मोहन सवेरे पाठशाला आया था।
4. तुम चोरी करो।
5. मौसी जी आज घर जाना।
6. यहाँ बैठिए।
7. भैया सिनेमा गया है।
8. तुम अन्दर आओ।
9. आप घर पर आये थे।
10. बच्चों को अन्दर आने दो।

तुम जान गए

तुम शब्दों को क्रम में रख कर वाक्य बनाना जान गये।

याद रखो

यदि वाक्य में शब्दों का क्रम ठीक रहा तो हमारी बात स्पष्ट होगी हमारी भाषा अच्छी होगी।

●●●